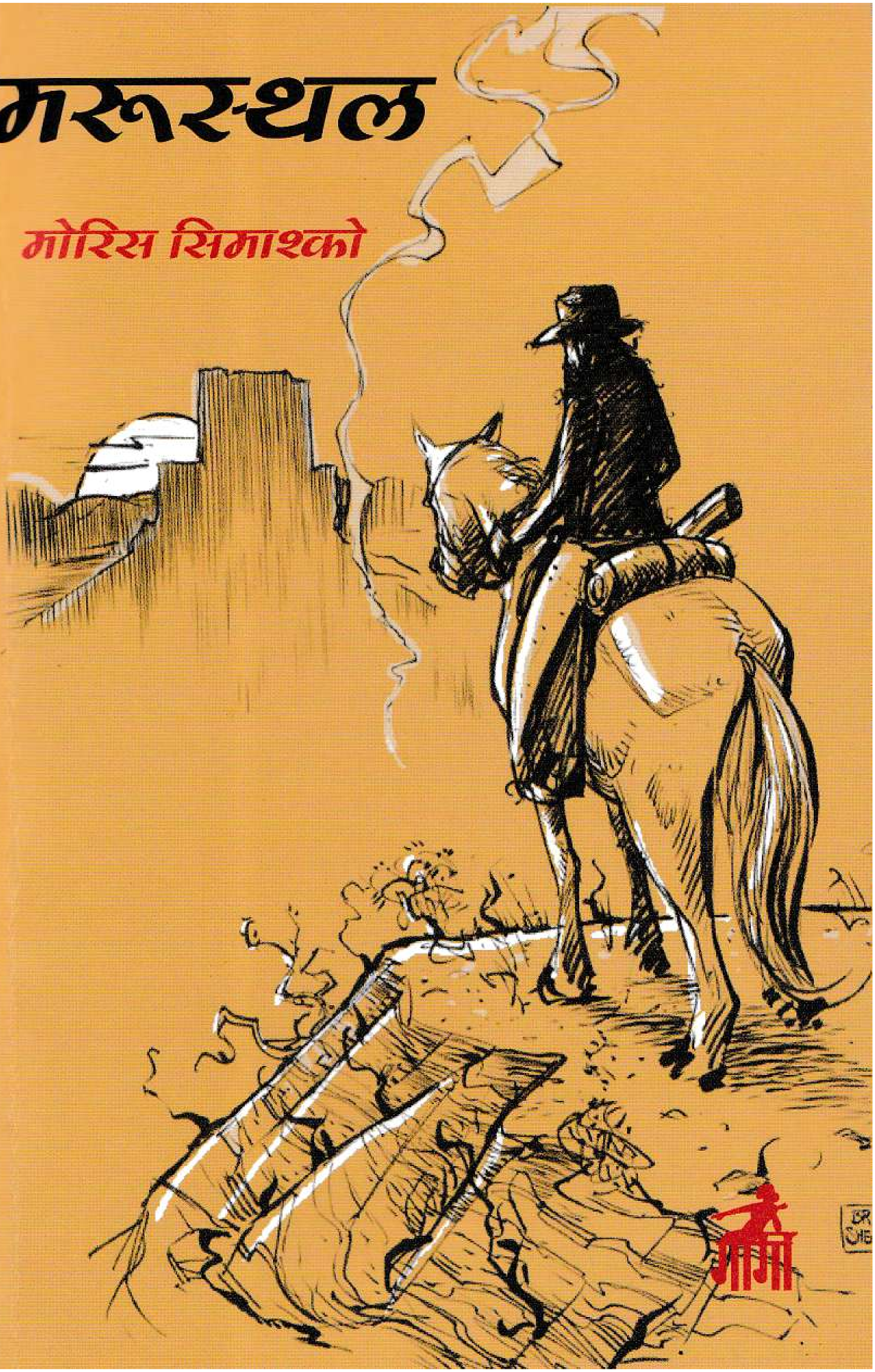
मरूस्थल

मोरिस सिमाश्को



मरुस्थल

मोरिस सिमाश्को

गार्गी प्रकाशन

मरुस्थल : *मोरिस सिमाश्को*

प्रथम पुनर्मुद्रण : 2020
प्रथम संस्करण : जनवरी 2017

गार्गी प्रकाशन
1/4649/45बी, गली नं. 4,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : gargiprakashan15@gmail.com

मुद्रकः
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स,
ए-21 झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया,
शाहदरा, दिल्ली-110095

ISBN : 81-87772-57-3

मूल्य : 40.00

MARUSTHAL
by MORIS SIMASHCO

अनुक्रम

मेरे दिल पर तरस खाओ
मेरे इरादे मजबूत करो
क्योंकि मुझे अलावों के
सपने आते हैं...

ये घोड़े धूल हो गये
ये सपने बहुत पुराने हैं
पर ये फिर से क्यों
मुझे नजर आने लगे।

नहीं, ये तो क्रान्ति के सपने हैं।

ब्ला. लुगोव्स्कोई

पहला अध्याय

कमिसार सवीत्स्की सोच में डूबा हुआ जुगनुओं से जगमगाते रेगिस्तान को ताक रहा था। लाल सेना का यह खास फौजी दस्ता आठ दिन-रातों तक रेतीले मैदानों और चलते-फिरते बालू को लाँघता हुआ शत्रुओं के गिरोह का पीछा करता रहा था। आज रात को उस गिरोह के बचे-बचाये लोग एक पुरानी गढ़ी में जा छिपे थे। खास दस्ते ने पौ फटने के समय जब गढ़ी पर हमला किया तो बहुत ठंडी अफगानी हवा तन को सुन्न किये दे रही थी। गढ़ी में दाखिल होने पर उन्हें केवल चले हुए कारतूसों की खाली नलियाँ और कुछ लाशें ही दिखायी दीं। हत्यारे शमुर्दखान की लाश इनमें नहीं थी। सफेद गार्ड का बासमाच (जमींदार) अपने सहायक, राजनीतिक पुलिस

के अफसर दूदनिकोव के साथ गायब हो गया था। हर टीले, हर सूखी झाड़ी को खोजा गया पर कहीं भी कोई सुराग नहीं मिला। मरुस्थली हवा के सम गति से बहनेवाले झोंकों ने बहुत जल्द ही खाली कारतूसों और लाशों को ढँक दिया...

शाम होते-होते अफगानी हवा का जोर कम हो गया। जहाँ-तहाँ कुछ सैनिकों को घात में बिठा दिया गया था और दस्ता सो रहा था। थके-हारे घोड़े गढ़ी की दीवारों के पास जोरों से खर्राटे ले रहे थे।

कमिसार को नींद नहीं आ रही थी। पिछले दिनों का चिन्तापूर्ण तनाव और दम उखाड़नेवाली खाँसी ने उसकी नींद हर ली थी। यह विचार उसे चैन नहीं लेने दे रहा था कि शमुर्दखान गया तो कहाँ? रेतीली आँधी के बाद रेगिस्तान शान्त था, धीरे-धीरे साँस ले रहा था। कोमल और मखमली आकाश की पृष्ठभूमि में गढ़ी की काली दीवारों का दृश्य मन को चैन देता था और किसी अज्ञात, बहुत पहले हुई किसी बात के बारे में सोचने के लिए विवश करता था।

"ग्रिगोरी, कुछ सो लेते!"

कमिसार की विचारधारा टूटी और वह सन्तरी की ओर घूमा। मजबूत काठीवाले सोर्मोवोवासी तेलेशोव ने कमिसार को उसके पुराने पार्टी उपनाम से सम्बोधित किया था। कारखाने में लोग उसे इसी नाम से जानते थे। उसका असली नाम था--निकोलाई।

नीचे, तबाह और सुनसान हुए गाँव में एक कुत्ता भौंक रहा था।

"यहाँ भी खासी गरीबी है," तेलेशोव ने अँधेरे में उस

हाथ से इशारा किया जिसकी आस्तीन की ओट में वह खुद बनायी हुई सिगरेट छिपाये था। "मेरा तो यह ख्याल था कि हमारे निजनी नोवगोरोद से अधिक बदहाली तो और कहीं नहीं होगी। मगर यहाँ तो जिसके पास दो भेड़ें और पतलून है--वही बड़ा आदमी है..."

कमिसार चुप रहा। तेलेशोव ने जूते से दीवार की कुछ मिट्टी कुरेदी जो अँधेरे में धीरे से नीचे जा गिरी। नीचे गिरनेवाली मिट्टी की आवाज खत्म भी नहीं हुई थी कि वे दोनों चौकन्ने हो गये। कब्रोंवाले बड़े-से टीले के करीब, जहाँ गोले-गोलियाँ आदि रखे हुए थे, अस्पष्ट-सी सरसराहट सुनाई दी। गढ़ी की सभी ओर से रक्षा की जा रही थी और किसी अजनबी के यहाँ होने की सम्भावना नहीं थी...

कब्रोंवाले टीले पर कोई झबरी टोपी पहने खड़ा हुआ, दबे पाँवों एक ओर को हटा, घड़ी भर को रुका और फिर सीधे उनकी ओर बढ़ा।

"रुक जाओ!" तेलेशोव ने उसे धीमी आवाज में आदेश दिया और राइफल का खटका खटखटाया। यह व्यक्ति तीन कदमों की दूरी पर रुक गया...

कमिसार ने दियासलाई जलायी और उसकी रोशनी में काली अपलक आँखों को टकटकी बाँधकर देखने लगा। बकरे की काली खालवाली टोपी की लटें माथे और गाल की उभरी हुई हड्डी पर लटक रही थीं। अजनबी शान्त खड़ा हुआ इन्तजार कर रहा था। जब दूसरी दियासलाई जलायी गयी तो उसने इने-गिने शब्दों में कुछ कहा। कमिसार को शमुर्दखान का नाम सुनाई दिया।

"स्तेपान, जाकर रहीमोव को जगा लाओ। वह इससे बातचीत कर लेगा!"

संतरी के लौटने तक रात का यह अजनबी मेहमान बुत बना खड़ा रहा और स्तेपी की ओर देखता रहा। उसकी इस दृष्टि से कमिसार को बेचैनी महसूस हुई और उसने दायें हाथ से पिस्तौल को छुआ।

सैनिक टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव लालटेन लिये हुए आया। कमिसार ने मेहमान को सिर से पैर तक बहुत ध्यान से देखा। वह कोई बीस वर्ष का तुर्कमानी जवान था। उसका दुबला-पतला और मुरझाया हुआ चेहरा सर्वथा अभिव्यक्तिहीन था। आँखें भी ऐसी ही बुझी-बुझी और निर्जीव-सी थीं। वह अपलक सामने की ओर देख रहा था।

रहीमोव ने दबी जबान में उससे कुछ पूछा। उसने मानो मन मारकर कुछ उत्तर दिया।

"कहता है कि शमुर्दखान यहाँ नहीं है भाग गया है। खुद हमारे दस्ते में शामिल होना चाहता है..." रहीमोव ने रूसी भाषा में स्पष्ट किया। रहीमोव जब तक बोलता रहा, आगन्तुक बहुत सावधानी से उसकी ओर देखता रहा।

"इससे पूछो कि वह गढ़ी में कैसे आया?" कमिसार ने कहा।

आगन्तुक ने कोई उत्तर न दिया, मुड़ा और कब्रोंवाले टीले की ओर चल दिया। तेलेशोव ने उसे रोकना चाहा, किन्तु कमिसार ने हाथ से संकेत किया और अजनबी के पीछे-पीछे चल दिया।

अब तक दस्ते के सभी लोग जाग चुके थे। सैनिकों का

एक दल कब्रोंवाले टीले के नजदीक जमा हो गया। लाटविया-वासी लम्बा और दुबला-पतला कमाण्डर पेल्टीन, जो नयी पट्टी में घायल हाथ लटकाये था, सदा की भाँति मौन साधे और नाक-भौंह सिकोड़े हुए आगन्तुक की तरफ देख रहा था। आगन्तुक सधे हुए झटकों से पुराने और टूटे-फूटे आले के नजदीक जमीन पर सूखी घास इधर-उधर बिखरा रहा था। आले के नीचे सँकरा गहरा रास्ता दिखाई दिया। आगन्तुक उसमें कूदा और अँधेरे में गायब हो गया। सैनिकों ने एक-दूसरे की ओर देखा। कमिसार आगे बढ़ा।

"मुझे आगे जाने दो!" रहीमोव ने कहा और एक हाथ में लालटेन तथा दूसरे में पिस्तौल लिये हुए नीचे उत्तर गया। चौकी पर सन्तरी की ड्यूटी से छुट्टी पाकर आनेवाला तेलेशोव उसके पीछे-पीछे हो लिया। कमिसार ही अँधेरे सुराख में सबसे पीछे उतरा।

टेढ़ी-मेढ़ी पथरीली सीढ़ियाँ नीचे जाती थीं। कमिसार ऐसी दो सौ पैड़ियाँ गिन चुका था पर सीढ़ियाँ अभी तक खत्म होने का नाम नहीं ले रही थीं। आखिर वे खत्म हुईं। अब ये लोग समतल पीली चौरस ईंटों की बनी गैलरी में चले जा रहे थे। कभी-कभार उन्हें झुकना पड़ता था। जल्द ही ऊँचाई शुरू हो गयी और पाँच मिनट बाद वे एक बड़ी गुफा में पहुँच गये। गुफा का रास्ता पत्थरों से अटा हुआ था। उन्हें लाँघकर वे पहाड़ के दामन में जा निकले।

रेगिस्तान की पृष्ठभूमि में गढ़ी एक काला धब्बा-सा प्रतीत हो रही थी। रहीमोव ने इधर-उधर नजर दौड़ायी और फिर लालटेन को कई बार ऊपर उठाया और नीचे किया।

जवाब में गढ़ी की ओर से भी इसी प्रकार के संकेत मिले।
"वह नौजवान कहाँ है?" कमिसार ने पूछा।

"अभी... तो यहीं था..."

तेलेशोव ने हतप्रभ होते हुए इधर-उधर देखा और विवशता से हाथ झटके।

"ए, नौजवान!" रहीमोव ने उसे पुकारा।

पर कोई उत्तर नहीं मिला। कमिसार ने चिन्तित होते हुए सिर हिलाया, गुफा की ओर देखा और वे धीरे-धीरे गढ़ी की ओर चल दिये। आधे रास्ते तक जाने पर कमिसार को अचानक फिर से वह तुर्कमानी नौजवान दिखायी दिया। वह बड़े इत्मीनान से कमिसार की बगल में चला जा रहा था।

"ओह कम्बख्त!" तेलेशोव ने झल्लाकर कहा। "अब कहाँ से आ टपका?'

रहीमोव ने तुर्कमानी भाषा में उससे पूछा। नौजवान ने जवाब में कुछ कहा।

"कहता है कि मैं तो वहीं खड़ा था," रहीमोव ने रूसी भाषा में स्पष्ट किया।

"पुकारने पर उत्तर क्यों नहीं दिया था उसने?"

"कोई जवाब नहीं देता..."

कमाण्डर ने नक्शा खोला। स्थिति बिल्कुल स्पष्ट हो गयी थी। शमुर्दखान अपने तीन-चार दुमछल्लों के साथ उस भूमिगत रास्ते से निकल भागा था जो सासानी के वक्त में ही बना दिया गया था। उसके लिए पहाड़ों में भाग जाने का रास्ता खुला हुआ था।

जब तक कमिसार और अन्य लोग आपस में सलाह-मशविरा करते रहे तुर्कमानी नौजवान ने इसमें कोई हिस्सा न लिया और एक तरफ हटकर खड़ा रहा। उससे संक्षिप्त बातचीत करने के बाद रहीमोव ने बताया कि नौजवान का नाम चारी हसन है, पेशे का चरवाहा है। वह भूमिगत मार्ग इसलिए जानता है कि इसी गाँव में गढ़ी के नजदीक ही रहता है। हमारे दस्ते में क्यों शामिल होना चाहता है, इसका कोई जवाब नहीं देता...

"तो क्या ख्याल है, शामिल कर लें इसे दस्ते में?" कमिसार ने पूछा।

रहीमोव ने कन्धे झटक दिये। कमाण्डर चुप रहा।

"रात से प्रभात का निर्णय अधिक सही होता है..." तेलेशोव ने निष्कर्ष निकाला।

दस्ते के सैनिक सो रहे थे। तेलेशोव ने चारी से कहा कि मेरे करीब ही सूखी घास पर सो रहो। पर तुर्कमानी नौजवान एक तरफ को हट गया और दीवार से सट कर बैठ गया। संतरी को उसका ध्यान रखने का आदेश दिया गया।

सुबह को तेलेशोव कमाण्डर के पास ऐसे आया मानो सब कुछ तय हो चुका हो और पूछा कि नवागन्तुक को कौन-सा घोड़ा दिया जाये। कमाण्डर ने पतली टाँगोंवाले मुरकी घोड़े की ओर संकेत किया जो पिछले दिन एक बासमाच से छीना गया था। तेलेशोव घोड़े को चारी हसन के पास लाया और लगाम उसके हाथ में थमा दी। चारी ऊँची तुर्कमानी काठी के पट्टे कसने लगा, किन्तु घोड़े के कान के नजदीक दराँती का निशान

देखकर उसने हाथ खींच लिया और एक तरफ को हट गया।

"क्यों क्या घोड़ा पसन्द नहीं है?" तेलेशोव ने कड़ाई से पूछा।

नवागन्तुक चुप रहा।

"ओह, बहुत बढ़िया घोड़ा है!..."

तेलेशोव ने घोड़े की गर्दन थपथपायी और उछल कर काठी पर जा बैठा। घोड़ा उछलने-कूदने लगा।

आधे घण्टे बाद यह घुड़सवार सैनिक दस्ता दुलकी चाल से घोड़े दौड़ाता हुआ गढ़ी से बाहर निकला। पहली टुकड़ी के आखिरी दो घुड़सवारों में से एक तुर्कमानी नौजवान था। अन्य सैनिकों की चमड़े की पीली जैकेटों और सलेटी रंग की बुद्योन्नी टोपियों के बीच उसकी काली झबरीली टोपी और रूमाल से बन्धा हुआ धारीदार लाल चोगा अलग ही रंग दिखा रहा था। तुर्कमानी नौजवान कत्थई घोड़े पर एक बढ़िया सवार की तरह जमकर बैठा हुआ था। सैनिक तेलेशोव से तरह-तरह के मजाक कर रहे थे क्योंकि वह ऊँची तुर्कमानी काठी का अभ्यस्त नहीं था। चारी हसन ने तो मुश्की घोड़े से काठी तक भी लेनी पसन्द नहीं की थी।

तबाहहाल गाँव को लाँघते समय टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव ने नवागन्तुक से बातचीत करने की कोशिश की। उसने टूटी और बरसात से धुली हुई मिट्टी की दीवार की ओर संकेत करते हुए कुछ पूछा। पर चारी हसन ऐसे मौन रहा मानो बहरा हो।

"ए, चुप्पे...!" किसी ने चिढ़कर कहा।

नवागन्तुक ने अपनी ओर देखनेवाले घुड़सवारों पर तीखी और झल्लाहट भरी नजर डाली।

तीसरे दिन की दोपहर को यह दस्ता रेलवे लाइन के पुल पर पहुँचा और वहाँ से बायीं ओर को मुड़ गया। वहीं हथगोलों से खंडहर हुए छोटे-से स्टेशन पर दस्ते का मुख्य शिविर था।

कास्पियन सागर पार के मोर्चे के प्रहारों से बेहाल होकर सागर की ओर भागनेवाली क्रान्ति विरोधी सफेद सेना रास्ते में नष्ट होती जा रही थी। उसके कई बड़े-बड़े और छोटे-छोटे गिरोह बन गये। उनका एक भाग सीमा लाँघकर पहाड़ों के पीछे चला गया और दूसरा भाग बासमाचों के दस्तों से जा मिला जिनकी कमान स्थानीय सामन्तों के हाथ में थी। विदेशों से सम्पर्क रखने और बहुत बड़ा खतरा बन जानेवाले बासमाची गिरोहों के विरुद्ध मोर्चा लेने का कार्यभार कुछ खास घुड़सवार दस्तों को सौंपा गया। पेल्टीन जिस दस्ते की कमान सम्भाले हुए था उसे एक बड़े बासमाची गिरोह को कुचलने और हर कीमत पर उसके सरदार, सफेद सेना के अफसर इल्यासोव (जिसे यहाँ शमुर्दखान कहा जाता था) को पकड़ने का काम सौंपा गया। पर शमुर्दखान बच निकला और घुड़सवार खिन्न और झुंझलाये हुए अपने मुख्य शिविर में लौटे। दस्ते के लोग जानते थे कि दो हफ्ते भी नहीं बीतेंगे कि फिर से ये लुटेरे छोटे-छोटे स्टेशनों, गाड़ियों और पहाड़ों के दामन में बसे उन गाँवों पर छापे मारने शुरू करेंगे जिनके निवासियों ने खान के बेहिसाब रेवड़ अपने कब्जे में ले लिये थे और जिन्हें खूनी खान किसी हालत में भी माफ नहीं करेगा।

मुख्य शिविर में लौटते ही नवागन्तुक को नयी वर्दी दे दी गयी–घुड़सवार की चौड़ी बिरजिस फौजी कमीज चमड़े की जैकेट और नुकीले सिरेवाली बुद्योन्नी टोपी। टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव ने ये सभी चीजें चारी हसन या हसनोव (दस्ते की सूची में उसका यही नाम लिखा गया था) के सामने रख दीं। नवागन्तुक चुप रहा पर उसने कपड़े भी नहीं बदले। जब कमाण्डर ने धमकी दी कि अगर तुम वर्दी नहीं पहनोगे तो दस्ते से निकलना होगा, तब चारी हसन मेड़ के पीछे चला गया और वहाँ उसने झटपट कपड़े बदल लिये।

"अब लगते हो असली घुड़सवार!..." किसी ने उसे उत्साहित करने की कोशिश की, पर नवागन्तुक की उदास और तीखी नजर देखकर बीच में ही चुप हो गया।

इस दस्ते में चार तुर्कमान थे। उनमें नवागन्तुक के प्रति प्रत्येक का अपना ही रवैया था। टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव किजील-अर्वात्स्क रेलवे के मरम्मतखाने का गम्भीर और विवेकपूर्ण मजदूर था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह चारी की ओर बिल्कुल ध्यान ही नहीं देता। वह कभी भी उसकी ओर न तो देखता और न किसी तरह की टीका-टिप्पणी ही करता। अगर चारी से कोई गलती हो जाती तो टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव उसके पास जाकर धीमी आवाज में यह समझा देता कि उसे क्या करना चाहिए और चारी उस काम को दोहरा लेता। बस रहीमोव उससे इतना ही सरोकार रखता।

दो ओराजोव भाई भूतपूर्व 'जंगली' डिवीजन के दिलेर घुड़सवार थे। उन्नीस सौ सत्रह में कोर्नीलोव ने इस डिवीजन को क्रान्तिकारी पेत्रोग्राद की ओर भेजा था। इन दोनों भाइयों

को रास्ते में ही समझा-बुझाकर क्रान्तिकारियों की ओर कर लिया गया था। ये दोनों नवागन्तुक पर जरा अपना रोब गाँठने की कोशिश करते। वे तीन वर्ष तक विश्व-युद्ध में और गृहयुद्ध के पाँच मोर्चों पर लड़ चुके थे। वे जायज तौर पर ही ऐसा मानते थे कि जीवन का कुछ भी अनुभव न रखनेवाले रेगिस्तान के चरवाहे को हमारे हर शब्द पर कान देना चाहिए। किन्तु हसन दोनों के प्रति घृणापूर्ण अन्यमनस्कता प्रकट करता और इस तरह बहुत जल्द उन्होंने खुद ही उसकी तरफ ध्यान देना बन्द कर दिया।

हाँ, पर नवागन्तुक के दस्ते में आने के पाँचवें दिन उन दो भाइयों में से एक ने चारी से कुछ मजाक-वजाक कर दिया। इस पर नवागन्तुक गुस्से से लाल-पीला हो उठा, उसने राइफल हिलायी और गुस्से से चीखकर कुछ कहा। यह घटना छोटे-से स्टेशन के पीछे सैनिक अध्यास के मैदान में घटी। दोनों भाइयों ने झटपट अपने घोड़ों की लगामें थामीं और चारी से दूर हट गये।

"क्या किस्सा हो गया है?" कमिसार ने पूछा। छोटे भाई ने बड़े की ओर देखा। बड़े ने सिर हिला दिया।

"क्या कहा था उसने चिल्लाकर?" कमिसार ने कड़ाई से फिर प्रश्न किया।

"उसे दस्ते का कोई भी आदमी पसन्द नहीं है... हमसे तो वह और भी ज्यादा नफरत करता है..." आखिर बड़े भाई ने जवाब दिया।

कमिसार ने यह जानने के लिए बहुत जोर लगाया कि नवागन्तुक ने चिल्लाकर क्या कहा था, पर दोनों भाई गहरी

साँसें लेते हुए खामोश रहे।

चौथा तुर्कमान था--योमूद कबीले से ताल्लुक रखनेवाला क्रास्नोवोदूस्क का मुँहफट कुली मामेदोव। उसने तो नवागन्तुक के प्रति फौरन ही दुश्मनी का रुख अपना लिया। उसने अपनी भावनाओं को छिपाया भी नहीं। दूसरे ही दिन उसने कमिसार के पास जाकर यह घोषणा की कि अगर वह और कमाण्डर दस्ते का नाश चाहते हैं तो बेशक इस आस्तीन के साँप को पाले रहें।

''वह बासमाच है, दुश्मन है!'' मामेदोव चिल्लाया। ''इन जगहों के सभी लोग ऐसे ही हैं। इन पुराने घाघों पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इनमें तो केवल एक ही भला आदमी है--रहीमोव...''

मामेदोव ने जब चारी को सैनिक अभ्यास के मैदान में देखा तो गुस्से से थरथर काँपने लगा। वह उस पर झपटने को तैयार था और केवल कमाण्डर और कमिसार के दबदबे के कारण ही अपने को वश में रख पाया।

कमिसार ने रहीमोव से बात करने का निर्णय किया।

''उसके बारे में सैनिक ठीक ही कहते हैं!'' टुकड़ी-कमाण्डर ने पुष्टि की। ''उसे हम लोग पसन्द नहीं हैं फूटी आँखों नहीं सुहाते...''

''तो क्या किया जाये?'' कमिसार ने पूछा।

''कुछ भी करने की जरूरत नहीं...ऐसे ही चलता रहे, दस्ते में बना रहे...''

रहीमोव स्पष्टतः इस विषय पर बातचीत नहीं करना चाहता था।

दस्ते के कमाण्डर पेल्टीन ने बिल्कुल अप्रत्याशित ही, नवागन्तुक की हिमायत की। कठोर लाटवियावासी ने नये सैनिक की गतिविधियों के बारे में सन्देहपूर्ण बातें सुनकर रुखाई से सिर्फ इतना ही कहा :

''बस रहने दीजिये!''

सैनिकों ने हैरान होकर एक-दूसरे की तरफ देखा। कमाण्डर पेल्टीन पूरे हफ्ते में एकाध शब्द ही बोलता था। ऐसे शब्दों की अवहेलना नहीं की जा सकती थी।

सैनिक शिक्षा के एक ही ढर्रे के दिन बीत रहे थे। पौ फटते उठना, दोपहर के खाने तक सैनिक अभ्यास के मैदान में शिक्षा पाना, दोपहर के खाने के बाद निशानेबाजी करना और राजनीतिक शिक्षा में हिस्सा लेना।

नवागन्तुक बढ़िया घुड़सवारी करता और अच्छे निशाने लगाता था। शिक्षा के दूसरे ही दिन उसने घुड़सवारी से सम्बन्धित सभी जटिल आदेशों को अच्छी तरह पूरा किया। संयोगवश तेलेशोव के पास उसका सोर्मोवोवासी एक पुराना मित्र, टुकड़ी-कमाण्डर दिमाकिन आ पहुँचा। उन दोनों ने कुछ मिनट तक खड़े रहकर चारी को तलवार चलाते देखा।

''जार के गार्डों की-सी चाल-ढाल है इसकी...'' दिमाकिन ने यों ही साधारण ढंग से कहा।

तेलेशोव ने नाक-भौंह सिकोड़ी। उसके दिमाग में भी यही विचार आया था।

''उन्नीस सौ सत्रह में मैंने पीटर्सबर्ग में एक गार्ड को पकड़ा था,'' दिमाकिन ने अपनी बात जारी रखी। ''वह दाढ़ी

रखे, देहातियों का लबादा और देहातियों की तरह छाल के जूते पहने हुए था--सोलह आने देहाती लगता था। पर चलता था बिल्कुल तनकर, क्या मजाल की जरा भी झुक जाये। मैंने गौर से देखा--छाल के जूते तो खैर अपनी जगह थे, पर वह पाँव को जरा भी नहीं झुकाता था, फौजी की तरह धम से जमीन पर रखता था। मैं खुद भी कभी जार की सेना में गार्ड रह चुका था...मैंने आव देखा न ताव उसके सामने जा पहुँचा, तन गया और परेड के फौजी ढंग से चलने लगा। उसके लिए यह बिल्कुल अप्रत्याशित बात थी--उसका हाथ फौरन फौजी सलामी के लिए उठ गया। उसे इस बात का भी ध्यान न रहा कि वह अफसरी के चिह्नों के बिना है..."

तेलेशोव ने खिन्न मन से यह किस्सा सुना। वहाँ से अपने घोड़े बढ़ाते हुए उन दोनों की नजरें मामेदोव की आँखों पर जा टिकीं जो नफरत से नवागन्तुक की ओर देख रहा था। मामेदोव को जब यह एहसास हुआ कि उसकी ओर देखा जा रहा है, तो उसने गाली दी, घोड़े पर छड़ी सटकारी और उसे कुदाता हुआ अभ्यास के मैदान से दूर चला गया।

यह खास फौजी दस्ता अन्तरराष्ट्रीय था। इसके अधिकतर सैनिक सोर्मोवोवासी थे। उनके अलावा इसमें मग्यार, चेक तातार, दो आस्ट्रियावासी और एक चीनी भी शामिल था। ये सभी मजदूर लोग थे और इसलिए राजनीतिक शिक्षा के समय कमिसार क्या कहता है, यह समझने के लिए उनका अच्छी तरह रूसी भाषा जानना जरूरी नहीं था।

राजनीतिक शिक्षा के समय चारी एक ही बिन्दु पर दृष्टि गड़ाये हुए बुत बना बैठा रहता। कभी-कभी वह आँखें मूँद

लेता मानो सो गया हो। किन्तु कमिसार जानता था कि वह सो नहीं रहा है।

"तुम अनुवाद करके उसे कुछ समझा देते, उससे कुछ बातचीत करते..." कमिसार ने रहीमोव से कहा।

"कोई जरूरत नहीं है," रहीमोव ने जवाब दिया और साथ ही यह भी कहा : "उसे यह सब नहीं चाहिए, वह यह सुनना ही नहीं चाहता..."

कमिसार ने नवागन्तुक से सम्बन्धित पहेली को सुलझाने, उसके और रहीमोव, ओराजोव भाइयों तथा मामेदोव के बीच पैदा हो जानेवाले अजीब सम्बन्धों को समझने की कोशिश की, पर उसे सफलता नहीं मिली। रूसियों के बीच मानो सब कुछ बहुत सीधा-सरल था।

आधा महीना भी न गुजरा कि एक अँधेरी रात में निकटवर्ती छोटे-से स्टेशन के पहरेदारों की हत्या कर दी गयी। सूखी हुई और उपेक्षित सिंचाई-खाई में रात भर बैठे रहनेवाले स्विचमैन ने बताया कि मैंने बासमाचों के बीच दो रूसी सफेद गार्डों और शमुर्दखान को भी देखा है।

जब कमाण्डर को यह सब कुछ बताया जा रहा था तो दिमाकिन ने कमिसार की आस्तीन खींची और आँखों से चारी की ओर संकेत किया। न जाने इस समय कैसे वह यहाँ आ पहुँचा था और छोटे-से स्टेशन की दीवार के साथ चौकन्ना होकर सटा खड़ा था। कमिसार की नजर से नजर मिलने पर हसन इत्मीनान से मुड़ा और अस्तबलों की ओर चला गया।

"अगर इस नौजवान को रूसी न आती हो, तो बेशक

मेरा सिर कलम कर दिया जाये!'' दिमाकिन ने कहा।

कुछ ही समय बाद यह सैनिक दस्ता दुलकी चाल से घोड़े दौड़ाता हुआ रेलवे लाइन के साथ-साथ बढ़ चला। चार घण्टे-बाद घुड़सवार तबाहहाल स्टेशन पर पहुँचे। जले हुए घरों के ढाँचों पर उदासी भरी कालिमा छायी हुई थी। पुश्ते के करीब तिरपाल से ढकी हुई लाशें एक कतार में पड़ी थीं। सैनिकों के चेहरों पर मातमी उदासी छा गयी, किन्तु नवागन्तुक अन्यमनस्कता से लाशों के पास से गुजर गया...यहाँ से ये लोग बायीं तरफ को रेगिस्तान की ओर मुड़ गये। अभी पिछले दिन ही पानी बरसा था और गीली मिट्टी पर बासमाचों के सैकड़ों घोड़ों के पैरों के बहुत ही साफ निशान नजर आ रहे थे।

शाम होने तक इन्होंने तीस किलोमीटर की मंजिल तय की। रेगिस्तान की सीमा पर ही पड़ाव डाला।

सैनिकों ने अलाव नहीं जलाये। वे चुपचाप रस्क चबाते सिगरेटों के कश लगाते और फौजी ओवरकोटों के छोरों से उन्हें छिपाते रहे। वे ठंडी रेत पर ही सोये। चमड़े की जैकेटों और फौजी ओवरकोटों के बावजूद पतझर की नम, ठंडी हवा से सैनिक ठिठुरने लगे और एक-दूसरे के साथ सट गये।

कमिसार को फिर से नींद नहीं आ रही थी। वह चित लेटा हुआ रात भर के लिए धुन्ध-मुक्त होनेवाले सितारों जड़े आकाश को देख रहा था। कमिसार सपना देख रहा था या नहीं, यह कहना कठिन है, पर उसे कानाविन नगर में अपना वह कमरा साफ दिखायी दिया जहाँ वह ओमस्क की निर्वासन-जेल से भागकर आने के बाद रहा था। कमरे में दिमाकिन, तेलेशोव और अन्य लोग जमा हो गये थे और उसे

'साथी ग्रिगोरी' कहकर सम्बोधित कर रहे थे। अचानक दरवाजा चौपट खुल गया और हवा के झोंके से लैम्प बुझ गया। न जाने क्यों, तेलेशोव चमड़े की जैकेट पहने था जिसकी बगल में माउजर पिस्तौल लटकी हुई थी। उसने सावधानी से कमिसार का कन्धा हिलाते हुए कहा--

''ग्रिगोरी उठो, जरूरी काम है!''

कमिसार फौरन उठ खड़ा हुआ।

''क्या माजरा है?''

''नवागन्तुक गायब हो गया...'' तेलेशोव ने दबी आवाज में कहा।

कमाण्डर को जगाया गया, पहरेदारों से पूछताछ की गयी। उनमें से किसी ने भी चारी को नहीं देखा था। उसका घोड़ा अन्य घोड़ों के बीच खड़ा था अगाड़ी बन्धा हुआ।

''कोई बात नहीं सुबह देखा जायेगा...'' कमिसार ने कहा। पर सावधानी बरतते हुए पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी गयी और लोग फिर से सो गये। भोर होने के पहले, ठीक पौ फटने के समय तेलेशोव ने फिर से कमिसार को जगाकर सूचना दी कि चारी लौट आया है। ऐसे जाहिर किया गया मानो किसी को कुछ भी मालूम नहीं और सवेरा होते ही चारी फिर से अपनी जगह पर जा डटा।

इसी दिन बासमाचों से पहली मुठभेड़ हुई। घात में बैठे शमुर्दखान के लोगों ने दस्ते की गश्त करनेवाली टुकड़ी पर अप्रत्याशित ही गोली चला दी। अगले दिन जमकर लड़ाई हुई। एक कुएँ के पास मिट्टी की दीवार के पीछे छिपकर बासमाचों ने बन्दूकों और मशीनगनों से तड़ातड़ गोलियाँ

बरसानी शुरू कर दीं। घुड़सवार तेजी से घोड़ों से नीचे उतर आये। उनमें से कुछ घायल हो गये।

लड़ाई का रूप बिल्कुल स्पष्ट था। दुश्मन पर पहलुओं से हमला करना, कुएँ को घेरे में लेना और इस बात की कोशिश करना जरूरी था कि कोई भी बचकर न निकलने पाये। किन्तु शमुर्दखान ने दोनों पहलुओं पर दो मशीनगनें तैनात कर दीं। इसके अलावा उसने रेगिस्तान के दोनों ओर तीन-चार आदमियों की छोटी टुकड़ियाँ भी नियुक्त कर दीं जो आगे बढ़नेवालों के लिए दहशत पैदा करतीं और उनके तनिक आगे बढ़ आने की भी सूचना देतीं। बासमाचों ने जो रेवड़ हथियाये थे जब तक वे रेगिस्तान के दूरस्थ कुओं तक न पहुँच जायें, तब तक शमुर्दखान को हर कीमत पर इस खास फौजी दस्ते को रोके रखना था। उसने नयी सत्ता के विरुद्ध कठोर और घमासान लड़ाई लड़ने के लिए उसी जगह अपना अड्डा जमाने का निर्णय किया था।

जिस समय खूब जमकर लड़ाई हो रही थी, उसी समय कमिसार के नजदीक ही लेटे हुए दिमाकिन ने नवागन्तुक की ओर इशारा किया। वह लगातार दुश्मनवाले पक्ष की ओर देख रहा था। अचानक वह बेचैन हो उठा, उसने सिर ऊँचा किया, नीचा किया, पूरी तरह सीधा खड़ा हुआ और फिर लेट गया। उसने तेलेशोव की दूरबीन अपनी ओर खींची। तेलेशोव ने दूरबीन उसे दे दी। चारी निकटवाले रेतीले टीले को गौर से देखने लगा। बासमाचों की ओर यही सब से ऊँचा स्थान था। कमिसार टीले के पीछे की ओर देखने लगा। उसे वहाँ भी दूरबीन के शीशे चमकते दिखायी दिये और घड़ी भर बाद

सफेद झबरीली टोपी पहने हुए व्यक्ति का सिर दिखायी दिया। सम्भवतः इसी सैनिक पंक्ति में से अन्य किसी का भी इस ओर ध्यान गया, क्योंकि उसी क्षण टीले की चोटी पर लगनेवाली गोलियों से रेत की कुछ धारायें नीचे बह चलीं।

खास फौजी दस्ते के सैनिक बालू में गहरे पदचिह्न छोड़ते हुए धीरे-धीरे किन्तु दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते जाते थे। रेत आँखों, मुँह, कानों, जेबों और घुटने तक के जूतों में भरती जाती थी। कोई दो घण्टे बाद शमुर्दखान यह समझ गया कि मैं शाम तक कुएँ पर डटा नहीं रह सकूँगा। छोटी-सी रक्षा-टुकड़ी वहीं छोड़कर वह जल्दी से उत्तर की ओर पीछे हटने लगा, गहरी रेत की ओर बढ़ने लगा। बासमाचों की रक्षा-टुकड़ी का विरोध फौरन खत्म कर दिया गया और संध्या होते-होते खास फौजी दस्ता बासमाचों के गिरोह के निकट पहुँचने लगा। रात को जब लड़ाई के साज-सामान का हिसाब-किताब जोड़ा गया तो पता चला कि चारी ने उस दिन एक भी गोली नहीं चलायी थी...

अगले पूरे दिन गिरोह का पीछा किया जाता रहा। चलती-फिरती रेत में से घोड़े बड़ी मुश्किल से ही पैर निकाल पाते थे। अगर एक दिन पहले बरसात न हुई होती तो यहाँ तो घोड़ों को आगे बढ़ाना सम्भव ही न हो पाता।

बासमाच स्पष्टतः बहुत परेशान हो रहे थे। वे कभी दायें मुड़ जाते तो कभी बायें, और इस तरह खास दस्ते को उस रास्ते से भटकाने की कोशिश करते थे जिधर उन्होंने भेड़ों का बहुत बड़ा रेवड़ हाँक दिया था। किन्तु भेड़ों के पैरों के निशानों को मिटाना सम्भव नहीं था।

तीसरे दिन की सुबह को दूरी पर गोलियाँ चलने की

आवाज सुनाई दी। यह आवाज कोई डेढ़ घण्टे तक जारी रही। खास दस्ते के सैनिक जब एक बड़े-से गढ़े के पास पहुँचे तो बहुत ही भयानक दृश्य देखकर वहाँ ठिठक गये। ऐसा दृश्य उन्होंने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। हजारों भेड़ों की लाशें क्षितिज तक भूमि को ढके हुए थीं। कहीं-कहीं पर कोई भेड़ दम तोड़ने से पहले तड़प और चीख-चिल्ला रही थी। कभी एक तो कभी दूसरी भेड़ मौत के पहले की पीड़ा से जमीन पर बुरी तरह छटपटाने लगती। यह महसूस करते हुए कि वे भेड़ों को ले जा नहीं पायेंगे, बासमाचों ने उन सभी की हत्या कर डाली थी। भेड़ों के साथ-साथ उन्होंने चरवाहों को भी गोलियों से उड़ा दिया था। चरवाहे औंधे मुँह भेड़ों के बीच पड़े हुए थे। खून से लथपथ भूमि पर वहशी बने हुए कनकटे झबरीले कुत्ते इधर-उधर भागे फिर रहे थे...

आगे चलकर बासमाचों के पद-चिह्न बिखर गये। उन्होंने अपने को कई टुकड़ियों में विभाजित कर लिया और विभिन्न दिशाओं में चले गये ताकि कुछ दिन बाद फिर से किसी दूरस्थ कुएँ पर इकट्ठे हो जायें। इस बार भी बासमाच बच निकले। शमुर्दखान अपनी शक्ति को सुरक्षित रख रहा था और खुलकर मैदान में नहीं आता था।

चारी हसन एक बार फिर रात के वक्त गायब हो गया। यह घटना लौटते समय एक वीरान कुएँ के करीब रात को घटी। पिछली बार की तरह इस बार भी वह सब के सो जाने पर ही गायब हुआ। पहरेदारों की उस पर नजर नहीं पड़ी। उसके पीछे-पीछे मामेदोव भी गया और पहरेदार उसे भी नहीं देख पाये। कोई दो घण्टे बाद नवागन्तुक लौट आया। किन्तु

मामेदोव पौ फटने पर ही बुरी तरह जला-भुना हुआ लौटा।

सुबह होने पर दिमाकिन ने कमिसार से इस बात की चर्चा करने का निर्णय किया।

"ग्रिगोरी सैनिक नाखुश हैं। हम बहुत अधिक नर्मी बरत रहे हैं उसके साथ!" उसने माथे पर बल डालकर चारी की ओर संकेत करते हुए कहा।

कमिसार देर तक नवागन्तुक को ध्यान से देखता रहा। "तुमने उचित शब्दों का उपयोग नहीं किया दिमाकिन," आखिर कमिसार ने कहा। "यह सोर्मोवो नहीं है, जहाँ सब कुछ बहुत पहले से ही स्पष्ट हो चुका है..."

"पूर्वी नीति से काम ले रहे हो!" दिमाकिन ने हँसकर कहा।

"नीति से, हाँ नीति से तो...तुमने यह अधिक उपयुक्त शब्द ढूंढा है, कमिसार ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

खास फौजी दस्ते को इस बार साँस लेने का और भी कम समय मिला। दस्ते के शिविर में लौटने के दो ही दिन बाद पहाड़ों के दामन में बसे हुए एक बड़े गाँव पर बासमाचों के हमले की खबर मिली। अगले दिन लाल सेना की गाड़ियों की कतार पर गोलियाँ चलायी गयी। इसके दो दिन बाद बासमाचों ने बहुत बड़ी संख्या में पड़ोस के रेलवे स्टेशन पर हमला किया।

शमुर्दखान के निकट आने की पूर्वसूचना पाकर रेलवे के मजदूर और रेलवे की रक्षा करनेवाले सैनिक पुश्ते के पीछे छिप गये और दिन भर बासमाचों की गोलियों का जवाब देते रहे। शाम को गाड़ी के दो डिब्बों में खास दस्ते के सैनिक यहाँ पहुँचे तो बासमाच फिर से रेगिस्तान में इधर-उधर बिखर गये।

यह स्पष्ट हो गया था कि शमुर्दखान बड़ी मुठभेड़ की तैयारी कर रहा है। पहाड़ों के दामन में बसे गाँवों में उसके प्रचारक पहुँच गये जिन्होंने लोगों से यह अपील की कि वे रूसियों के विरुद्ध जिहाद में भाग लें। जब एक बूढ़े ने यह पूछा कि शमुर्दखान की सेना में रूसी कजाक क्यों शामिल हैं तो उसके सिर पर गोली मार दी गयी।

कमाण्डरों और पार्टी-सदस्यों की सभा में यह तय पाया गया कि शमुर्दखान ने जिस गाँव को लूटा था, दस्ता वहाँ जाये और वहाँ से शमुर्दखान का सुराग लगाये।

गाँव के आधे झोपड़े जला दिये गये थे। शमुर्दखान ने अपनी ताकत बढ़ाने के लिए यहाँ से एक सौ जवान अपनी सेना में जबर्दस्ती शामिल करने का हुक्म दिया। यह खबर पाकर अधिकतर जवान पहाड़ों में भाग गये। तब बासमाचों ने उनके घर जला दिये और उन सभी के रिश्तेदारों को मार डाला।

खास दस्ते ने गाँव के छोर पर स्थित बाइयों के पुराने अस्तबलों में डेरा डाला। जब कोई सैनिक गाँव के जीवित बच गये किसी व्यक्ति से बात करने की कोशिश करता तो वह डरा-सहमा-सा झटपट एक तरफ को हो जाता। शमुर्दखान ने इस बात की चेतावनी दे दी थी कि लाल सैनिकों से बातचीत करनेवालों का सिर कलम कर दिया जायेगा। रहीमोव, ओराजोव भाई तथा मामेदोव मुँह लटकाये हुए गाँव का चक्कर लगा रहे थे। किन्तु नवागन्तुक बड़े इत्मीनान से लाशों और तपे हुए पत्थरों को देख रहा था। पहले की भाँति इस समय भी उसका चेहरा भावशून्य था।

यह भाँपना कठिन नहीं था कि गाँववाले चारी हसन को

जानते हैं। गाँववाले या तो आतंकित होकर या छिपी-छिपी आदर की दृष्टि से उसकी ओर देखते थे।

अगले दिन संध्या समय जब घोड़ों की सफाई की जा रही थी तो मामेदोव भागता हुआ तेलेशोव के पास आया और चाबुक से पहाड़ की ओर इशारा करते हुए उसके कान में कुछ फुसफुसाया।

"तुम्हें भ्रम तो नहीं हुआ?" तेलेशोव ने पूछा।

"नहीं, भ्रम नहीं हुआ," मामेदोव ने भड़ककर कहा। "वह दोपहर से तैयारी कर रहा था...उसने राइफल की जाँच की। जीन के पट्टे कसे। मैं बहुत देर से उसकी ओर देख रहा हूँ..."

कमिसार का आदेश पा दिमाकिन, तेलेशोव और मामेदोव घोड़ों पर सवार होकर गाँव से बाहर निकले और उन्हें कुदाते हुए पहाड़ों की ओर बढ़ चले। जब वे पहले टीले पर चढ़े तो मामेदोव ने सामने की ओर संकेत किया। बढ़ते हुए झुटपुटे में घुड़सवार साफ दिखायी दे रहा था। वह घाटी के किनारे-किनारे दुलकी चाल से घोड़ा दौड़ाता हुआ इत्मीनान से जा रहा था। उन्होंने अपने घोड़े तेज कर दिये। जब निकट पहुँच गये तो दिमाकिन ने घोड़े को धीमा किया और हाथ के संकेत से साथियों को सावधान किया, अब वे भी आधे किलोमीटर का फासला रखते हुए दुलकी चाल से घोड़े दौड़ाने लगे। चाँद उनके पीठ पीछे था और इसलिए चारी बिल्कुल साफ दिखायी दे रहा था।

इसी तरह वे कोई डेढ़ घण्टे तक आगे बढ़ते रहे। अचानक एक उठान पर जाकर घुड़सवार रुक गया। ये तीनों भी जहाँ

के तहाँ ही ठहर गये। दूरी पर केवल सियारों की चीख-चिल्लाहट सुनाई दे रही थी। नुकीली बुद्योन्नी टोपी पहने हुए चारी उठान पर बिल्कुल साफ दिखायी दे रहा था।

दूरी पर घोड़े की सधी हुई टापें सुनाई देने लगीं। एक अन्य घुड़सवार निकट आता जा रहा था। वह चट्टान की ओट में छिपे हुए इन तीनों सैनिकों के इतने अधिक निकट से गुजरा कि उन्हें उसकी बर्फ की तरह सफेद झबरीली टोपी की लटों के नीचे उसका चेहरा बिल्कुल साफ दिखाई दिया। उनसे कोई तीसेक कदम की दूरी पर उसने कन्धे से चोगा उतारा, जीन पर तन गया और धीरे से सीटी बजायी। चारी घोड़े को उठान से नीचे उतार कर उसके निकट ले गया। घोड़े पर बैठे-बैठे ही वे आपस में कुछ बतियाने लगे। चारी हसन जब अजनबी घुड़सवार से बातचीत खत्म कर चुका और वे अपने-अपने रास्ते बढ़ने लगे तो मामेदोव ने घोड़े पर चाबुक बरसाया, टिटकारी भरी और घात से निकलकर सामने आ गया। उसी क्षण गोली चली। सफेद टोपी पहने हुए घुड़सवार ने घोड़े को चाबुक लगाया और घोड़ा एक अतिकाय पक्षी की भाँति उसे स्तेपी में ले उड़ा। "रुक जाओ!" मामेदोव चिल्लाया और भगोड़े पर पिस्तौल से एक के बाद एक गोली बरसाने लगा। स्पष्टतः उसका घोड़ा बहुत बढ़िया था। सामने की ओर से दिमाकिन और तेलेशोव उसकी तरफ बढ़े पर वह आसानी से उनके करीब से निकल गया। पाँच मिनट बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि उसका पीछा करना बेकार है। अज्ञात घुड़सवार रात के शून्य में विलीन हो गया।

वे चारी हसन को खोजने के लिए पीछे की ओर लपके।

उन्होंने आसपास के सभी टीलों का चक्कर लगाया, उनके बीच की घाटी छान मारी और केवल सुबह होने पर ही खोज बन्द की।

जब ये तीनों गाँव मैं लौटे तो सूरज काफी ऊँचा जा चुका था। दस्ता अस्तबलों के करीब सैनिक टुकड़ियों में खड़ा था। बायीं ओर की पहली टुकड़ी में चारी हसन इत्मीनान से घोड़े पर सवार था। उसका घोड़ा सदा की भाँति साफ-सुथरा था और गोला-बारूद बिल्कुल ठीक-ठाक...मामेदोव दिमाकिन और तेलेशोव एक भी शब्द कहे बिना अपनी-अपनी जगहों पर जाकर खड़े हो गये।

उन्होंने कमिसार और कमाण्डर को सारा हाल कह सुनाया। पेल्टीन ने तो माथे पर केवल बल ही डाले। सवीत्स्की सोच में डूबा हुआ दूरबीन के केस पर उँगलियों से ताल देता रहा।

"गोली मार देनी चाहिए... बासमाच है..." मामेदोव ने जोर देकर कहा। दिमाकिन का भी कुछ-कुछ ऐसा ही विचार था। पर कमिसार ने सिर हिला दिया। तेलेशोव और मामेदोव को चारी हसन पर कड़ी नजर रखने की हिदायत कर दी गयी, विशेषतः लड़ाई के समय।

"गोली तो कभी भी मारी जा सकती है," कमिसार ने इतना कहकर ही बात खत्म कर दी।

मामेदोव ने तो हताशा से थूक भी दिया।

दोपहर के खाने का वक्त होते-होते चारी हसन या ऐसे नामवाला व्यक्ति, बेचैनी जाहिर करने लगा। शायद पहले इस बात की ओर किसी का ध्यान न भी गया होता, किन्तु अब

तो सैनिक उस पर लगातार नजर टिकाये रहते थे। सुबह से ही सूखी हुई सिंचाई-खाई के करीब राजनीतिक शिक्षा का कार्यक्रम चल रहा था। नवागन्तुक सदा की भाँति एक ही बिन्दु पर नजर गड़ाये बैठा था। सूरज जब सिर पर आ गया तो वह उठा और किसी से कुछ पूछे-ताछे बिना ही अस्तबलों की तरफ चल दिया। उसके पीछे-पीछे जानेवाले तेलेशोव ने देखा कि चारी घोड़े पर जीन कस रहा है।

राजनीतिक शिक्षा के बाद चारी हुसन फौजी लंगर में नहीं गया जहाँ सैनिकों को दोपहर का खाना दिया जा रहा था। चारी कमिसार के निकट खड़ा हुआ था और जब-तब पूरब की ओर देखता जाता था। ऐसा लगता था कि वह बड़ी बेचैनी से किसी चीज का इन्तजार कर रहा है। खाना खाने के बाद सैनिक इधर-उधर बिखर गये, कोई अपनी पट्टियाँ धोने लगा और कोई रिश्तेदारों को खत लिखने बैठ गया। नवागन्तुक और भी अधिक परेशान हो उठा। एक-दो बार वह कमिसार के बिल्कुल करीब आया, एक ही जगह पर पैर बदलता हुआ खड़ा रहा और फिर चला गया...

दोपहर को सम्पर्क-सैनिक सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और उसने यह सूचना दी कि बासमाचों ने एक अन्य स्टेशन पर हल्ला बोला है, चौड़ी सिंचाई-खाई पर बना हुआ पुल उड़ा दिया है और इस तरह रेलगाड़ी का रास्ता बन्द कर दिया है। उन्होंने स्टेशन पर दो गाड़ियाँ लूट ली हैं। बासमाच जो कुछ अपने साथ न ले जा पाये, उन्हेंने वह सब जला डाला है। यह सारी घटना उषाबेला में हुई। अब शमुर्दखान को धर दबाने के लिए उत्तर की ओर से एक अन्य खास दस्ता बढ़

रहा है। बासमाचों को घेरे में लेना जरूरी है।

सम्पर्क-सैनिक को देखते ही चारी हसन अस्तबल की ओर भागा। अभी खतरे का संकेत भी नहीं दिया गया था, किन्तु वह तो सफर के लिए पूरी तरह तैयार होकर काठी पर भी जा बैठा था। अब तो तेलेशोव को भी इस बात का सन्देह न रहा कि दाल में कुछ काला जरूर है। नवागन्तुक को स्पष्टतः इस बात की पहले से ही जानकारी थी कि बासमाच हमला करेंगे...

इस बार शमुर्दखान की किस्मत ने उसका साथ न दिया। लूट का माल लिये हुए उसने पूर्व की ओर भाग निकलने का प्रयास किया तो दूसरे खास दस्ते को अपने सामने पाया। इस दस्ते के अग्रिम भाग ने उत्तर का रास्ता रोक लिया था और इस तरह बासमाचों के लिए रेगिस्तान में भाग जाना असम्भव बना दिया था। पेल्टीन पश्चिम की ओर से बढ़ रहा था। दिमाकिन की कमान में दो सैनिक टुकड़ियों ने दक्षिणी पहाड़ी रास्ता रोक दिया था। इस तरह शमुर्दखान घेरे में आ गया था।

गिरोह को लगातार पहाड़ों से रेलवे स्टेशन की ओर धकेला गया। एक छोटे-से स्टेशन पर दो दिनों तक घमासान लड़ाई होती रही। लगभग दो सौ बासमाच या तो भाग गये या बन्दी बना लिये गये। गिरोह के सरदार अपने वफादार लोगों के साथ टीलों की ओर भाग गये और वहीं उन्हें घेरे में ले लिया गया।

तेलेशोव और मामेदोव लगातार चारी हसन के करीब ही बने रहे। पहली लड़ाई की भाँति इस लड़ाई में भी उसने एक भी गोली नहीं चलायी और तेलेशोव से दूरबीन भी माँगी।

जब यह स्पष्ट हो गया कि शमुर्दखान घेरे से शायद ही निकल पायेगा तब तो चारी हसन ने विशेषतः बहुत बेचैनी प्रकट करनी शुरू की। बेशक बासमाच टीलों की चोटियों की आड़ से धड़ाधड़ गोलियाँ चला रहे थे, पर इसकी कुछ भी परवाह न करते हुए वह उछल कर खड़ा हो जाता और तनावपूर्ण ढंग से दूरी पर देखता रहता। ऐसा प्रतीत होता था मानो उसे इस बात का पक्का यकीन है कि बासमाचों की गोलियाँ उसे नहीं छुयेंगी। इससे तेलेशोव के सन्देह की और भी अधिक पुष्टि हुई।

एक बार आगे दौड़ते समय तेलेशोव की नवागन्तुक पर से अचानक नजर चूक गयी। वह बेचैनी से इधर-उधर देखने लगा और तभी मामेदोव पर उसकी नजर पड़ी जो बासमाचों के बायें पहलू की तरफ इशारा करते हुए कुछ चिल्ला रहा था। तेलेशोव ने उस तरफ देखा तो स्तम्भित रह गया। टीलों के दामन में उसे बुद्योन्नी टोपीवाला व्यक्ति दिखायी दिया। वह राइफल घुमाता हुआ बासमाचों की ओर भागा जा रहा था। दूरबीन से देखने पर तेलेशोव ने उसे पहचान लिया। वह चारी हसन था। इसी क्षण मामेदोव ने घुटने पर राइफल रखकर भगोड़े पर गोली चलायी। पर देर हो चुकी थी। भगोड़ा किसी खाई में कूदकर आँखों से ओझल हो गया...

बहुत जल्द ही गिरोह के बचे-खुचे लोगों पर दोनों ओर से आक्रमण किया गया। बासमाचों ने खड़े होकर पत्थरों के पीछे से हाथ ऊपर उठा दिये। वे कुल साठ व्यक्ति थे। बन्दियों को तत्काल निहत्थे करके एक कतार में खड़ा किया गया। बरबाद

किये गये गाँव के दो देहातियों को साथ लिये हुए रहीमोव सभी बन्दियों के पास से गुजरा और प्रत्येक को बहुत ध्यान से देखा। शमुर्दखान बन्दियों में नहीं था। खास दस्तेवालों को उसके गुर्गे भी नहीं मिले जिनमें दो रूसी और एक अंग्रेज भी शामिल था। इनके इस गिरोह में होने की खबर बिल्कुल पक्की थी।

"शमुर्दखान कहाँ है?" मामेदोव ने कभी एक तो कभी दूसरे बन्दी बासमाच से पूछा। जवाब में उसे उदासीन बहकी-बहकी और थकी-थकी दृष्टि ही दिखायी दी। केवल एक हट्टे-कट्टे चेचकरू और गुस्सैल आँखोंवाले बासमाच ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया--

"शमुर्दखान नहीं है, उड़ गया...!' और मजाकिया ढंग से आसमान की तरफ इशारा कर दिया।

तब रहीमोव ने इस स्थिति को बदला। उसने चेचकरू बासमाच को वहाँ से ले जाने का आदेश दिया और फिर एक-एक से पूछताछ शुरू की। चेचकरू बासमाच के हटा लिये जाने पर बन्दी जवाब देने लगे। यह पता चला कि शमुर्दखान आखिरी व्यक्ति तक डटे रहने का आदेश देकर घाटी को टीलों से अलग करनेवाले नदी के सूखे हुए पाट की ओर कुछ सरदारों के साथ भाग गया है। उनके भागने के समय चेचकरू बासमाच ने अधिक जोर-शोर से गोलियाँ बरसाने का आदेश दिया था।

बुद्योनी टोपीवाले भगोड़े के बारे में बासमाच कोई निश्चित उत्तर न दे सके। केवल एक ने ही मानो उसे भी शमुर्दखान के साथ नाले के पाट की ओर जाते देखा था...

स्वयं कमिसार ने पीछा करनेवाले दल का नेतृत्व किया। कोई बीसेक कदम आगे जाने पर ही नाले के तल में कई घोड़ों के सुमों के चिह्न दिखायी दिये। कोई दो किलोमीटर तक नाले में बढ़ने के बाद वे उससे बाहर निकले तो उन्हें पड़ोस- वाले दस्ते के दो लाल सैनिक दिखायी दिये। उनमें से एक मृत और दूसरा बेहोश पड़ा था। उसकी बेहोशी खत्म होती जा रही थी और जब तेलेशोव ने उसके सिर पर कुछ पानी डाला तो उसे पूरी तरह होश आ गया।

उसने बताया कि हम दोनों को इर्दगिर्द की निगरानी करने के लिए यहाँ छोड़ा गया था। हम दोनों घोड़े से उतर कर इत्मीनान से टीलों पर हो रही लड़ाई देख रहे थे। अचानक नाले में से झबरीली टोपियाँ पहने हुए कुछ घुड़सवार निकले और हम पर गोलियाँ बरसाने लगे। मेरे साथी को तो उहोंने गोली का निशाना बना दिया किन्तु मैं घोड़े तक पहुँच गया। मैं काठी पर सवार हुआ ही चाहता था कि अचानक किसी ने मेरे हाथ से लगाम झटक लेने की कोशिश की। मैंने मुड़कर देखा तो एक साँवले नौजवान को बुद्योन्नी टोपी पहने हुए खड़े पाया। पर मैंने लगाम नहीं छोड़ी। तब उसने बन्दूक का कुन्दा मेरे सिर पर दे मारा और मैं बेहोश हो गया...

कुछ समय तक घोड़ों के सुमों के चिह्न उत्तर की ओर ले गये और उसके बाद पश्चिम की ओर तथा अन्त में दक्षिण-पश्चिम की तरफ मुड़ गये। स्पष्ट था कि शमुर्दखान पहाड़ों में छिपना चाहता था। निश्चय ही बासमाच बहुत उतावली में थे। सुमों के निशान बता रहे थे कि घोड़ों को सरपट दौड़ाया गया था। कोई आधे घण्टे बाद रास्ते में पड़ी हुई दूरबीन

दिखायी दी। जाहिर था कि किसी बासमाच के हाथ से वह गिर गयी थी पर बेहद हड़बड़ी में होने के कारण वह उसे उठाने के लिए नहीं रुका था...

एक घण्टे बाद झबरीली टोपी और लबादे में एक बासमाच की लाश पड़ी हुई दिखायी दी। उसके मुँह पर गोली मारकर उसकी जान ली गयी थी। करीब ही उसकी अंग्रेजी राइफल पड़ी हुई थी। कोई तीन सौ कदमों के फासले पर एक अन्य लाश मिली। उसके लबादे के नीचे से अफसर की वर्दी दिखायी दे रही थी।

पहाड़ों के दामन में एकबारगी दो लाशें दिखायी दीं। दोनों बासमाच एक-दूसरे के करीब पड़े हुए थे और गोलियाँ उनकी छाती के आर-पार हो गयी थी। उनमें से एक वह अंग्रेज था जिसे खास फौजी दस्तेवाले बहुत अर्से से खोज रहे थे।

पाँचवाँ शव खड्ड के करीब मिला। उसकी छाती में गहरी उतरी हुई सीधी तुर्कमानी छुरी का दस्ता साफ दिखायी दे रहा था। मामेदोव झटपट घोड़े से नीचे कूदा, उसने छुरी निकाली और स्पष्टतः हैरान होते हुए उसके दस्ते को ध्यान से देखने लगा। इसके बाद उसने मृतक के लबादे के छोर से छुरी को साफ किया और जेब में रख लिया...मृतक शमुर्दखान का बहुत ही नजदीकी व्यक्ति था।

आगे घोड़ों के सुमों के निशान पर्वतमाला के साथ-साथ जाते थे। वहाँ तबाहहाल गाँव और टीले पर पुरानी तथा कुछ हद तक बरबाद हुई गढ़ी दिखायी दे रही थी। निशान उसी ओर जाते थे।

समय द्वारा जर्जर किये गये फाटक में प्रवेश करने पर दो

और शव दिखायी दिये। लाल चोगेवाली लाश औंधे मुँह पड़ी हुई थी। दूसरा शव चारी हसन का था। वह चित पड़ा था और उसकी बगल तथा छाती में लगी गोलियों के घाव साफ दिखायी दे रहे थे। छातीवाले घाव के पास फौजी कमीज थोड़ी जल गयी थी। गोली बहुत करीब से चलायी गयी थी। आँखें नसवार की हरी लार से चिपचिपायी हुई थी।

सभी जल्दी-जल्दी आकर लाशों के गिर्द खड़े हो गये। मामेदोव ने खामोशी तोड़ी। उसने जेब से छुरी निकालकर चारी हसन के करीब रख दी।

"यह इसकी छुरी है..." उसने धीमे-से कहा और एक ओर को हट गया।

तेलेशोव अचानक झुका, घुटनों के बल हुआ और उसने हसन की छाती के साथ कान लगाया।

"भाइयो, अभी तो उसकी साँस चल रही है!" तेलेशोव ने काँपती हुई आवाज में कहा।

दूसरा अध्याय

हरियाली सबसे पहले तो पुरानी गढ़ी कारी-काला के पत्थरों के बीच ही लहराती है। हवा उत्तर की ओर से भयानक काले-काले बादलों को अभी खदेड़ कर लाती होती है, कि उनमें कहीं-कही उजले प्रकाश की रेखायें चमकने लगती हैं। इसी समय पुरानी गढ़ी की ढालों पर कुण्डलाकार हरियाली की चादर बिछ जाती है।

कुछ और दिन बीतते हैं तो धारासार बरखा अपना पूरा रंग दिखाकर शान्त हो जाती है। उस समय गढ़ी की ऊँची दीवार से जहाँ तक नजर जाती है, सारे का सारा रेगिस्तान ही हरियाली का अन्तहीन सागर-सा बन जाता है। यह सागर साँय-साँय करता है, हिलोरें लेता है। इस स्तेपी को अब कौन रेगिस्तान, सो भी काला मरुस्थल, कह सकता है?

फिर किसी सुहानी सुबह को कोई जादू-टोना होता है और स्तेपी का रंग बदल जाता है। वह बैंगनी, रक्तवर्णी हो जाती है। तब बुढ़िया दादी अन्नागुल खूँ-खाँ और हाय-वाय करती हुई गढ़ी की मेड़ पर चढ़ जाती है और दूर तक अपनी तेज नजर से एकटक देखती रहती है। यहाँ से ऐसा प्रतीत होता है मानो किस्से-कहानियों के किसी देव-दानव ने रेगिस्तान

में ताजा-ताजा गर्म खून का दरिया बहा दिया है, कि टीलों और पहाड़ों की ढालें उसकी लालिमा में रंग गयी है।

अन्नागुल हर वसन्त मैं उस दिन यहाँ आती है जब पोस्त और ट्यूलिप के लाल फूल खिलते हैं। फिर जब सूरज स्तेपी को झुलस डालता है, उसे फिर से मरुस्थल बना देता है, तो अन्नागुल कालीन बुनने जा बैठती है और आपनी पोती बीबीताज को भी इस काम में हाथ बँटाने के लिए अपने करीब ही बिठा लेती है। फिर जब रेगिस्तान नर्म-नर्म और सफेद बर्फ की चुनरी ओढ़ लेता है तो सौदागर इब्राहीम आता है।

इब्राहीम तो मानो घर का ही आदमी है। खुदा की मेहरबानी से वह कालीन के लिए ऊन और रंग देता है और इस परिवार के सिर चढ़े हुए 120 रूबलों के पुराने कर्ज में से कुछ रकम कम कर देता है। अन्नागुल ने यह रकम उस साल ली थी जब उसने अपने बेटे हसन के लिए अच्छी दुल्हन खरीदी थी।

सिर्फ सौदागर इब्राहीम ही भला आदमी था, ऐसी बात नहीं है। कारी-काला में रहनेवाले लोगों का सबसे बड़ा रक्षक तो था--सर्वप्रतिष्ठित, सर्वसम्मानित इल्यासखान। वह अमीर, बहुत अमीर और बड़ा आदमी था। हल्के का थानेदार अनेक बार उसका मेहमान बन चुका था। इतना ही नहीं, स्वयं प्रदेशाधिकारी भी सैनिक अफसरों के साथ सीमा की जाँच करते समय उसके यहाँ ठहर चुका था। उसकी पत्थर की बनी हुई पक्की, पीली हवेली में रूसी मेहमानों के लिए पलँगों,

सोफों और मेजों से सुसज्जित अलग कमरे थे। वह खुद तो सादा-सरल और भला आदमी था। बहुत-से दूसरे अमीर लोग भला उसकी क्या बराबरी कर सकते थे!

वह तो अपने घर आनेवाले हर व्यक्ति का आदर-सम्मान करता था।

मोटे-ताजे, खूँखार कुत्ते अजनबी को देखकर जंजीरों को झटकने लगे। इल्यासखान उन्हें शान्त करने के लिए खुद बाहर आया और उसने हसन का हार्दिक स्वागत किया। दुआ-सलाम के बाद इल्यास हसन को घर में लिवा ले गया। हसन जूते उतारकर घर में गया। हसन के बेटे चारी ने भी अपने छोटे-छोटे जूते उतारे।

''खासा जवान हो गया है तुम्हारा बेटा,'' इल्यासखान ने चारी की तरफ इशारा किया। हसन जो मजबूत काठी का लम्बा-तड़ंगा आदमी था, कुछ झेंपता हुआ मुस्करा दिया। अपने छोटे बेटे चारी को वह बहुत प्यार करता था। उसका बड़ा बेटा बेर्दी तो बालिग हो चुका था और बहुत जल्द खुद भी घर-बारवाला होने को था। हसन उसी के बारे में बातचीत करने आया था।

मगर आते ही तो मतलब की बात शुरू नहीं की जा सकती थी। वे बैठे हुए इधर-उधर की बातें करने लगे--पर्व के समय घुड़दौड़ कैसी रही, कि अल्लाह को प्यारे हुए इमाम की जगह आनेवाला नया इमाम कैसा है, कि नैतिकता का पतन होता जा रहा है और ऐसे लोग भी हैं जो पुराने रीति-रिवाजों को भूलते जा रहे हैं।

"यह सब कुछ रूसियों के आने के बाद ही हुआ है!" इल्यासखान ने गहरी साँस लेकर कहा। रूसी उसे अच्छे नहीं लगते, पर वह मानता है कि उनसे निबाह करने का ढंग आना चाहिए। इसीलिए उसने अपने छोटे बेटे शमुर्दखान को पीटर्सबर्ग भेज दिया था। वहाँ वह प्रदेशाधिकारी के बेटे के साथ फौजी अफसर बनने का प्रशिक्षण पा रहा था। शमुर्दखान ने अपने बाप को बताया था कि वह दो बार स्वयं जार के दर्शन कर चुका है...

इसी समय इल्यासखान का बड़ा बेटा मुहम्मद बाहर से आया। लोगों का कहना था कि वह वोदका पीता है और शहर में रूसी औरतों के साथ मौज मनाता है।

मुहम्मदखान अपने बाप की लीक पर नहीं चला था। उसने तो जैसे मन मारकर मेहमान से दुआ-सलाम की, उसकी तरफ नजर उठाकर देखा तक नहीं और कोने में पड़े तकिये पर ही जा बैठा। उसका चेहरा बिल्कुल जर्द था। पिछली रात उसे स्टेशन से बिल्कुल मुर्दे की-सी हालत में घर लाया गया था। यह 'सफेद परी' ने (गाँववाले रूसी वोदका को इसी नाम से सम्बोधित करते थे) अपना कमाल दिखाया था।

मुहम्मदखान कूल* कबीले के लोगों से खार खाता था। उसका मत था कि ईगों* को इन वर्णसंकरों को अपने पास भी नहीं फटकने देना चाहिए। गाँव में असली ईगों के सिर्फ पाँच परिवार हैं और अगर वे कूलों से घुले-मिलेंगे तो बहुत जल्द ही उनकी इज्जत-आबरू मिट्टी में मिल जायेगी। अगर ऐसा ही हाल रहा तो बात यहाँ तक जा पहुँचेगी कि पड़ोसी गाँव की भाँति यहाँ भी कोई कूल ईग परिवार की बेटी से ब्याह करना चाहेगा। पर उसकी तो फौरन अक्ल ठिकाने कर दी गयी थी। सलीकेवाले कूल तो स्वयं ही यह जानते हैं कि उनकी असली हैसियत क्या है। ईगों को तो खास तौर पर यह बात मालूम होनी चाहिए।

इल्यासखान इससे सहमत है। पर वह समझदार आदमी है और साँप भी मर जाये तथा लाठी भी न टूटे के उसूल पर अमल करता है। वह जानता है कि डाँट-डपट और धमकी के बजाय प्यार-मुहब्बत से कहीं ज्यादा काम निकाला जा सकता है। मिसाल के तौर पर हसन को ही लिया जा सकता है। वह जानता है और यह समझता है कि इल्यासखान उससे कहीं बड़ा आदमी है। सो भी इसलिए नहीं कि वह धनी है, बल्कि इसलिए कि वह ईग है। उसके लिए इल्यासखान का हर शब्द कानून के बराबर है, वह कभी उसकी अवहेलना नहीं कर सकता। अच्छे बर्ताव से वह अपनी प्रतिष्ठा को और बढ़ा लेता है।

शुरू में उन्होंने कोक-चाय पी, फिर इल्यासखान का मुंशी कूर्त मिट्टी के बड़े-से बर्त्तन में शुर्पा (भेड़ के माँस का शोरबा) लाया। मालिक के आदेशानुसार उसने चारी को पीली-बादामी रंग की चीनी लाकर दी। इल्यासखान और हसन ने

---

*ईग--ये किसी समय उत्तरी स्तेपी से आनेवाले उन विजेताओं के वंशज थे जिन्होंने कारा-कूम के नखलिस्तानों के स्थायी हलवाही निवासियों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। **कूल**--इन, नखलिस्तानों के वे पुराने वासी थे जो विजेताओं में घुल-मिल गये थे।--सं

रोटी पर मांस के टुकड़े रखकर उन्हें खाना और लकड़ी के चमचों से शोरबा पीना शुरू किया। मुहम्मदखान ने खाना नहीं खाया।

फिर से चाय पी गयी। मिट्टी के बर्त्तन में जो कुछ बच गया, इल्यासखान ने वह जनानखाने में भेज दिया। ऐसा इसलिए नहीं किया गया कि इल्यासखान के घर में शुर्पा की कमी थी, बल्कि इसलिए कि पुराने कानूनों के मुताबिक ऐसा ही होना चाहिए था।

हाँ, अब काम-काज की बात शुरू की जा सकती थी। हसन ने घुमा-फिराकर बात कहनी आरम्भ की। उसने अपने परिवार की चर्चा की। यह कहा कि अल्लाह ने उसे दो-तीन बीवियाँ पाने की सामर्थ्य नहीं दी, सिर्फ एक ही बीवी हासिल कर पाया। पर वह उसी से सुखी है। उसने दो बेटे जने हैं और सिर्फ एक बेटी। मुसलमान के लिए दो बेटे तो कुछ अधिक नहीं होते, पर खैर इसके लिए भी अल्लाह का शुक्र है। हर बीज अपना फल देता है। यहाँ तक कि रेगिस्तान की कंटीली झाड़ी भी अपने बीज बिखराया करती है।

बहुत देर तक हसन अपनी बात कहता रहा। इल्यासखान बड़े सब्र से उसकी बात सुनता रहा। वह जानता है कि हसन किसलिये उसके पास आया है। मुंशी कूर्त इल्यासखान को न केवल उसके काम-काज के बारे में ही, बल्कि गाँव के हर निवासी के सम्बन्ध में भी पूरी खबरें देता रहता है।

सभी तरह के शिष्टाचार पूरे हो चुके थे। अब मतलब की बात कही जा सकती थी। हसन ने कहा कि अब बड़े बेटे की

शादी करने का वक्त आ गया है। इतना ही नहीं कि वह बीस की उम्र पार कर चुका है, बल्कि यह भी कि परिवार को पानी की बेहद जरूरत है। इज्जतदार इल्यासखान को तो मालूम ही है कि पुराने वक्तों के मुकाबले में पानी का कोटा आधा रह गया है। वह तो सब्जियों के बगीचे और अंगूरों की दसेक बेलों के लिए ही मुश्किल से काफी होता है। गेहूँ की तो खैर बात ही नहीं की जा सकती--खरीदना पड़ता है। हसन का परिवार भी तो कुछ छोटा नहीं है। गाँव के अधिक समृद्ध लोगों ने बेटों का जन्म होते ही उनकी शादी कर ली और उसी समय से विवाहित व्यक्ति के लिए मिलनेवाला पानी का कोटा--सू--पाने लगे। किन्तु हसन के पास बेटों की पैदाइश के बाद उनकी बीवियाँ खरीदने के लिए रकम नहीं थी। अगर पानी की कीमत दुगुनी हो गयी थी तो परिवार में अपने साथ पानी का अतिरिक्त भाग लानेवाली बीवी का मूल्य भी दुगुना हो गया था...

पर अब तो कोई चारा ही नहीं रहा था। हसन कोई भूखा-नंगा तो नहीं था। उसने और उसकी बुढ़िया माँ अन्नागुल ने मिलकर एक सौ बीस रूबल जुटा लिये थे और उनके पास कोई दसेक भेड़ें भी थीं। अगर डेढ़ सौ रूबल और मिल जायें तो ढंग की लड़की खरीदी जा सकती है। जाहिर है कि इस रकम से किसी अमीरजादे की बेटी खरीदना तो मुमकिन नहीं, पर उसे इसकी जरूरत भी तो नहीं है।

इल्यासखान को पूरी तरह मालूम है कि सीधे मन का हसन किस गाँव और किस घर से अपने बेटे के लिए बीवी

खरीदना चाहता है, पर वह चुप्पी साधे हुए किसी गहरी सोच में डूबा रहा। हसन सलीके का आदमी है। वह उपेक्षा भाव दिखाता हुआ उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा।

आखिर इल्यासखान ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा--

''देखो हसन, बात यह है कि किसी दूसरे आदमी को तो शायद मैं यह रकम न भी देता। पर तुम्हें मैं बहुत अच्छी तरह से जानता और मानता हूँ। तुम एतबार के लायक आदमी हो। मैं तुम्हें यह रकम दे सकता हूँ और यह दुआ करता हूँ कि अल्लाह तुम्हें तुम्हारे नेक इरादे पूरे करने में मदद दे।''

इल्यासखान ने कूर्त को हाथ से इशारा किया और वह दूसरे कमरे से रकम लाने के लिए चला गया। उसके लौटने तक सभी खामोश रहे। मालिक ने कूर्त से रकम लेकर हसन को दे दी। हसन ने बड़े तपाक से दोनों हाथ बढ़ाकर हरे-हरे कागज ले लिये। उसने उन्हें रूमाल में लपेटकर खास-खास मौकों पर पहने जानेवाले अपने झोलदार लबादे के अन्दर छिपा लिया।

''मेरी शर्तें बहुत मामूली हैं,'' इल्यासखान ने अपनी बात जारी रखी। ''यह रकम उस पानी की कीमत होगी जो तुम्हें तुम्हारे बेटे की बीवी के नाम पर मिलेगा। तो यह समझ लो कि तुमने वह पानी मुझे बेच दिया।''

''पर आयत के मुताबिक तो अल्लाह का दिया हुआ पानी बेचना गुनाह है,'' हसन ने परेशान होते हुए कहा। पर वह उसी क्षण सम्भला और उसने सिर झुका लिया। वह शर्म

से जमीन में गड़ा जा रहा था। वह तो यह भूल ही गया था कि पिछले पाँच सालों में इल्यासखान ने इसी तरह से गाँववालों का आधा पानी खरीद लिया है। कुछ सोचे-विचारे बिना, अनजाने ही उसने मालिक का उसके घर में ही अपमान कर दिया था।

इल्यासखान ने हसन के मन की बात भाँप ली। उसने हसन का मन बढ़ाते हुए कन्धा थपथपाया।

''आयत के उस पुराने उसूल को अभी तक सही तौर पर नहीं समझा गया,'' इल्यासखान ने प्यार से कहा।

हसन गहरी सोच में डूब गया। पानी के उस कोटे के बिना उसे परिवार बढ़ाकर क्या लाभ होगा जिस पर उन्होंने इतनी उम्मीदें लगायी हुई थीं? पर इल्यासखान ने उसे तसल्ली दी--

''मैं तुम्हें अपनी जमीन और पानी इस्तेमाल के लिए दे दूँगा। मैं जो कहूँगा, तुम वहाँ वही बोवोगे और जितनी फसल होगी, उसमें से आधी तुम मुझे दे दोगे। पाँच बरस तक काम करने के बाद कुछ रकम जुड़ जायेगी और तब तुम फालतू पानी का कोटा खरीद लेना। अल्लाह ने भी तो एक ही दिन में सारी दुनिया नहीं बना डाली थी...''

इल्यासखान ने कोने में दुबके हुए लड़के को देर तक आँखों ही आँखों में जाँचा-परखा और फिर कहा--

''कितनी उम्र है इसकी?''

''दस साल, बड़े मियाँ हो गये हैं,'' बाप ने जवाब दिया!

''तो ठीक है, इसे भी भेज दो मेरे चरवाहों के साथ काम

करने के लिए। हर साल मेरे रेवड़ में तुम्हारी तीन भेड़ें बढ़ती जायेंगी। वहीं इस जवान की शादी कर देंगे..."

आकाश सफेद-सफेद था और रेत इतनी गर्म थी कि कुत्ता भी उस पर लोटने की भूल नहीं कर सकता था। कुत्ते की चौकोर थूथनी, कटे हुए कान, पूँछ और ऐसा मोटा समूर होता है कि बहुत ही तेज दाँतोंवाले भेड़िये के दाँत भी उसकी चमड़ी में नहीं गड़ पाते। भेड़िये ऐसा करने की कोशिश भी नहीं करते। भेड़िये का पूरे का पूरा सिर ही गड़रियों के कुत्ते की भयानक थूथनी में समा सकता है। शायद ही कोई भेड़िया ऐसे कुत्ते के सामने डटने की हिम्मत कर सकता है।

कुत्तों को किसी अजनबी को देख पाने के लिए रेत के टीलों पर चढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। उन्हें तो इसके बिना ही कई कोस की दूरी से इसका पता चल जाता है। रेगिस्तान में तो सभी ओर सूखकर झनझनाती हुई कँटीली झाड़ियों और भेड़ों की मेंगनों की गंध बसी रहती है। किसी दूसरी गंध की अनुभूति होने पर कुत्ते दबी-दबी आवाज में भौंकने लगते हैं।

रेगिस्तान में भेड़ों का बहुत ही बड़ा रेवड़ फैला हुआ था। ऐसा सोचा जा सकता है कि जलती धूल और सूखी हुई झाडियोंवाले रेगिस्तान में भेड़ों को खाने के लिए क्या मिल सकता है? पर पतझर आते-आते वे ऐसी मोटी-ताजी हो जाती हैं कि उनके लिए हिलना-जुलना मुश्किल हो जाता है।

रेत के टीले पर एक लम्बा डण्डा जमीन में गड़ा हुआ है। उस पर एक पुराना नमदा लटक रहा है। उसकी छाया में एक

अन्य नमदे पर बैठा हुआ बूढ़ा अल्लायार चाय पी रहा है। वह रुई भरा हुआ मोटा चोघा और मोटी टोपी पहने है जो रेगिस्तान की तन झुलसती लू से उसकी रक्षा करती है। कभी तो वह धूप की जरा भी परवाह न करके सुथनी पहने हुए चारी की भाँति ही भागा-फिरा करता था। तब उसका सँवलाया हुआ फुर्तीला शरीर था। वह छोकरा ही था जब इल्यासखान के दादा ने उसे खरीदकर रेगिस्तान में भेज दिया था। वह तभी से रेगिस्तान में है...जब उसकी उम्र कोई चालीस के करीब पहुँची तो इल्यासखान के बाप ने उसे बीवी खरीद दी--कानी, चेचकरू और ऐसी सुस्सैल कि खुदा बचाये। जाहिर है कि मालिक ने सस्ते दामों पिण्ड छुड़ाने की कोशिश की थी। वह दो साल बाद चल बसी। उसके बाद अल्लायार चालीस वर्ष तक और जी चुका था, पर फिर कभी उसने मालिक से नयी बीवी खरीद देने के लिए नहीं कहा।

छोकरा चारी भागकर बूढ़े के पास आया और उससे पड़ोसवाले रेवड़ तक जाने के लिए घोड़ा देने की इजाजत माँगी...पतली-पतली टाँगोंवाला मुश्की घोड़ा हवा को चुनौती देता था। घोड़े की सवारी करता हुआ चारी अपने को पुरानी तुर्कमानी लोक-कथा के नायक केमिर-केर या डाकुओं के अजेय बहादुर सरदार की भाँति अनुभव कर रहा था।

ओह! ये किस्से-कहानियाँ!...हर शाम को जब सूरज का बढ़ा-सा लाल गोला पृथ्वी को छूता है, उस समय रेगिस्तान के ऊपर ऊँचे-ऊँचे स्तम्भ-से दिखायी देने लगते हैं। दूर से ऐसा प्रतीत होता है मानो अदृश्य आग ने सारे क्षितिज को अपनी

लपेट में ले लिया है। किन्तु यह धुआँ नहीं है। यह तो आकाश की ऊँचाई और गतिहीन हवा में कारा-कूम की ठहरी-ठिठुरी हुई वह धूल है जिसे हजारों भेड़ों के तेज खुरों ने उड़ाया है। जोर से मिमियाती भेड़ों की दीवार-सी पानी की ओर बढ़ती है। दो कदम की दूरी तक भी कुछ दिखायी नहीं देता। गले, नाक और कानों में खुश्क धूल की तहें जम जाती हैं।

और यह है कुआँ। इसकी गहराई ऊँट के आने-जाने के संकरे मार्ग से मापी जा सकती है। इस मार्ग पर रस्सी से बन्धा हुआ, दुबला-पतला और भद्दा-सा ऊँट सुबह से शाम तक आता-जाता रहता है। कोई उसे हाँकता नहीं, कोई उसकी निगरानी नहीं करता। वह देखिये वह कुएँ के गोल घेरे से बालू की ओर जा रहा है--बीस कदम, तीस कदम, एक सौ कदम एक सौ पचास कदम। वह तब तक चलता जायेगा जब तक कि चमड़े की फूली हुई मश्क बाहर नहीं आ जाती। लकड़ी की नाली में निर्मल जल छल-छल करता हुआ बहने लगता है। ऊँट को मालूम है कि इसमें कितना समय लगेगा। लीजिये, अब वह वापिस जा रहा है। रस्सी रूपी पतला-सा साँप धीरे-धीरे कुएँ में गायब हो जाता है। लगातार ऐसा ही होता रहता है--ऊँट आता-जाता रहता है...

रेगिस्तान की खुश्क हवा में से सितारों की रोशनी बड़ी आसानी से छनती रहती है। इसीलिए यहाँ का आकाश अधिक श्यामल और सितारे अधिक उज्ज्वल तथा निकट प्रतीत होते हैं। अन्य चरवाहों के साथ-साथ छोकरा चारी भी गहरी रात तक दुष्ट बादशाहों, गरीब प्रेमियों, धड़कते दिलों

और अपनी समझ-बूझ के कारण शाश्वत रूप से जवान रहनेवाले निर्धन कवि के बारे में अल्लायार की कहानियाँ सुनता रहता।

जाड़े में ठंडी नम हवा धुन्ध को धकियाती हुई नीचे की ओर लाती है। धुन्ध पुराने-जर्जर चोगों में घुस जाती है, कीचड़ से गीले हुए जूतों और उन्हें पहने हुए नंगे नीले पैरों को छूती है। दिल को चीरती हुई तेज और निर्मम-निर्दयी हवा से बचने के लिए आदमी छिपे तो कहाँ!

चारी पाँच वर्षों से मालिक की भेड़ें चरा रहा था। वह लम्बा हो गया था, लगभग वयस्क लगता था। उसकी आँखों से खुशी भरी और चंचल चमक गायब हो चुकी थी। काली रेत बचपन से ही चुप और गुमसुम रहना सिखा देती है।

परिवार की हालत खस्ता हो गयी थी। चारी कल ही कुओं से लौटा है। वह अपने घर को पहचान ही नहीं पाया था। लगातार तीन वर्ष से फसल नहीं हुई थी। मालिक ने पिछले कुछ समय से अपने पट्टेदारों को केवल कपास बोने के लिए विवश किया था जिसे कीड़े-मकोड़ों ने पूरी तरह खा डाला था। इसके बाद भेड़ों में महामारी फैल गयी। पिछले वर्ष बहुत बड़े कालीन को पूरा करने के बाद बूढ़ी अन्नागुल शान्ति से अल्लाह के घर चली गयी। अब आमदनी का कोई रास्ता नहीं रह गया था। पर सब से बुरी स्थिति तो पानी की थी। हर घर के पीछे पानी का कोटा अधिकाधिक कम होता जा रहा था। जब से रूसी आये थे, आपस की लड़ाइयाँ खत्म हो

गयी थीं। अधिक लोग खेती-बारी करने लगे थे किन्तु कुल पानी का कोटा नहीं बढ़ाया गया था। अधिकारियों ने पड़ोस के गाँवों के कुछ लोगों को दूसरी जगहों पर बसा दिया था...

हसन अपने छोटे बेटे चारी को साथ लेकर एक बार फिर इल्यासखान के पास गया। पिछली बार की तरह इस बार भी सभी कुछ दोहराया गया। मालिक ने पहले जैसा ही आदर-सत्कार किया, वैसी ही नम्रता से पेश आया। इन वर्षों के दौरान उसमें जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ था। उसकी आँखों में वही खुशमिजाजी झलक रही थी। पर दूसरी ओर हसन में बहुत तब्दीली हो गयी थी। उसके कन्धे झुक गये थे, दाढ़ी विरली और अधिक सफेद हो गयी थी। फिर से पुराने रस्म-रिवाजों और उन भले वक्तों की चर्चा की गयी जब जिन्दगी कहीं अधिक आसान थी। फिर से शुर्पा खाया गया। किन्तु चारी ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि उसके पिता जब मांस हाथ में लेते हैं तो उनके हाथ काँपते हैं और उनकी आँखों में भुखनीयती झलक रही है।

मालिक का भी इस तरफ ध्यान गया। जब काम-काज की बात शुरू हुई तो उसने हसन के सामने अपनी स्थिति सुधारने का एक बहुत ही सीधा-सादा प्रस्ताव रखा। उसने कहा कि तुम मुझे पानी के अपने आखिरी हिस्से का अधिकार बेच दो। मैं तुम्हें भूखों तो मरने नहीं दूँगा। इल्यासखान के कारोबार में हसन के सारे परिवार को काम मिल जायेगा।

हसन ने सिर झुकाये हुए इस भयानक प्रस्ताव पर देर तक विचार किया। पर इल्यासखान ने बड़ी आसानी से उसकी

मानसिक दुविधा को दूर कर दिया। उसने कहा कि जब तुम्हारी स्थिति सुधर जाये, तब तुम आसानी से पानी का कोटा वापिस खरीद लेना...

इसी समय मुहम्मदखान दिखायी दिया और अपने पिता के आखिरी शब्द उसके कानों में पड़े। वह ठठाकर जोर से हँसा और किसी से दुआ-सलाम किये बिना ही वापिस बाहर चला गया। खान का बड़ा बेटा अब हर समय नशे में धुत्त रहता था...

एक हफ्ते बाद चारी फिर से रेगिस्तान में चला गया। गर्मियों में भट्ठी की तरह तपती हुई रेगिस्तानी हवा उसका तन झुलसती और भेड़ों द्वारा उड़ायी गयी धूल के बादल उसे प्रकाश से वंचित कर देते। जाड़े में वह कड़ाके की सर्दी और नमी से ठिठुरता रहता। पर अब उसके लिए यह सब कुछ सहन करना आसान हो गया था। उसे एक मित्र मिल गया था--साहसी और सहृदय मित्र--तागान। वह बुजुर्ग अल्लायार के भाई का पोता था। तागान और चारी के बीच बहुत समानता थी। फिर उनमें भला गहरी क्यों न छनने लगती? वे दोनों ही तो साथ-साथ भेड़ें चराते थे, इकट्ठे बैठकर रोटी खाते थे और बुजुर्ग चरवाहे की कहानियाँ सुनते थे।

किसी अन्य व्यक्ति के लिए ये कहानियाँ हो सकती थीं पर उनके लिए तो वे स्वयं जीवन का जीता-जागता रूप थीं, बहुत ही सुन्दर और विराट रूप। वे अपनी कल्पना में खलीफों के जमूर्द जड़े जगमगाते हुए महल देखते और शाहों की बेटियों तथा अमीरों की प्रेयसियों को मनमोहक ढंग से मुस्कराते

हुए पाते। वे उस वक्त के सपने देखते जब वे बड़े हो जायेंगे और वफादार डाकू दोस्तों का गिरोह बनाकर और हवा से भी तेज दौड़नेवाले घोड़ों पर सवार होकर अलामानी धावे* बोलेंगे। उनके सामने खुलीफों के खुजाने उभरते वे शाहों की बेटियों को झेंपते, शर्माते-सकुचाते और मन्द मुस्कराते हुए अनुभव करते। वे कल्पना करते कि सर्वथा अजेय और गर्व से सिर ऊँचा किये हुए अपने में लौटेंगे बहुत ही लम्बा कारवां और लूटा-खसोटा हुआ ढेरों माल-मता लिए हुए। सभी उनकी बहादुरी और दिलेरी का लोहा मानेंगे और बड़ी इज्जत से सिर झुकायेंगे। खुद इल्यासखान भी ऐसा ही करेगा...

हसन पानी का अपना हिस्सा फिर कभी हासिल न कर पाया। दो साल तक तो उसने जैसे-तैसे गुजर-बसर की। किन्तु तीसरे साल तो लुटिया बिल्कुल ही डूब गयी।

दुर्भाग्य की बिजली गिरने के एक सप्ताह पहले गौएँ और भेड़ें बहुत बेचैनी जाहिर करने लगीं। कुत्ते अपने झबरीले सिरों को दक्षिण-पूर्व की और घुमाकर दर्द-भरी आवाज में रोते रहते। लोग भी बहुत घबराहट अनुभव करते उस दिशा में देखा करते। पहाड़ के दामन में बसे हुए गाँवों में सभी तरह की भयानक अफवाहें फैलने लगीं।

तो वह आँधी अप्रत्याशित ही आयी, सो भी दिन-दहाड़े। बड़े ही भयानक काले बादल ने सूरज पर भयानक काला पर्दा

*अलामानी धावे--पड़ोस के गाँवों से धन-दौलत लूटने और औरतें उठा ले जाने के लिए बोले जानेवाले धावे। --सं.

डाल दिया। गहरा अँधेरा छा गया, दहशत महसूस होने लगी। इसी क्षण खेतों, बागों और बगीचों पर हजारों टन नर्म-नर्म और लसल-सी हरियाली छा गयी।

हसन अपने बड़े बेटे, बीवी, बहू, बेटी और पोतों के साथ कपास के खेत में पसीना बहा रहा था। वे सूखी घास को जला रहे थे, नालियों में पानी छोड़ रहे थे। किन्तु निर्दयी और क्रुद्ध दल-बादल पाँच ही मिनट में सभी जगह पर छा गया। अलाव सूँ-सूँ कर के बुझ गये। सभी कुछ हड़प जानेवाली टिड्डियाँ हरी-भरी जोतों पर छा गयी थीं। देखते ही देखते शाखायें निपत्ती हो गयीं। लम्बी-लम्बी हरी भरी शाखाओं की जगह केवल डंडियाँ ही बाकी रह गयीं और सो भी ऐसी डंडियाँ जिनसे चूल्हा भी न जलाया जा सके।

अब चूल्हा जलाने, की जरूरत ही नहीं होगी। उपेक्षित सिंचाई-नालियों में उगने और दाँतों में अटकनेवाली घास को बारीक-बारीक काटकर हसन की बीवी अब किस चीज में मिलायेगी और कैसे रोटियाँ पकायेगी? हसन की वफादार और मेहनती बीवी, नूरराजल, पिछले दो साल से ऐसा ही कर रही थी।

पर इस बार भी वे मुसीबत में नहीं रहे, इल्यासखान ने मदद कर दी। उसने कुछ रकम भी दे दी और आटा भी दिया। पर कानून तो कानून ठहरा। ऐसे ही तो अक्लमन्द बुजुर्गों ने हजारों वर्ष पहले ऐसे कानून नहीं बनाये थे। समय पर ऋण न लौटानेवाले ऋणी और उसके सारे परिवार को ऋणदाता के लिए मुफ्त काम करना पड़ता है। इस तरह की

दासता उस समय तक बनी रहती है जब तक सूद समेत सारी रकम अदा नहीं हो जाती...अगले वसन्त में हसन के सारे परिवार ने मालिक के खेत मैं कपास बोयी। अब आधी नहीं, सारी फसल ही इल्यासखान को दी गयी। फसल अच्छी रही और हसन के परिवार ने जाड़े, वसन्त और गर्मी की लगभग सारी रकम सूद-दर-सूद चुका दी।

हसन अपने बेटे चारी को बिल्कुल ही नहीं पहचान पाया। वह बेहद बदल गया था, एकदम जवान हो गया था। अब वह हृष्ट-पुष्ट और गठा हुआ जवाँमर्द था। उसकी आँखें सुन्दर और गम्भीर थीं...मरुस्थल से लौटनेवाला चारी भी अपने पिता को नहीं पहचान पाया। उसकी कमर झुक गयी थी और वह पके बालोंवाला बूढ़ा लगता था। वह खाँसता और हाँफता हुआ कमर और टाँगों में दर्द की शिकायत करता रहता था। सिंचाई के कारण दलदल जैसे हुए खेतों में उसे बहुत अधिक काम करना पड़ता था।

परिवार के लिए अब एक ही आशा बाकी रह गयी थी। वह थी हसन की बेटी--रूपरानी बीबीताज अपने जीवन की पन्द्रह बहारें देख चुकी थी। ऐसी लड़की के बदले में खासी रकम मिल सकती थी और पिता के मतानुसार इससे परिवार की हालत में सुधार हो सकता था। अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में रूपवती बीबीताज के रूप की बड़ी चर्चा थी। बुजुर्ग हसन के पास ऐसे प्रस्ताव लेकर लोग दो बार आ भी चुके थे, पर इस डर से कि बेटी कहीं सस्ते दामों ही न चली जाये, वह बात

टाल गया था। और फिर हर किसी परिवार को तो इस कुल की बेटी बेची भी नहीं जा सकती थी!

आखिर हसन राजी हो गया। पड़ोस के गाँव में हसन का एक दूर का रिश्तेदार, ओवेजकुर्बान, रहता था। वह समृद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। उसने अपने इकलौते बेटे हाली की शादी करने का निर्णय किया। वह कई बार बातचीत करने के लिए आया और इस बातचीत में हसन की बीवी--नूरगजल ने भी हिस्सा लिया। ओवेजकुर्बान जब ऐसे ही एक दिन फिर आया तो बीबीताज को बुलाया गया और उसके गले में चाँदी के पतले तार की हँसली पहना दी गयी। इस तरह उसकी सगाई कर दी गयी और इस दिन के बाद उसका मालिक या तो सिर्फ हाली था या फिर अल्लाह। अगर वह इस बंधन को तोड़ेगी तो उसकी तकदीर फूट जायेगी। अगर कोई मर्द ऐसा करेगा तो समझ लो कि उसकी भी शामत आ गयी है!

तो किस्सा यों हुआ कि एक दिन बीबीताज नयी जवार के दानों से भरी हुई परात सिर पर रखे खेत की पगडंडी पर चली जा रही थी। उसे अपने पीछे घोड़े की सधी हुई टाप सुनाई दी। औरत को मर्द के आगे-आगे कभी नहीं चलना चाहिए,ख चाहे उनके बीच एक सौ कदमों का फासला भी क्यों न हो! लड़की भागकर पगडंडी से दूर हो गयी और उसने रूमाल का कोना मुँह में दबा लिया।

पर घुड़सवार करीब से ही गुजर नहीं गया। उसने भी घोड़े को लड़की की ओर मोड़ दिया और करीब आने पर वह

बीबीताज की ओर झुक गया। उसके मुँह से वोद्का की बदबू आ रही थी। लड़की ने केवल घड़ी भर के लिए अपनी लम्बी-लम्बी पलकें ऊपर उठायी और उसे मुहम्मदखान की गंदली और लाल लाल डोरोंवाली आँखों की झलक मिली। खान के बेटे ने किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं की। उसने घोड़े को चाबुक लगाया और आगे चला गया।

कोई दो हफ्ते बाद इल्यासखान का छोटा बेटा शमुर्दखान छुट्टी पर घर आया। बाप ने इस मौके को खूब धूमधाम से मनाया। चुस्त और आज्ञाकारी शमुर्दखान नौउम्र होते हुए भी गार्डों का लेफ्टीनेन्ट बन चुका था और जार के व्यक्तिगत गार्डों में से एक था। रोमानोव परिवार की पुरानी परम्परा के अनुसार जार केवल राजकुमारों, अमीरों तथा खानों के बेटों को ही अपने निकट रहने देते थे।

बुजुर्ग खान ने बहुत बड़ी दावत की। जब तक मुहम्मदखान के शहरी दोस्त--कुछ जवान फौजी अफसर, खुद थानेदार साहब और इलाके के सब से अधिक धनी सौदागर के तीन बेटे नहीं आये, तब तक तो दावत में खामोशी और सलीका रहा। पर उसके बाद दूसरा ही रंग जमा। कमरे मैं वोद्का की बोतलों से भरी एक के बाद एक पेटी आती रही और खाली बोतलों को खिड़की से बाहर फेंका जाता रहा।

शाम को वोद्का पी-पीकर वहशी हुए मुहम्मदखान ने यह एलान किया कि हम लोगों के लिए औरतें नाकाफी हैं और इस कारण मुझे फौरन नगर जाना होगा।

"क्या तुम्हारे जाल में यहाँ एक भी चिड़िया नहीं है? मुझे यकीन नहीं होता, यकीन नहीं होता!" मोटे-ताजे और आत्मतुष्ट थानेदार ने महम्मदखान की ओर उँगली से इशारा करते हुए कहा। मुहम्मदखान को अचानक ही कुछ याद आ गया और वह नशे में झूमता-झामता हुआ दरवाजे की ओर चल दिया। उसका इशारा पाकर खान का मुंशी कूर्त भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

गाँव के लगभग सभी लोग सो चुके थे। किसी-किसी घर में केवल नारियाँ ही घरेलू काम-काज निपटा रही थीं। बीबीताज भी नहीं सोयी थी। मिट्टी से पुते हुए घर के एक कोने में टूटे मुँहवाला बड़ा घड़ा रखा था, जिसमें पानी की बाल्टियाँ समा जाती थीं। दिन के समय पर्वत और हवा गर्मी से जलने लगते हैं। घनी छाया तक में, भी साँस कठिन हो जाता है। नम कोने में रखे हुए घड़े में पानी और निर्मल रहता है। पर इस घड़े को लैब शाम के समय ही भर देना चाहिए। इसलिए इससे कुछ छोटा घड़ा लेकर बीबीताज चश्मे की ओर चल दी।

हसन का परिवार गाँव के छोर पर रहता था। कभी-कभी फेंके गये बचे-खुचे टुकड़ों के लिए गीदड़ इस घर के बिल्कुल करीब ही एक-दूसरे पर झपटते नजर आते थे। इस परिवार की बची-बचायी अंगूरों की छः बेलों को लाँघकर लड़की चश्मे के निकट उगे हुए शहतूत के पेड़ों की छाया में जा रही थी।

झाड़ियाँ धीरे-धीरे सरसरा रही थीं। बीबीताज पानी की ओर झुकी। ठंडे पानी की धार से टकराने पर घड़े ने गड़गड़ाहट

पैदा की। यह गड़गड़ धीमी होती हुई अन्त में बिल्कुल खत्म हो गयी। लड़की ने भरा हुआ घड़ा फुर्ती से उठा लिया। इसी समय मजबूत हाथों ने उसे दबोच लिया। वह चिल्लायी। किन्तु बड़े और मजबूत हाथ ने रूमाल से उसका मुँह, नाक और आँखें बाँध दीं। उसे उठाकर घोड़े के जीन पर लिटा दिया गया। दम घुटने के कारण वह बेहोश हो गयी।

भोर पूर्व की ठंड से बीबीताज की आँख खुली। उसे अपने इर्दगिर्द अन्धकार में लिपटी हुई बड़ी-बड़ी मीनारें दिखायी दी। वह उठी, तार-तार हुए फ्रॉक से अपने तन को जैसे-तैसे ढकती हुई पुरानी गढ़ी से बाहर निकली और धीरे-धीरे घर की ओर चल दी। वह न तो मिट्टी से पुते हुए घर में गयी, न पहियेदार घर में ही। वह सूखी कंटीली झाड़ियों और बाड़े की दीवार के बीच की जगह में छिपकर बैठ रही और सूर्य की पहली किरणों की प्रतीक्षा करने लगी। सूर्योदय हुआ और उसकी किरणें रात भर में ठण्डी हो गयी धरती को प्यार से गर्माने लगीं। वृक्ष, घास, भेड़ें और कुत्ते चकाचौंध करनेवाले प्रकाश में नहा गये। सूर्य तो केवल छोटी-सी लड़की बीबीताज के लिए ही उदय नहीं हुआ था...

झुकी हुई कमरवाला उसका बाप बाड़े में आया। वह गुमसुम था, कठोर था। उसने कंटीली झाड़ियों के नजदीक पड़ी हुई कुदाल उठा ली, पर बीबीताज को नहीं देखा...उसे मालूम है कि वह यहीं है--वह, जो उसकी बेटी कहलाती थी और जिसका लड़कियों जैसा नाम भी था। किन्तु उसे पिछली रात घटनेवाली घटना भी ज्ञात है। अब उसकी बेटी नहीं रही।

इस दुनिया में अब न तो उसकी और नूरगजल की कोई बेटी ही है और न चारी तथा बेर्दी की बहन ही। काले मरुस्थल के कानून बड़े कठोर हैं। घुटनों के बीच सिर छिपाये और उसे दोनों हाथों से ढके हुए बीबीताज भी यह बात समझती थी। इसीलिए वह किसी से कोई शिकवा-शिकायत न करती हुई चुपचाप, अकेली ही कराह रही थी...

गाँव में होनेवाली बातचीत में लोग "संगसार दाश" रस्म की ही चर्चा करते थे। लड़की दोषी है या निर्दोष, इस बात का कोई महत्व नहीं। सगाई के बन्धन को तोड़ा गया है, इसलिए धरती और आकाश को उसकी ओर से मुँह मोड़ लेना चाहिए।

दिन ढले इल्यासखान अपनी बड़ी हवेली से बाहर निकला। धीरे-धीरे और रोबदार ढंग से चलता हुआ वह गाँव में से गुजर रहा था, हर किसी से बड़े अदब से दुआ-सलाम कर रहा था। नारियों की जिज्ञासापूर्ण नजरें उसका पीछा कर रही थीं। बुजुर्ग खान धूल में से भारी-बोझिल कदम उठाता हुआ अपने ऋणी और खेत-मजदूर हसन के घर की ओर गया।

वह सिर झुकाये हुए पहियेदार घर में दाखिल हुआ। घर के मालिक ने उसे नमदे पर बैठने का संकेत किया। इसके बाद हसन बाहर आया और उसने बड़े बेटे से कुछ कहा। कुछ मिनट बाद इस परिवार में बच रही आखिरी भेड़ मृत्युपूर्व की यातना से झटपटाने लगी। मेहमान के सामने भुने माँस से भरी हुई तश्तरी पेश की गयी, ताजा ताजा बनायी गयी रोटियों के दो-दो टुकड़े करके सामने रखे गये। घर के मालिक ने पहला टुकड़ा खाया और बस। मेहमान ने भी दो-तीन टुकड़े

खाकर तश्तरी एक ओर को सरका दी।

इल्यासखान ने बातचीत का सिलसिला शुरू करने की कोशिश की, पर हसन चुप्पी साधे रहा। उसने तो बार बार मेहमान से खाने का ही आग्रह किया और इसके अलावा एक भी शब्द मुँह से नहीं निकाला। आखिर मन ही मन बहुत चिन्तित, किन्तु बाहरी तौर पर अपने को शान्त-स्थिर जाहिर करता हुआ इल्यासखान हसन के घर से बाहर चला गया...

बीबीताज तो मानो अब इस दुनिया में रहती ही नहीं थी। केवल रात को इधर-उधर फेंके हुए टुकड़ों को उसके हाथ जरूर बीन लेते थे ताकि पूर्वनिश्चित घटना के घटने तक उसकी नसों में रक्त-संचार होता रहे। हर रात को लम्बी दाढ़ीवाला लम्बा-तड़ंगा और कठोर बूढ़ा बाड़े में आता और उसके दिमाग को एक खास दिशा में मोड़ने की कोशिश करता। वह भयानक शब्द मुँह से निकालता और सिमटी-सिकुड़ी हुई लड़की उन्हें सुनती रहती। वह एक भयानक दिन के लिए अपने को तैयार कर रही थी।

आखिर वह दिन आया। सुबह-सुबह ही जब सब लोग खेतों में चले गये, उसने पहियेदार घरों के आसपास पड़े हुए पुराने चिथड़े और रुई के टुकड़े बटोरने शुरू किये। उसने इन्हें अपने सूखकर काँटा हुए, गन्दे और ठण्ड से नीले पड़ गये तन पर लपेट लिया। उसके बाल बुरी तरह उलझे-उलझाये हुए थे। उसने अपने होंठों को कसकर भींच रखा था।

पतले, हड़ीले हाथों ने बड़ी मुश्किल से ही टीन के बड़े

कनस्तर को सिर से ऊपर उठाया। घिनौनी पीली धारा उसके मुँह, कानों में घुसने लगी, उसकी आँखों को अन्धा और कानों को बहरा करने लगी। पर खैर यह तो थोड़ी ही देर की तकलीफ थी... वह लड़खड़ाती हुई उस टीले पर पहुँची जहाँ तन्दूर के कोयले एकत्रित थे। वहाँ उसने रुई के कुछ टुकड़े गिरा दिये...

गाँव के ऊपर आग की भयानक लपटें लपलपा उठीं। हवा दहाड़ती हुई नीले धुएँ के टुकड़ों को आकाश की ओर खदेड़ रही थी। लड़की की भयानक चीखों से पत्थर के कलेजे भी काँप उठे। उसकी चीखें खेतों के ऊपर गूँज रही थीं, गढ़ी की दीवारों से ऊपर उठ कर पहाड़ों को छूती हुई फिर से रेगिस्तान में फैल रही थीं। जीती-जागती लपट खेत में घूमती, नीचे गिरती और जला हुआ काला तन झुलसती...अगली रात को हसन का बड़ा बेटा बेर्दी घर से घायब हो गया। हाली भी, जिसके साथ बीबीताज का विवाह होना तय हुआ था, उस रात घर पर नहीं सोया।

एक दिन बाद इल्यासखान के पास उसके बड़े बेटे की लाश लाई गयी। लम्बी तुर्कमानी छुरी उसके दिल के आर-पार कर दी गयी थी। उसकी लाश स्टेशन के करीब ही मिली।

उसी रात को हसन का परिवार गाँव से गायब हो गया। जहाँ उसका पहियेदार घर खड़ा था, वहाँ केवल पुराने चिथड़े और रस्सी के टुकड़े ही पड़े रह गये। कोई नहीं जानता था कि हसन को ऊँट कहाँ से मिला पर उसके पैरों के निशान यह बता रहे थे कि वह रेगिस्तान की ओर गया है। लेफ्टीनेण्ट

शमुर्दखान के निर्देशन में कोई दसेक घुड़सवार इन्हीं निशानों की ओर तेजी से बढ़ चले।

चारी अपने घोड़े को अधिकाधिक तेज करता जाता था। उसका दिल किसी खतरे की पूर्वसूचना दे रहा था। घोड़ा उसे लिए हुए रेतीले टीले के पास पहुँचा, अचानक पीछे की ओर हटा और उसने परेशानी से अपने कान हिलाने शुरू किये। दायीं ओर से गोलियाँ चलने की आवाज और चीख सुनाई दी। घोड़ा हिनहिनाया और आगे चल दिया। कहीं निकट ही कोई दूसरा घोड़ा हिनहिनाया। यह घोड़ा रेतीले टीले के पीछे से तेजी से सामने आया और सरपट दौड़ता हुआ नाले की ओर बढ़ने लगा...

ओह, यह क्या है? सफेद सुन्दर घोड़े के पीछे-पीछे लम्बे पट्टे से बन्धी हुई इन्सानी लाश घिसटती चली आ रही थी। चारी ने सोच-विचार किये बिना ही अपने घोड़े को उसके पीछे दौड़ा दिया और झपटकर चरवाहे की उस्तरे जैसी तेज छुरी से पट्टे को काट डाला।

इस व्यक्ति के हाथ-पैर बँधे हुए थे। चारी ने चमड़े के फीते काटे और लाश को सीधा किया। उसके बूढ़े बाप हसन की फोड़ डाली गयी लहुलुहान आँखें नीले आकाश को ताकती दिखायी दीं।

चारी कुछ क्षण, कई घण्टे या दिन भर अपने पिता के शव के पास बैठा रहा, उसे इसका कुछ ज्ञान नहीं था। किसी ने उसके कन्धे को छुआ। वह चौंक कर सिहरा, उसने धीरे से

सिर घुमाया तो उसे सफेद घोड़े की थूथनी दिखायी दी जो अपने भयानक बोझ के पास लौट आया था। सफेद घोड़े के कान पर दराँती जैसा निशान बना हुआ था। चारी के घोड़े के कान पर भी ऐसा ही निशान था। बात यह है कि चरवाहों के घोड़े भी खानों के घोड़ों के झुण्डों में से होते हैं।

चारी ने पिता की लाश को स्तेपीवाले ऊँचे जीन पर लादा और धीरे-धीरे घोड़े के साथ-साथ चलने लगा। सफेद घोड़े के पैरों के निशानों का अनुकरण करते हुए वह एक सूखी झील पर पहुँचा। सूरज की रोशनी में आँखों को चौंधियानेवाली नमक की समतल तहें चमक रही थीं। सफेद नमक पर ही मरा हुआ ऊँट पड़ा था। करीब ही पहियेदार घर के टूटे हुए बाँस, बर्तनों और पुराने तथा काले पड़े हुए देग के टुकड़े जहाँ-तहाँ बिखरे हुए थे। निकट ही चारी के परिवार के सभी लोगों की लाशें पड़ी हुई थीं। बेर्दी की लाश पेटियों से कसी हुई थी, उसकी बीवी लगभग नंगी और खून से लथ-पथ थी दोनों बेटों की पीठ तोड़ डाली गयी थी और नूरगजल के सिर के दो टुकड़े कर दिये गये थे। रेगिस्तान के ऊपर ऊँचे आकाश में सफेद सिर और तीखे पंजोंवाला गिद्ध मंडरा रहा था...

नौजवान के सपने साकार हो गये थे। जवान चारी लूट-खसोट के अलामानी धावों के लिए जा रहा था। पचास तगड़े और मोटे-ताजे घोड़े रेगिस्तान में धूल उड़ा रहे थे...
उसे याद नहीं कि इस नमकवाली झील के किनारे उसने

कितने दिन और रातें बितायी। इल्यासखान के परिवार की सातवीं पीढ़ी तक खून का बदला लिया जायेगा। वरना चारी को इस धरती पर जीने, साँस लेने, आकाश को ताकने और पुरुष कहलाने का अधिकार नहीं होगा। काले मरुस्थल की परम्परा उससे अपने कुल के मात्र जीवित व्यक्ति से यह आशा रखती है कि वह शत्रु के वंश से खून का बदला खून की शक्ल में ले। इस घड़ी से वह उस समय तक न तो चैन से रोटी का टुकड़ा खायेगा, न पानी का घूँट ही पी सकेगा, जब तक कि इल्यासखान के वंश के आखिरी व्यक्ति को दूसरी दुनिया में नहीं पहुँचा देगा। इस वंश का आखिरी व्यक्ति था--शमुर्दखान...

इल्यासखान के रिश्तेदारों और दुमछल्लों ने चारी को फाँसने के लिए बड़ा जाल फैलाया। गाँव के सभी लोग यह समझते थे कि जब तक हसन का बेटा चारी जिन्दा है, तब तक खान के वंश का एक भी व्यक्ति चैन की नींद नहीं सो सकता।

चारी जब पहाड़ों में छिपा हुआ था तो उस पर दो बार गोली चलायी गयी। एकबार तो अपने परिवार के एक पुराने दोस्त के खेमे के करीब ही वह बाल बाल बचा। कुछ समय के लिए चारी को इन जगहों से दूर हो जाना पड़ा।

पड़ोस के क्षेत्र में चरवाहा चारी अलामानी धावामारों के गिरोह में शामिल हो गया। इस गिरोह ने रेगिस्तान में लम्बी यात्रा करते हुए उत्तर की ओर जाने का इरादा बनाया। और अब लम्बी कतार में फैले और सरपट दौड़ते हुए उनके घोड़े

काले मरुस्थल को लाँघ रहे थे।

वे एक, दो और तीन दिनों तक इसी तरह घोड़े दौड़ाते चले गये...बहुत ही बुरी तरह थके-हारे हुए घोड़े चलती-फिरती बालू में से बड़ी मुश्किल से ही अपने पैर निकाल पाते थे। जीनों के साथ बन्धी हुई मशकों में पानी खत्म हो चुका था और अब उन्हें रेत के प्रत्येक टीले के पीछे अन्तहीन जल की अनुभूति होती थी।

यह गिरोह गहन अन्धेरी रात में घोड़े दौड़ाता हुआ अपनी मंजिल पर जा पहुँचा। सूखे खेमे धू-धू कर जलने लगे। दिल को चीरती हुई आहे कराहें और चीखें सुनाई देने लगी। रंग-बिरंगी धारियोंवाले सन्दूकों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गये और उनमें से पर्व-त्योहारों के मौकों पर पहनने के लबादे जेवर और चांदी के कंगन निकाले जाने लगे और जार-जार रोती हुई औरतों को भी जीनों पर लादा जाने लगा... पुरुषों पर जरा भी तरस नहीं खाया गया। यहाँ जितनी ज्यादा लाशें होंगी, गिरोह का पीछा करनेवाले घुड़सवारों की संख्या उतनी ही कम हो जायेगी। सरसराती हुई तलवार के दायें-बायें वार हो रहे थे।

घायल सिरवाला अधनंगा देहकान पड़ा था और उसके करीब ही उसके दो बेटों की लाशें पड़ी थीं। जलते हुए खेमों के करीब से एक घुड़सवार अपना घोड़ा उड़ाये लिये जा रहा था और उसके पीछे-पीछे फन्दे में एक बूढ़ा घिसट रहा था जिसका दम घुटा जा रहा था।

नहीं, चारी जब कुएँ के पास बैठकर बुजुर्ग अल्लायार से

कहानियाँ सुना करता था तो बहादुर अलामानी धावामारों का कोई दूसरा ही चित्र उसके सामने उभरा करता था! वह हाथों से चेहरे को ढाँपे और राह की परवाह किये बिना ही रात के अँधेरे में इस अग्नि-काण्ड, खून-खराबी और इस मनहूसियत से अपने घोड़े को दूर भगाये लिये जा रहा था। वह घोड़े को तेजी से दौड़ाता चला जा रहा था, मगर मंजिल से बेखबर। उसे तो बस एक ही धुन सवार थी कि जैसे भी हो सके जल्दी से जल्दी इस भयानक रात से दूर हो जाये...

तीसरा अध्याय

चटक लाल रंग का पतलून पहने हुए बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला और खुशमिजाज सर्जन देमीदको अपनी फौजी कमीज की अगल-बगलवाली जेब मैं दो गोलियाँ डाले हुए था जो उसने चारी हसनोव के शरीर से निकाली थीं। वह अपनी सभी जेबों में गोलियाँ डाले रहता था। घायल जब स्वस्थ होकर उपचार-केन्द्र से जाने लगता तो वह उसे यादगार के लिए धातु के छोटे-छोटे टुकड़े देता जो अक्सर बिर्मिंघम के कारखानों में ढाले गये होते थे।

किन्तु खास दस्ते के सैनिक हसनोव को उपचार-केन्द्र शीघ्र ही छुट्टी नहीं मिलनेवाली थी। गोली उसके दिल से केवल एक इंच की दूरी पर से गुजरी थी। केवल आज ही उसे होश आया था।

नर्स रेलगाड़ी के अस्पताली डिब्बे के दरवाजे पर अपने नंगे पैर नीचे लटकाये हुए बैठी थी। जाड़े के दौरान उसके पैर गोरे-चिट्टे हो गये थे। वह किसी सोच में डूबी हुई वसन्त के सनकी आकाश को ताक रही थी। अचानक उसने अनुभव किया कि कोई उसे टकटकी बाँध कर देख रहा है। बासमाचों पर बोले गये अन्तिम धावे में सब से अधिक बुरी तरह घायल

हुआ केवल एक ही सैनिक इस उपचार-केन्द्र में बाकी रह गया था। उसने घूमकर देखा तो पाया कि वह गम्भीर नजर से उसकी ओर अपलक-एकटक देख रहा है। अप्रत्याशित ही ऐसा हो जाने से वह हतप्रभ-सी रह गयी और वे कुछ क्षण तक एक-दूसरे को चुपचाप देखते रहे।

"देखा न...!" नर्स ने उससे ऐसे कहा मानो घायल ने उसकी किसी बात का प्रतिवाद किया हो। नर्स जब करीब आयी तो घायल ने आँखें बन्द कर लीं।

चारी ने वसन्त की ताजा हवा में खुलकर साँस ली और फौरन आँखें खोल दीं। डिब्बे की दीवारों में बनायी गयी और मलमल के परदों से ढकी हुई खिड़कियों में से दिन का प्रकाश झाँक रहा था। डिब्बे के चौपट खुले हुए दरवाजे में से तेज उजली धूप और स्तेपी के फूलों की सुगन्ध आ रही थी...रोशनी से घायल की आँखें चकाचौंध हो रही थीं। उसने घड़ी भर को आँखें सिकोड़ीं पर इस डर से कि यातनाप्रद सपने उसे फिर से परेशान करने लगेंगे, उसने झटपट आँखें खोल लीं। दो पंक्तियों में सफेद चादरों से ढके और निकल चढ़े हुए आठ पलंग खड़े थे। उन्हें ताशकन्द के एक वेश्यालय से प्राप्त किया गया था। दरवाजे के निकट ही बलूत की मजबूत मेज रखी हुई थी जिसे चीबिसोव भाइयों के व्यापार-कार्यालय से हासिल किया गया था और इसी पर लम्बी मूँछोंवाला सर्जन देमीदको ऑपरेशन करता था। दरवाजे के करीब चारी की ओर पीठ किये हुए एक नारी बैठी थी। उसके बाल गहरे भूरे रंग के थे। सूरज उन

पर सोना बरसा रहा था और हवा उन्हें तथा सफेद लबादे की आस्तीनों को लहरा रही थी।

यह नारी अचानक घूमी और झटपट खड़ी हो गयी। रेगिस्तान में चारी की कभी ऐसी नारी से भेंट नहीं हुई थी जो ऐसी बेझिझक होकर, सो भी ऐसी बड़ी-बड़ी भूरी आँखों से उसकी ओर देखे। वह स्तम्भित-सा रह गया और उसे लगा मानो वह नया सपना देखने लगा है। किन्तु यह नारी उसके निकट आयी और उसने गूँजती हुई ऊँची आवाज में कुछ कहा। इसके बाद चारी ने आँखें मूँद लीं।

कुछ देर बाद लम्बे कद और मूंछोंवाला पुरुष आया जिसे उसने एक बार सैनिक दस्ते के मुख्य कार्यालय में देखा था। इस व्यक्ति ने घायल से उसकी तबियत का हालचाल पूछा, पर घायल चुपचाप छत को ताकता रहा...

घायल की फिर से आँख लग गयी। वह वसन्त की गर्म साँझ में जागा। बन्द कूचे में, जहाँ वैगन खड़ी थी छोटे-से, स्टेशन की ओर से घुड़सवार पलटन की कमान के शब्द सुनाई दे रहे थे। फर्श और दीवारें हिल रही थीं। टूटे और हिलते-डुलते डिब्बोंवाली भारी-भरकम मालगाड़ी घड़ी भर को खिड़कियों को जगमगाती हुई गुजरी। अँधेरे में लेटा हुआ घायल छत को एकटक देख रहा था और स्मृतियों को सजीव कर रहा था...

अलामानी धावों के बाद चारी बहुत दिनों तक रेगिस्तान में भटकता रहा। पहले तो उसके घोड़े ने दम तोड़ दिया। फिर वह खुद भी भूख-प्यास के कारण मरते-मरते बचा। बेजान

और काला-कलूटा हुआ वह रेत के तीले के पास पड़ा हुआ था, कि खानाबदोश कजाखों का एक काफिला वहाँ आ पहुँचा। इस काफिले में ऊँटों पर खेमे लादे हुए पन्द्रह परिवार थे। वे रेगिस्तान से बहुत ही मजबूत वृक्ष सक्सावूल की लकड़ी लादकर बेचने के लिए नगर लाते थे। वे लकड़ी के एक लट्ठे के साथ उसे भी बाँधकर, ताकि वह गिर न जाये, नगर के बाजार में लाये।

चारी मिलनेवालों से डरता और कन्नी काटता हुआ काफी समय तक नगर में घूमता रहा। बाद में वह एक धनी व्यापारी के गोदाम में पेटियाँ ढोने के काम में हाथ बँटाने लगा। इसके बदले में उसे रोटी मिल जाती। वह स्टेशन पर जाकर उस जगह सो रहता जहाँ इन्जन बेकार हुए कोयले फेंकते थे। यह जगह गर्म और खुश्क होती थी।

चारी ने यह सोचा कि वह जाड़ा यहीं बितायेगा, फिर अपने गाँव लौटकर सही मौका पाने का इन्तजार करेगा। पर ऐसा न हुआ। एक दिन खान के मुंशी कूर्त ने उसे बाजार में देख लिया। वह वहाँ सौदा-सुलफ खरीदने को आया था। आध घण्टे बाद चारी को गिरफ्तार कर लिया गया और बगल में तलवार लटकाये हुए हट्टा-कट्टा सिपाही उसे थाने में ले गया। खुद थानेदार ने कई बार उससे पूछताछ की और उसे मुहम्मदखान की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराया। वहीं, थाने में ही उसके कई दाँत भी तोड़ डाले गये।

चारी इस समय की भाँति तब भी जेल की कोठरी के तख्ते पर चुपचाप लेटा हुआ छत को ताकता रहता था। वह

भूखा होता था और खूब पिटाई होने के कारण उसकी हालत बुरी होती थी। अगर उसे इस बात का ध्यान न रहता कि अभी इल्यासखान के वंश से खून का बदला लेना बाकी है तो शायद ऐसी पिटाई के कारण उसका कभी का दम निकल गया होता। स्तेपी के भूरे भेड़िये के रूप में चारी अपनी कल्पना करता। यह एहसास उसे जिन्दा रहने का बल देता और इसीलिए पूछताछ के समय वह थानेदार को डरावनी और भेड़िये जैसी जलती आँखों से देखता रहता।

"जंगली दरिन्दे, मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगा!..." ऐसी निडर नजर का सामना होने पर गुस्से से लाल-पीला होता हुआ थानेदार कहता। बहुत मुमकिन है कि थानेदार अपनी करनी कर ही गुजरता, पर हालात ने खलल डाल दिया।

एक सुबह को सड़क पर से कुछ अनजानी-अपरिचित आवाजें जेल की उस कोठरी तक पहुँचीं जहाँ चारी बन्द था। बैंड बज रहा था और लोग रूसी भाषा में ऊँचे-ऊँचे चिल्ला रहे थे। कुछ ही देर बाद जेल के दरवाजे खुले और बन्दी भाग कर बाहर आये। सड़क पर लोगों की भीड़ जमा थी। लोग टोपियाँ हिला रहे थे, गाने गा रहे थे और गले मिल रहे थे। भीड़ के ऊपर लाल झण्डे लहरा रहे थे। थानेदार साहब का कहीं अता-पता ही न था। यह 1917 का फरवरी मास था।

जब तक लोग जोशीले भाषण देते रहे, जिन्हें चारी बिल्कुल नहीं समझ पाया, वह चोरी-छिपे बाड़ लाँघ गया और पैर घसीटता हुआ नगर से रेगिस्तान में जा पहुँचा।

पहले ही गाँव में उसे चरवाहे का काम मिल गया और

वह दूरस्थ कुओं पर चला गया। गर्मी और पतझर के दौरान उसके जिस्म में कुछ जान आ गयी। जाड़े में उसने एक घोड़ा खरीदा और अपने गाँव की ओर रवाना हो गया।

दुनिया में कुछ ऐसी उथल-पुथल हो रही थी कि समझ से बाहर। गाँवों में अब कोई मिट्टी का तेल, नमक और दियासलाइयाँ नहीं लाता था। ऐसी अफवाहें सुनाई दीं कि पानी का कोटा बढ़ा दिया जायेगा, लोगों में घोड़े और भेड़ें बाँटी जायेगी। वास्तव में ही नगर से तुर्कमान लोग आये और राज्य की जमीन बाँटने लगे। इस समय तक आस-पास के गाँवों के लगभग सारे पानी पर इल्यासखान का अधिकार हो चुका था। यह पानी देहकानों में बाँट दिया गया। खुद इल्यासखान ने तो सदा की भाँति बड़ी अक्लमन्दी दिखायी। उसने अपना माल-मता समेटा और अपना घर कूर्त की देखरेख में छोड़कर पहाड़ों को लाँघता हुआ अपने दूर के रिश्तेदारों के पास ईरान चला गया। खान माल-असबाब से लदे हुए ऊँटों का एक लम्बा कारवाँ भी अपने साथ ले गया। जब लोग कुओं से खान की भेड़ों के बड़े-बड़े रेवड़ों को भगा ले जाने लगे तो नगर से आये लोगों ने ऐसा करने से मना कर दिया।

चारी जब अपने गाँव में पहुँचा तो इल्यासखान पहाड़ों को लाँघ भी चुका था। शमुर्दखान भी वहाँ नहीं था।

चारी बहुत देर तक पुरानी और जर्जर हुई झोपड़ी के पास खड़ा हुआ अंगूरों की सूखी हुई छः बेलों को देखता रहा। फिर

धीरे-धीरे गढ़ी में जाकर मेड़ पर बैठ रहा...पुरानी और कभी भी न बुझनेवाली नफरत की आग आज भी उसके दिल में जल रही थी। कड़ी आजमाइशों ने इस नफरत की जड़ें और गहरी कर दी थीं, वह उसके दिल में जमकर बैठ गयी थी और तेज उस्तरे की भाँति उसके मन को चीरती रहती थी। अपने कुलनाशियों को क्षमा करने के बजाय तो वह मर जाना कहीं बेहतर समझेगा...वह सब्र से अपने दुश्मनों के लौटने का इन्तजार करेगा।

अगले दिन चारी की अपने मित्र तागान से भेंट हुई। सफेद टोपी और कीमती लबादा पहने हुए वह बढ़िया घोड़े पर सवार था। तागान ने बताया कि पड़ोस का एक खान दिलेर नौजवानों को इकट्ठा कर रहा है। वहाँ अब इन नौजवानों की ही तूती बोलती है और वे मनमानी करते हैं।

"तुम्हें हमारी जिन्दगी पसन्द आयेगी!" तागान ने कहा। किन्तु चारी ने उसके साथ जाने से इनकार कर फिर से जाकर चरवाहे का काम करने लगा।

घटनाचक्र चलता रहा। स्टेशन पर तोपें दनदनाती रहतीं। पुरानी गढ़ी तक उनकी गड़गड़ाहट सुनाई देती और पहाड़ों में उनकी प्रतिध्वनि गूँज उठती। गर्मी के एक बहुत ही गर्म दिन शमुर्दखान गाँव में नमूदार हुआ। वह गार्डोंवाली वर्दी के ऊपर बहुत ही कीमती लबादा पहने था। उसके साथ कई रूसी अफसर थे। स्टेशन पर ब्रिटेन के उपनिवेशों से आये सैनिक खाकी पट्टियाँ पहने हुए गश्त कर रहे थे। लम्बी नालवाली अंग्रेजी तोपों से लदी हुई एक के बाद एक फौजी गाड़ी पूरब

की ओर जा रही थीं।

शमुर्दखान ने गाँवों में अपने हरकारे भेजे कि वे गाँववालों से जवान देने की माँग करें। भर्ती के आदेश में जिहाद का उल्लेख किया गया। शमुर्दखान ने सब से पहला काम तो यह किया कि फिर से पानी छीन लिया और दण्ड के रूप में कारी-काला के देहकानों के आधे से ज्यादा खेमे तबाह कर डाले। अपने भाई की याद में शमुर्दखान ने बीबीताज के भूतपूर्व वर हाली के सारे परिवार को मौत के घाट उतार दिया। खुद हाली की मुश्कें बाँधकर उसे बढ़िया नसल के चार घोड़ों की दुमों के साथ बाँध दिया गया और उन पर तब तक चाबुक बरसाया जाता रहा जब तक हाली के टुकड़े-टुकड़े नहीं हो गये।

शमुर्दखान ने चारी को पकड़ने के लिए पूरे के पूरा दस्ता भेजा। किन्तु पड़ोसियों ने चारी को पहले से ही इसकी सूचना दे दी और वह समय रहते कुओं से दूर भाग गया।

फिर से वह पहाड़ों में भटकने लगा और शमुर्दखान के लोग शिकार के जानवर की तरह उसका पीछा करते रहते थे। वह किसी भी गाँव में खुले तौर पर नहीं घूम सकता था। एक सुबह को खान के मुंशी कूर्त के दो रिश्तेदारों को चारी का सुरारा मिल गया। दिन भर वे भुरभुरे टीलों में उसका पीछा करते रहे। शाम होने तक उन्हेंने उसका पाँव घायल कर डाला। चारी गीदड़ की तंग-सी माँद में छिप कर बैठ गया और उनके निकट आने की प्रतीक्षा करने लगा। जब उनमें से एक रेंगता इआ चट्टान पर चढ़ रहा था तो चारी ने छुरी के एक

हल्के-से वार से भेड़ की तरह उसकी गर्दन काट डाली। इसकी बन्दूक लेकर उसने अँधेरे में ही गोली दूसरे के सिर के आर-पार कर दी। चरवाहे की आँखें तो रात के अँधेरे में देखने की आदी हो जाती हैं।

फिर से अपना घायल पैर घसीटता हुआ वह एकाकी बाघ की तरह भुनभुनाया हुआ, भूखा और भयानक सूरत बनाये हुए पहाड़ों में घूमने लगा...

पाँव का घाव धीरे-धीरे भरने लगा। उसने पहाड़ों में छोटी-सी गुफा ढूँढ़कर वहीं डेरा लगा लिया। सिर्फ तागान को ही इस बात की जानकारी थी। वह जब-तब पहाड़ों में आता, चारी को रोटियाँ, हरी चाय और कारतूस दे जाता।

चारी ने लगभग एक साल पहाड़ों में बिता दिया। केवल दो बार ही वह गाँव में आया। प्रचलित रीति के अनुसार देहकानों ने उसका स्वागत किया, उसे खिलाया-पिलाया और उसके लिए शुभकामनायें की। मगर खुद चारी तो यह जानता था कि अगर शमुर्दखान को, जिसका यहाँ सिक्का चलता था, इस बात का पता लग गया तो उन बेचारों के साथ क्या बीतेगी। फिर खान के जासूस भी तो हर कदम पर थे।

पहाड़ी खड्डों में फिर से तोपों की दनदनाहट सुनाई देने लगी। इस बार फौजी गाड़ियाँ सफेद पट्टियोंवाले सैनिकों को उल्टी दिशा में लेकर जाती थीं। शमुर्दखान ने जिन जवानों को भर्ती कर मोर्चे पर भेजा था, वे एक-एक करके या दलों में गाँव लौटने लगे। एक रात को वह अपने दोस्तों के साथ न जाने कहाँ गायब हो गया। जाते-जाते उसने चेतावनी दी कि

जिहाद समाप्त नहीं हुआ। उसका तो अभी आरम्भ ही हुआ है।

बहुत शीघ्र ही अनजानी-अज्ञात पगडंडियों से होते हुए कारवाँ पहाड़ों में से जाने लगे। इन पर तेर्याक (गाँजा) और सूखी हुई खजूरों के साथ लम्बे बक्सों में ढंग से भरी हुई नवीनतम किस्म की पिस्तौलें तीन टाँगोंवाली मशीनगनों के हिस्से और भूरे-पीले चार्जर लदे होते थे। उन गाँवों को जलाकर राख कर दिया गया जहाँ लोगों ने झुकने से इनकार किया। जिन देहातियों ने खान की सम्पत्ति को छूने का साहस किया उन्हें घोड़ों की दुमों से बाँधकर और भयानक यातनायें देकर मार डाला गया।

तभी बासमाचों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए खास फौजी दस्ते संगठित किये गये थे।

चारी पहाड़ों से नीचे आया...शमुर्दखान ने अपने एक धावे के समय पुरानी गढ़ी के निकटवाला गाँव बिल्कुल तबाह कर दिया और सिंचाई-बाँध को भी नष्ट कर दिया। देहकानों ने अपनी जमा-पूँजी समेटी और वहाँ से चल दिये--कोई रेगिस्तान की ओर तथा कोई पड़ोस के गाँवों की तरफ। मिट्टी के तबाहहाल घरों में रेत ही रेत जमा हो गयी। जमीन में गड़े और जले हुए बाँस हिलते-डुलते रहते थे, कोई उनकी सुध-सार लेनेवाला नहीं था। यहीं, नष्ट-भ्रष्ट हुए अपने प्यारे गाँव में चारी की तागान से फिर मुलाकात हुई। जब तक गाँवों में सत्ताहीनता की स्थिति रही, पड़ोस के गाँव का खान तागान जिसकी सेना में शामिल था, शमुर्दखान का बैरी बना

रहा। वे एक दूसरे को मान्यता ही नहीं देते थे। किन्तु अरब लाल सेना के लौटने पर वह पहाड़ों के पार से प्राप्त हुए किसी आदेश के अनुसार शमुर्दखान के आधीन हो गया। स्वयं तागान भी शमुर्दखान की बासमाची सेना के पचास सैनिकों की कमान सम्भालता था।

किन्तु इन दोनों नौजवानों की दोस्ती दमस्क के इस्पात से भी अधिक मजबूत थी। चारी के लिए अब शमुर्दखान को पकड़ पाना सम्भव नहीं था। उसके सामने तो एक ही रास्ता बाकी रह गया था और तागान ने भी उसी का समर्थन किया। वह रास्ता यह था कि वह लाल सेना के किसी दस्ते में शामिल हो जाये और किसी मुठभेड़ के समय शमुर्दखान का गला काट डाले। तागान ने कहा कि वह इस काम में उसकी मदद करेगा। आखिर तागान को शमुर्दखान से लेना-देना ही क्या है। उसका अपना सरदार है और जब तक वह उसकी नौकरी करेगा, उसके प्रति वफादार रहेगा।

दोनों दोस्त रात भर बातचीत करते रहे। उन्होंने तय किया कि किस तरह से एक-दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करेंगे, कहाँ मिलेंगे। सुबह हुई तो तागान घोड़े पर सवार होकर चला गया और चारी बासमाचों के अगले धावे तथा लाल सेना के दस्ते के आने की प्रतीक्षा करने लगा। तागान ने उसे सूचित किया कि लाल सेना से बचने के लिए शमुर्दखान इसी रास्ते से कारी-काला के करीब से दर्रे की ओर जायेगा...

चारी तो लाल सेना के दस्ते के स्वरूप और इस बात का अनुमान भी नहीं लगा सकता था कि वह उसमें कैसे शामिल

होगा। तागान ने उसे केवल इतना ही बताया था कि उसमें सभी रूसी शामिल हैं। वे सब से पहले तो शमुर्दखान और उसकी मदद करनेवाले रूसी अफसरों का सफाया करना चाहते हैं।

चारी रूसियों से अभी तक लगभग अपरिचित था। वे उसके लिए अजनबी थे। जिस पहले रूसी से उसका पाला पड़ा था वह था थानेदार। यह आदमी उसके स्मृति-पट पर पत्थर की लकीर की भाँति अंकित हो कर रह गया था। दूसरे रूसी को भी वह जीवन भर नहीं भूल सकेगा। वह था--जेल की कोठरी में उसका पड़ोसी--डाकू और हत्यारा त्रीश्का श्पान्दिर जैसा कि उसके दोस्त उसे बुलाते थे। सन्तरी ने जब चारी को पहली बार जेल की कोठरी में धकेला तो त्रीश्का को आँख मारी और उसने नवागन्तुक का 'बढ़िया स्वागत' किया। चारी ने अपने को तख्ते के नीचे पड़ा हुआ पाया था।

अब वह रूसियों के सैनिक दस्ते में जाने को मजबूर था। पर यदि उसमें शामिल होने से वह शमुर्दखान का गला अधिक आसानी से काट सकता है तो वह ऐसा भी करेगा! चारी सब्र से इन्तजार करने लगा।

दसवें दिन उत्तर की ओर से गोलियाँ दगने की आवाज सुनाई देने लगी। चारी तबाहहाल घर में छिपकर बैठ गया और वहाँ से सारा दृश्य देखने लगा।

शुरू में तो धारीदार लबादे और झबरीली टोपियाँ पहने हुए घुड़सवारों का दल सरपट घोड़े दौड़ाता हुआ गाढ़ी में दाखिल हुआ। उसके पीछे-पीछे घुड़सवार सेना की एक बड़ी

टुकड़ी दो ओर से आयी। नुकीले सिरोंवाली टोपियाँ पहने हुए सैनिक चारी के इतने अधिक निकट से गुजरे कि उसे अपने को छिपाने के लिए जमीन पर लेट जाना पड़ा।

गोलियाँ चारी के सिर के ऊपर से सनसनाती हुई गुजरतीं और हल्की-सी आवाज के साथ दीवार की सूखी मिट्टी में धँस जातीं। उसके बिल्कुल करीब ही मशीनगन की ऊँची और साफ आवाज सुनाई देने लगी। दायें-बायें से दूसरी मशीनगनें जवाब देने लगीं। चारी ने छिपे-छिपे ही देखा कि गढ़ी की जानी-पहुँचानी दीवारों के ऊपर धूल के बादल-से छा गये हैं। कहीं-कहीं सूखी मिट्टी के बडे गोले नीचे की ओर गिरते दिखायी देते थे। पीली ईंटें भुरभुराकर दूर जा गिरती थीं।

गोलियाँ एकाएक चलनी बन्द हो गयीं मानो किसी ने ऐसा करने का आदेश दे दिया हो। सैनिक दो कतारों में किले में दाखिल हुए...अँधेरा होने पर गढ़ी के ऊपर अलावों की रोशनी की झलक मिलने लगी। चारी उठकर उनकी ओर चल दिया। किन्तु अचानक किसी ने रूसी भाषा में चिल्लाकर कुछ कहा और उसकी ओर दो गोलियाँ चलाईं। तब बहुत दूरी पर गढ़ी के बुर्जों के गिर्द चक्कर लगाकर वह कंकड़ों-पत्थरों से भरी हुई गुफा की ओर बढ़ा। यहाँ की हर चीज उसकी जानी-पहचानी थी। कंकड़-पत्थर हटाकर उसने गुफा में प्रवेश किया और नीचे उतरने लगा।

गढ़ी का गुप्त मार्ग खुला हुआ था। स्पष्टतः कुछ ही समय पहले किसी ने इसका उपयोग किया था। चारी बाहर निकला, उसने गुप्त मार्ग को सूखी झाड़ियों से ढक दिया और

अलाव की हिलती-दुलती लपटों की ओर चल दिया। निकट ही अर्गली खनखनाई। चारी को मुँडेर पर दो परछाइयाँ दिखायी दीं और वह उन्हीं की तरफ बढ़ चला। उसे रुकने का आदेश मिला। वह रुक गया और बोला कि मैं लाल सेना की टुकड़ी में शामिल होना चाहता हूँ ताकि शमुर्दखान को दूसरी दुनिया में पहुँचा सकूँ।

चारी की बात उन लोगों की समझ में नहीं आयी। उनमें से एक वहाँ से गया और जल्द ही लौट आया। उसके साथ एक अन्य व्यक्ति भी आया जिसने अचानक ही शुद्ध तुर्कमानी भाषा में चारी से बातचीत करनी शुरू की। चारी को इससे बड़ी हैरानी हुई। उसने अपनी बात दोहराई कि उनके दस्ते में शामिल होना चाहता हूँ। जब उससे यह पूछा गया कि वह गढ़ी में कैसे आया तो मुड़ा और उन्हें भूमिगत मार्ग दिखाने के लिए कब्रोंवाले टीले की ओर चल दिया।

गुफा से बाहर आते समय चारी की नजर चट्टान के करीब पड़े हुए लबादे के टुकड़े पर जा टिकी। चरवाहे की पैनी दृष्टि ने अँधेरे में भी घुड़सवार के, बिना एडियोंवाले घुटने तक के जूतों के निशान पहचान लिये। यह शमुर्दखान के पैर के ही चिह्न थे। ऐसे ही छोटे-छोटे दृढ़ और सधे हुए कदमों के निशान उसने खारी झील पर देखे थे जहाँ उसके पूरे परिवार की हत्या की गयी थी। इन पद-चिह्नों को तो वह हजारों पद-चिह्नों के बीच दिन या रात को भी पहचान लेता...चारी देर तक इन निशानों को देखता हुआ मौन रहा। खड्ड की ओर से केवल प्रपात का समलय और दबा-घुटा शोर सुनाई दे रहा था।

वह घूमा तो उसने देखा कि उसका पीछा करनेवाले रूसियों की लालटेन गढ़ी की ओर बढ़ती जा रही है। वह किसी तरह की आहट किये बिना पत्थरों पर से कूदा और बहुत जल्द ही उनके करीब पहुँच गया...

तीसरे दिन वे एक छोटे-से स्टेशन पर पहुँचे। वहाँ उसे भी वैसी ही वर्दी दी गयी जैसी कि बाकी लोग पहने हुए थे। चारी ने उसे पहनना नहीं चाहा। तब तुर्कमानी भाषा में बोलनेवाले टुकड़ी-कमाण्डर रहीमोव ने बस इतना ही कहा कि अगर तुम वर्दी नहीं पहनोगे तो तुम्हें इस सैनिक दस्ते से निकल जाना पड़ेगा। तब चारी ने वर्दी पहन ली। अपने पुराने लबादे और टोपी की उसने ढंग से तह लगायी और उसे सैनिक दस्ते के स्टोर में जमा कर दिया। इस सैनिक दस्ते में देर तक रहने का उसका कोई इरादा नहीं था।

इस सैनिक दस्ते में रहीमोव ही अकेला तुर्कमान नहीं था। उसके अलावा मामेदोव भी था। वह ऐसी काटती हुई नजर से चारी की ओर देखता था कि चारी ने अपनी पेटी के साथ लटकती हुई छुरी को छूकर उसे धमकाया। एकबार मामेदोव ने दाँत पीसते हुए कहा कि मैं निर्मल जल की तरह तुम्हारे मन की बात को समझता हूँ और तुम्हें इसका मजा चखाकर ही दम लूँगा। चारी ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। उसका तो अपना एक निश्चित लक्ष्य था और वह किसी दूसरी चीज की ओर ध्यान नहीं देना चाहता था। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिए वह सभी तरह की मुसीबतों को गले लगाने को तैयार था।

पड़ोस की टुकड़ी में चारी को अप्रत्याशित ही दो तुर्कमान भाई दिखायी दिये। उनकी नसों में असली ईगों का खून था। वे सीधे तनकर चलते थे, सधे हुए कदम रखते थे, उनकी भौंहें जुड़ी हुई नहीं थीं, चेहरे गोरे-चिट्टे थे और माथे उभरे हुए। ये दोनों भाई सम्भवतः इल्यासखान के कुल से भी अधिक ऊँचे ईगों थे।

मरुस्थल के नियमों के प्रतिकूल चारी सभी ईगों से घृणा करता था। खारी झील पर ही इस भावना ने पहले पहल जन्म लिया और जब वह बहुत समय तक पहाड़ों में अकेला भटकता रहा तभी इसकी जड़ें बहुत मजबूत हुईं। जब लाल सेना में आने के बाद और बहुत समय पहले ही अपनी श्रेष्ठता की बात भूल चुके ओराजोव भाई उसके पास आये और उन्होंने हँसते हुए चारी को अभिवादन किया तो वह अपने को वश में न रख पाया और उसने बन्दूक दिखाते हुए उन्हें धमकाया।

दोनों भाई वहाँ से टल गये और फिर उन्होंने चारी से कभी बातचीत नहीं की। किन्तु चारी अब उस घड़ी का इन्तजार करने लगा जब वे उससे बदला लेंगे। वह समझता था कि उसने अपना गँवारुपन दिखाया है, ईगों से बदतमीजी के साथ पेश आया है और इसलिए रेगिस्तान की रीति के अनुसार देर-सवेर उससे प्रतिशोध लिया जायेगा। चारी को इसके बारे में तनिक भी सन्देह नहीं था।

कुछ दिन और गुजर गये। बचपन से घुड़सवारी करनेवाले व्यक्ति के लिए घुड़सेना का अच्छा सैनिक बनना कुछ कठिन

नहीं था। पह जीन पर ढली हुई मूरत की भाँति जमकर बैठता और उसकी तलवार बिजली की भाँति आसपास की बेलों को काटती जाती। इस सैनिक दस्ते का वह सम्भवतः सबसे अच्छा निशानेबाज था...जहाँ तक बड़े कमाण्डर की वार्ताओं का सम्बन्ध था, उसे उनमें कोई दिलचस्पी न थी। कतार में खड़े होना, गोली चलाना और हाजिरी के समय उपस्थित होना जरूरी है तो वह यह सभी कुछ करेगा। बाकी किसी चीज से उसे कोई सरोकार नहीं है। इसके अलावा रूसी भाषा के भी इने-गिने शब्द ही उसकी समझ में आते थे। राजनीतिक चर्चा के समय चारी अपने ही ख्यालों की दुनिया में खोया रहता था।

धीरे-धीरे इस बात की ओर भी उसका ध्यान गया कि इस सैनिक दस्ते में तुर्कमानों के अतिरिक्त अन्य गैर-रूसी भी हैं। सबसे पहले तो उसने छोटे कद, सफेद दाँतों और काली आँखोंवाले चीनी मशीनगनर चेन को पहचाना। वह हमेशा सभी की ओर स्नेहपूर्वक देखता हुआ मुस्कराता रहता था। चारी उसकी मुस्कान के उत्तर में नहीं मुस्कराया। उसे क्या लेना-देना था उससे। किन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि सहनशील चीनी ने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और मुलाकात होने पर इसी तरह अपनी बत्तीसी दिखाता हुआ मुस्कराता रहता।

चारी की समझ में नहीं आता था कि ये भाँति-भाँति के लोग यहाँ काले मरुस्थल में क्यों जमा हुए हैं, किसलिए वे गोलियों की बौछार में अपनी जान जोखिम में डालते हैं जब

कि उन्हें माल-मते में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। पर उसने इस सवाल पर बहुत सोच-विचार नहीं किया। उनका काम वे जानें, उसे तो अपने लक्ष्य की पूर्ति से मतलब था।

रूसियों में से चौड़े कन्धोंवाला वही हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति उसकी ओर सबसे अधिक ध्यान देता था, जिसने रात्रि के समय उसे गढ़ी में रोका था। उसका नाम था तेलेशोव पर कम उम्र के लाल सैनिक उसे चाचा स्तेपान ही कहते थे। वह चारी से कोई न कोई बात करने की, किसी तरह से उसे मदद देने की कोशिश करता था।

कुल मिलाकर यह कहना चाहिए कि वे सभी उससे किसी चीज की आशा करते थे। चारी इस बात को अच्छी तरह अनुभव करता था। पर वह न तो थानेदार को ही भूल सकता था और न ही अपना तख्ते के नीचे गिराया जाना। उसे जिस तरह सारी दुनिया पर विश्वास नहीं था वैसे ही इन लोगों की उदारता पर भी। उनकी उदारता के पीछे कोई अनबूझ बात छिपी हुई थी। स्पष्ट था कि उन्हें किसी कारणवश चारी की जरूरत थी। पर, चारी को शमुर्दखान के खून के सिवा और किसी चीज की जरूरत नहीं थी।

चारी धावों में खुशी से हिस्सा लेता। स्टेशन पर तिरपाल से ढकी और बुरी तरह विकृत की हुई लाशों को वह उदासीनता से देखता--उसे भला क्या मतलब था इन अजनबी लोगों से, जिनकी हत्या कर दी गयी थी!

बासमाचों ने जिस स्टेशन पर हल्ला बोला था, वहाँ जो देहकान पटरियाँ बिछा रहे थे, उन्हीं में चारी ने खान के जासूस

भेस बदले हुए तागान को पहचान लिया।

"रात को पहले पड़ाव पर पूर्व की ओर एक हजार कदम आ जाना..." तागान ने फुसफुसाकर कहा।

रात को जब पड़ाव डाला गया तो चारी तागान से मिलने गया। तागान ने उसे शमुर्दखान की योजनायें बतायीं।

चारी की बसमाचों से कोई दुश्मनी नहीं थी। उसे तो उनमें से केवल एक से ही मतलब था। अगले दिन चारी ने अपने शत्रु को देखा। उसकी चरवाहे की तेज आँखों को शमुर्दखान की सफेद टोपी की झलक मिली। पर चारी ने गोली नहीं चलायी। उन दोनों के बीच काफी फासला था और चारी अचूक वार करना चाहता था, सो भी राइफल की गोली से नहीं, बल्कि छुरी से।

चारी ने अनुभव किया कि लोग उसे सन्देह की नजर से देखते हैं और यद्यपि वह रूसी भाषा पूरी तरह नहीं समझता था, तथापि वह इतना समझ गया कि उसके बारे में बातचीत होती है। बहुत मुमकिन है कि अगर इस सैनिक दस्ते में उस पर विश्वास करनेवाले लोग न होते तो, उसे इससे अलग ही होना पड़ता। जब तेलेशोव, कमिसार या चेन उसकी ओर देखते तो चारी को लगता कि वे न जाने कैसे मगर उसकी जिन्दगी का सारा किस्सा जानते हैं। कमाण्डर को वह न समझ पाता। पेल्टीन अपनी भूरी आँखों में उदासीनता का भाव लाकर चारी की ओर देखता। चारी जो बहुत पहले से ही पूरी तरह निडर हो चुका था और दुनिया की किसी भी चीज से नहीं डरता था कमाण्डर की नजर से सहम उठता।

एक दिन चारी बैरक के सिरे पर खड़ा हुआ पहाड़ की ओर देख रहा था। अँधेरा हो चुका था। मुश्किल से ही दिखायी देनेवाली रोशनी की पट्टी दूर की काली चोटियों को इंगित कर रही थी।

अचानक किसी के बड़े-चौड़े हाथ ने प्यार से उसका सिर सहलाया। चारी सिहरा उसने नजर ऊपर उठाई तो कमाण्डर को अपने निकट खड़े पाया। यहीं अँधेरे में चारी ने पहली बार इस बात की ओर ध्यान दिया कि कमाण्डर की कनपटियों के बाल बिल्कुल पक चुके हैं।

पेल्टीन कुछ देर तक खड़ा रहा फिर मुड़ा और अपने भारी तथा नपे-तुले कदम बढ़ाता हुआ चला गया।

चारी तागान के साथ दो बार और मिला। दूसरी बार अप्रत्याशित ही कुछ अज्ञात लोगों ने उन पर गोली चलायी। चारी ने उन्हें पहचान लिया कि वे खास दस्ते के सैनिक थे। किन्तु उसने अपने को किसी कारणवश भी दोषी अनुभव नहीं किया और दस्ते में लौट आया।

हाँ तो बासमाचों के गिरोह के बचे-बचाये लोगों को टीलों में घेर लिया गया था। शमुर्दखान की गर्दन के गिर्द फन्दा अधिकाधिक कसा जा रहा था। चारी सैनिक पंक्ति में लेटा हुआ था। यहाँ से वह अनेक बार वसन्त के दिनों में भेड़ों के रेवड़ों को जाड़े की चरागाहों से गर्मी की चरागाहों में ले गया था। वहाँ, उस बड़े टीले पर, बुजुर्ग अल्लायार सदा अपना अलाव जलाता था और नीचे नाला था। वसन्त के दिनों में

पहाड़ों से आनेवाली पानी की तेज धारा यहाँ बहने लगती थी। किन्तु इस समय तो नाला सूखा होना चाहिए था। यहाँ से तो वह दिखायी नहीं दे रहा था। खास दस्तेवालों को तो इस बात का सान-गुमान भी नहीं था कि शमुर्दखान के बच निकलने का एक और रास्ता बाकी रह गया है...नाले के ऊपर यह क्या चीज झलकी है? क्या यह सफेद टोपी तो नहीं है? चारी ने तेलेशोव से दूरबीन छीन ली, सीधा खड़ा हो गया और उधर देखने लगा... हाँ ऐसा ही है... टीले के दामन में घोड़ों की पीठें और टोपियाँ दिखायी दे रही थीं। चारी ने दूरबीन फेंकी और उस तरफ दूर जाते हुए शत्रु की ओर भागने लगा।

लोगों ने पीछे से चिल्लाकर कुछ कहा किन्तु चारी ने उनकी ओर कान नहीं दिया। सनसनाती हुई गोली ने पत्थर को चीर डाला किन्तु चारी तो नाले में कूद चुका था। वह अपनी पूरी ताकत से शमुर्दखान के पीछे भाग रहा था कहीं ऐसा न हो कि वह अपना सिर सही-सलामत लेकर निकल जाये!...

घोड़ों का पीछा करना तो बहुत मुश्किल होता है। आखिर चारी जब नाले से बाहर निकला तो उसे दूरी पर सरपट घोड़े उड़ाये लिये जाते हुए आठ घुड़सवार दिखायी दिये...चारी जीन कसे हुए घोड़े की ओर लपका और उसने किसी आदमी के हाथ से लगाम छीनने की कोशिश की। उसने लगाम नहीं दी...तब चारी ने राइफल का कुन्दा उसके सिर पर दे मारा और उछलकर जीन पर सवार हो गया।

घोड़े रेगिस्तान में उड़े जा रहे थे। घुड़सवारों नें जब देखा

कि कोई उनका पीछा कर रहा है तो उन्होंने घोड़ों की मुलायम और पसीने से चमकती हुई पीठों पर चाबुक सटकारे। किन्तु डटकर पीछा करनेवाला एकाकी घुड़सवार भी लगातार निकट आता जाता था। वह एकाकी था, यही बात उनके दिलों में गहरी दहशत पैदा कर रही थी।

घुड़सवारों के दल में से कन्धे पर राइफल लटकाये हुए एक घुड़सवार अलग हुआ और चारी की ओर बढ़ा। चारी के अचूक निशाने से वह कटे हुए वृक्ष की भाँति काठी से नीचे जा गिरा और उसका घोड़ा हिनहिनाता हुआ स्तेपी की ओर भाग गया। शमुर्दखान के इन पिट्ठुओं से चारी की कोई दुश्मनी नहीं है, पर वे उसे न्याय करने दें, उसके मार्ग में बाधा न बनें।

दूसरा घुड़सवार पीछे मुड़ा। उसकी भूरी आँखें भी वैसी ही निर्दयी थीं जैसी कि उसके हाथ में पकड़ी हुई पिस्तौल की नली। उसने इत्मीनान से पिस्तौल ऊपर की ओर पीछा करनेवाले एकाकी घुड़सवार से डरे इन जंगलियों का मानो मजाक उड़ाते हुए वह जरा हँसा...किन्तु उसकी मुस्कान गायब हो गयी, पिस्तौल हाथ से छूट गयी और उसके साथ ही निर्जीव लाश सूखी झाड़ियों में जा गिरी। धारियोंवाला लाल लबादा फैल गया और अफसर की पुरानी वर्दी साफ दिखायी देने लगी।

अब एक साथ दो घुड़सवार अपने घोड़ों को एक ही जगह पर घुमाकर तेजी से आगे बढ़े--एक सीधा चारी की ओर और दूसरा चक्कर देता हुआ। बड़ी भयानक आँखों और काली दाढ़ीवाले तुर्कमानी घुड़सवार को तो चारी ने फौरन ही

घोड़े से नीचे मार गिराया। दूसरा घुड़सवार तो मानो दूर जाता प्रतीत हुआ। चारी पीले चेहरे और काली मूँछोंवाले इस व्यक्ति से अपरिचित था किन्तु वह शमुर्दखान का दोस्त था और दुश्मन के दोस्त से किसी भी बात की उम्मीद की जा सकती है। चारी की गोली ने दूसरे घुड़सवार को भी दूसरी दुनिया में पहुँचा दिया।

एक अन्य घुड़सवार ने अपना घोड़ा मोड़ा।

"प्यारे चारी, गोली मत चलाना...!" वह घोड़े से नीचे उतर कर और सामने की ओर हाथ फैलाकर चिल्लाया। चारी ने खान के मुंशी, कूर्त को पहचान लिया। अपराधी तो वह भी है पर उनके बीच खून का हिसाब नहीं है। कोई बात नहीं जीता रहे यह!

किन्तु जब चारी का सरपट उड़ा जाता हुआ घोड़ा कूर्त के करीब से गुजरा, तो उसने आगे की ओर छलांग लगाई और चारी के हाथ पर सारा वजन डालकर उसे नीचे की ओर खींचा। चारी ने अपने दूसरे, मुक्त हाथ से पेटी में लगी हुई छुरी टटोल कर निकाली और उसे मूठ तक धोखेबाज की छाती में उतार दिया।

जाने-पहचाने, प्यारे पर्वत निकट ही थे। वीरान गाँव के बीच से शमुर्दखान का उड़ता हुआ घोड़ा सीधे कारी-काला गढ़ी की ओर चला गया। उसके साथ केवल एक घुड़सवार रह गया था...प्यारे, वीरान मैदान में घोड़ों की टापें गूँज रही थीं। चारी का घोड़ा तूफानी रफ्तार से मेड़ की ओर गया और बड़ी

तेजी से गढ़ी के प्राचीन फाटक की तरफ बढ़ गया।

शमुर्दखान नजर नहीं आया। किन्तु फाटक के सामने खड़े हुए बासमाच ने चारी की ओर राइफल का निशाना साधा। गोली से चारी की बुद्योन्नी टोपी उड़ गयी। घोड़ा दौड़ाते हुए चारी ने बासमाच पर बहुत करीब से गोली चलायी। किन्तु इसी क्षण उसने अपनी बगल थाम ली और घोड़े से नीचे जा गिरा। पत्थरों के पीछे से उसका जानी दुश्मन हाथ में पिस्तौल लिये हुए सामने आया। वह धीरे-धीरे चारी के करीब पहुँचा और बहुत देर तक, मानो एक युग तक वे एक-दूसरे को घूरते रहे।

"हाँ तो कमीने गुलाम, कनकटे कुत्ते, आखिर तुम्हारी अन्तिम घड़ी आ गयी न?!" शमुर्दखान ने कहा। "इसी हाथ से मैंने तुम्हारे बाप, तुम्हारे भाई और तुम्हारे नीच कुल के सभी सँपोलियों की हत्या की थी...यूँ तो तुम्हें भी घोड़े की पूँछ के साथ बाँधता, पर तुम्हारी गन्दी चमड़ी से अपने हाथ गन्दे करने और तुम्हारे बदबूदार पसीने की दुर्गंध सूँघने का न तो मेरे पास समय ही है और न इच्छा ही...मैं तो बड़े मजे से इसी समय तुम्हें जहन्नुम रसीद कर दूँगा। परन्तु ऐसा करने से पहले मैं तुम्हारी आँखों में थूकूँगा...!"

शमुर्दखान ने चारी की फैली हुई आँखों में हरी नसवारवाली लार थूक दी। इसके बाद उसने छाती पर पिस्तौल रखकर सीधे चारी के दिल पर गोली चला दी...

चौथा अध्याय

अस्पताली डिब्बे को दरवाजा किसी तरह की आहट किये बिना एक तरफ को हटा। सुबह की ताजा हवा ने दवाइयों की गन्ध को फौरन कम कर दिया। एक हाथ से सफेद चोगा सम्भाले और दूसरे से लोहे का हेंडल पकड़े हुए नर्स ने डिब्बे में प्रवेश किया। चारी उसे एकटक देखता रहा। नर्स उसकी ओर देखकर ऐसे मुस्करा दी मानो वे एक-दूसरे के पुराने परिचित हों और चोगे की जेब से कागज लगाकर बन्द की हुई दूध की बोतल निकालकर बोली--

"अब तुम दूध पीओगे..." इतना कहकर उसने अपने मजबूत हाथ से चारी के कन्धों और सिर को ऊपर उठाकर तकिये को ठीक किया।

चारी दूध पीना नहीं चाहता था किन्तु मन मारकर पीने लगा। उसकी आँखें मजबूती से प्याला थामे हुए नर्स के गोरे हाथ पर टिकी हुई थीं।

"बस, खत्म हो गया!"

प्याले को मेज पर रखकर नर्स दरवाजे के करीब पलंग पर बैठ गयी और बाहर देखने लगी। तभी कुछ आवाजें सुनायी दीं। "तुम से मिलने आये हैं!"

नर्स एक ओर को हट गयी और उसने दो व्यक्तियों को डिब्बे में आ जाने दिया। ये थे--मामेदोव और तेलेशोव। ये वे लोग थे जिन्हें वह कभी भयानक सपनों में देखा करता था।

"कहो, तबियत कैसी है?" स्टूल के सिरे पर बैठते तेलेशोव ने पूछा।

चारी चुपचाप छत को ताकता रहा।

"मैं तो तुम्हारे सामने ही कह देना चाहता हूँ कि तुम बहादुर नौजवान हो। हमारे जवान तुम्हारी तारीफ करते हैं। बेशक इससे पूछ लो..." तेलेशोव ने मामेदोव की ओर उँगली से इशारा किया। "वे कहते हैं कि वह अपना है, मतलब यह कि मजदूर आदमी है..."

वे कुछ देर बैठे। तेलेशोव ने अपना भारी-भरकम हाथ चारी के हाथ पर रखा, विदा ली और फौरन चला गया। मामेदोव ठहरा रहा। घायल बहुत गौर से उसकी ओर देखने लगा। वह मामेदोव के गुस्से और शत्रुभाव को भूला नहीं था। मामेदोव अब तक गुमसुम ही रहा था। वह ऊहापोह में था, हाथ मलता था और केवल तेलेशोव के जाने के बाद ही उसने जेब से रूमाल निकाला उसे खोला और चारी की जानी-पहचानी चाँदी जड़ी हुई हाथी के दाँत की मूठवाली छुरी उसके करीब रख दी। चारी की आँखें चमक उठीं। मामेदोव खुशी से मुस्कराया और उसने चारी के स्वास्थ्य और सफलताओं की उसी ढंग से कामना की जिस ढंग से रेगिस्तान में बहुत ही सम्मानित व्यक्ति के प्रति ऐसी भावनायें व्यक्त की जाती हैं। इसके बाद वह डिब्बे से नीचे कूद गया। दोपहर को चारी की फिर से मरहम-पट्टी की गयी। नर्स ने अपनी नर्म-नर्म उँगलियों के सिरों से उसकी छाती को कई बार धीरे-धीरे छुआ और वह बार बार सिहर उठा। देमीदको ने घावों को देखा और बड़े विश्वास के साथ कहा--

"तो मेरे बहादुर, अब तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे...!"

शाम को मशीनगनर चेन आया। वह सदा की भाँति अपने दाँत निपोर रहा था, अपनी मुस्कान से चकाचौंध कर रहा था और अपने कन्धे ऐसे झुका रहा था कि देखकर हँसी-आ जाये। वह ऐसे जल्दी-जल्दी बोलता था मानो मटर गिरते जाते हों और इसलिए कोई-कोई शब्द ही पल्ले पड़ता था।

"साबास, साथी...!" हवा में छोटा-सा घूँसा घुमाते हुए उसने जोश से कहा। "अच्छा गोली चलाता...हम के पास आता...थोला मशीनगन चलाना सीखता... असली लाल सैनिक बनता...!"

शाम को रहीमोव उसका हालचाल पूछने आया। यह शान्त व्यक्ति जो चारी को कभी किसी तरह के सवालों से परेशान नहीं करता था, पलंग के करीब रखे हुए स्टूल पर चुपचाप बैठ गया। चारी लेटा हुआ छत को ताक रहा था। ऐसे प्रतीत हुआ कि वह किन्हीं स्मृतियों में खोया हुआ है। शायद उसे अपने पिता की याद आ रही थी या अपने भाई बेर्दी की, बगीचे के पीछे बहनेवाले झरने की या धूप सेंकती हुई बूढ़ी अन्नागुल की...रहीमोव बैठा रहा और एक भी शब्द कहे बिना उठकर चला गया।

अगली सुबह को उठने की घण्टी बजने के फौरन बाद

मामेदोव भागा हुआ आया। उसने नर्स को उस समय तक दुर्लभ हो जानेवाली हरी चाय का पैकेट और बिल्कुल नये सूती कपड़े में लिपटी हुई दो सफेद रोटियाँ दीं। घायल की ओर सिर झुकाकर मामेदोव उल्टे पाँव भाग गया।

इस दिन अस्पताली डिब्बे में बहुत-से लोग आये। सभी ने चारी से एक ही सवाल पूछा—"तबियत कैसी है।" इसके बाद अधिकांश तो चुपचाप ही बैठे रहे और विदा होते समय प्रशंसा के कुछ शब्द कहकर चले गये।

कमाण्डर पेल्टीन भी आया। दूसरों की भाँति वह बैठा नहीं? बल्कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाता रहा। उसके भारी-भरकम कदमों से मेज पर रखी हुई हर चीज हिलती रही। आखिर वह पलंग के करीब आया, उसने घायल के तकिये के करीब तिहरे ढक्कनवाली चाँदी की घड़ी रखी, कुछ बुदबुदाया और वैसे ही नपे-तुले तथा भारी डग भरता हुआ बाहर चला गया। चारी को इस बात का कभी पता नहीं चला कि यह घड़ी कमाण्डर पेल्टीन के सबसे अच्छे दोस्त की थी जो ओर्योल के निकट लड़ाई में मारा गया था। ऐसा तब हुआ था जब लाल सेना के लाटवियायी निशानेबाजों के साथ उन्होंने देनीकिन की फौज पर हमला किया था...

अगले दिनों में घायल शायद ही कभी अकेला रहा।

मामेदोव दिन में कई बार चारी के पास आता, उसके लिए रोटियाँ और मांस लाता तथा प्रशंसा और श्रद्धा की नजर से उसे देखता रहता। तेलेशोव भी अक्सर आता। केवल ओराजोव भाई ही घायल का हालचाल पूछने के लिए एक बार भी नहीं आये।

दस्ते के सैनिकों की ऐसी चिन्ता, ऐसी देख-रेख का चारी उपेक्षा और उदासी भरी दृष्टि के रूप में ही उत्तर देता।

अभी कुछ ही समय पहले तक किसी को भी उसकी जरूरत नहीं थी। पिता और मित्र तागान के अतिरिक्त किसी ने उसकी चिन्ता नहीं की थी।

चारी इस बात पर लगातार सोच-विचार करता रहा कि किसलिए इन लोगों को मेरी जरूरत है? किसलिए ये लोग मेरे पास आते हैं, मुझसे बातचीत करते हैं, क्यों इन्होंने मुझे घड़ी भेंट की है? किस कारण से मुझे, अधमरे को उठा लाये और अब मेरा इलाज कर रहे हैं? जो भी हो चारी के लिए तो ये सभी पराये लोग थे जिनके अपने कोई लक्ष्य हैं। किन्तु चारी इनके बारे में जानना नहीं चाहता। उसका एक अपना लक्ष्य है, अपना कर्त्तव्य पूरा करने का लक्ष्य जिसे वह या तो पूरा करेगा या जान दे देगा...

इन दिनों के दौरान कमिसार यहाँ नहीं था। आखिर जब वह इस डिब्बे में आया तो चारी स्वयं तकिये से अपना सिर ऊपर उठाने लगा था। किन्तु उसने कमिसार के स्वागत में सिर ऊपर नहीं उठाया और उदासी से दीवार की ओर देखता हुआ लेटा रहा।

कमिसार के साथ तेलेशोव भी आया था। वे दोनों बैठे रहे, नर्स से बातचीत करते रहे। कमिसार को अचानक ही यह एहसास हुआ कि चारी बहुत सुन्दर है। पहले उसने इस बात

की ओर कभी ध्यान नहीं दिया था। इस समय भी उसके दिमाग में यह ख्याल नहीं आया था। हुआ यह कि कमिसार ने घायल की ओर देखती हुई नर्स की एक नजर ताड़ ली थी...

चारी का पीला पड़ा हुआ चेहरा सुन्दर, तीखे और साहसपूर्ण नाक-नक्शे के कारण आश्चर्यचकित करता था। केवल आँखें ही सब कुछ चौपट कर देती थीं। यों तो वे भी बहुत ही खूबसूरत थीं, किन्तु उनमें गुस्से की ऐसी ठंडी-ठंडी आग जलती थी कि जल्दी से गाड़ी के अस्पताली डिब्बे से बसंत की बाहरी दुनिया में भाग जाने को मन होता था।

किन्तु चारी की ओर देखनेवाली आग से दहशत नहीं होती थी।

सम्भवतः चारी स्वयं यह नहीं समझता था कि उसके अन्दर क्या उथल-पुथल हो रही है। जब नर्स निकट होती, तो वह शान्त रहता। किन्तु जैसे ही, बेशक एक मिनट को भी, वह कहीं जाती, वैसे ही चारी बेचैन हो उठता, आसपास की हर धीमी-सी आहट पर भी कान देता और किसी चीज की प्रतीक्षा करता। जब वह लौटती, तो घायल उसे ध्यान से देखता। पर उसने उससे कभी एक शब्द भी नहीं कहा था...

एक शाम को चारी को बुखार हो गया। देमीदको आया, उसने चारी के घाव की जाँच की, नर्स को तसल्ली दी और चला गया। बुखार जल्द ही उतर गया और चारी की आँख लग गयी। वह अचानक ही जागा मानो किसी ने उसे धकिया

दिया हो। जरा-जरा आँखें खोलकर उसने देखा कि नर्स मेज के गिर्द बैठी है और लैम्प तथा उस किताब को एक तरफ हटाकर जिसे वह सारी शाम पढ़ती रही थी, उसकी ओर अजीब तथा धुँधली-धुँधली नजर से देख रही है। वह देर तक ऐसे ही बैठी रही, फिर उठी और पलंग के करीब आयी। चारी तो बुत बना हुआ लेटा था। अचानक उसे नर्स की साँस सुनाई दी। साँस अधिकाधिक निकट आती गयी और फिर उसने अपने माथे पर लड़की के गर्म होंठों का बहुत ही हल्का-सा स्पर्श अनुभव किया।

नर्स धीरे-से हटी और अपनी जगह पर लौट गयी। नजर ऊपर उठाने पर उसने देखा कि घायल कोयले जैसी .काली-काली आँखों को फैलाये हुए उसे ताक रहा है। वह शर्म से लाल हो गयी और उसने झटपट दूसरी ओर मुँह फेर लिया। इसके बाद उसने लैम्प बुझाया और डिब्बे से बाहर चली गयी।

अगली सुबह चारी बहुत ध्यान से नर्स की ओर देखता रहा। किन्तु नर्स ने उसकी ओर नहीं देखा। इसके बाद वह डिब्बे से बाहर चली गयी जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था। शाम को खास दस्ते के दो सैनिक डिब्बे के पास आये। नर्स खूब खिलखिलाकर उनके साथ हँसती बतियाती रही। घायल दाँत भींचे हुए लेटा रहा।

दिन गुजरते गये। नर्स अब उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देती थी। इतना ही नहीं, वह तो उसके प्रति कुछ रुखाई भी दिखाने लगी।

घायल अब खड़ा होने लगा था। शामों को वह डिब्बे से बाहर आकर सड़े हुए पुराने स्लीपर पर बैठ जाता। स्टेशन की ओर से वोल्गा क्षेत्र के गीत हवा के पंखों पर उड़ते हुए आते। कभी-कभी किसी गीत में नारी की गूँजती हुई प्यारी आवाज भी घुली-मिली रहती और चारी सिहर उठता। नर्स के लौटने तक वह ऐसे ही बैठा रहता। हर बार कोई न कोई व्यक्ति उसके साथ होता। नर्स को दूर से देखकर ही घायल डिब्बे में चला जाता...

एक शाम को वह सदा की भाँति डिब्बे के करीब बैठा हुआ था। अचानक उसने देखा कि स्टेशन की ओर से दो व्यक्ति आ रहे हैं--सन्तरी और उसके साथ एक तुर्कमानी व्यक्ति। ध्यान से देखने पर उसने अपने मित्र तागान को पहचान लिया।

"यह तुम्हारा परिचित तुम्हें खोज रहा है!" सन्तरी ने कहा और तागान की ओर सन्देह भरी दृष्टि डालता हुआ चला गया। वे दोनों ही रह गये...

सुबह हुई तो नर्स ने घायल को गायब पाया। बिस्तर अस्पताल का नीला कम्बल ढककर ढंग से ठीक किया हुआ था।

तेलेशोव और मामेदोव भागे हुए कमिसार के पास गये। मेज पर तिहरे ढक्कनवाली चाँदी की बड़ी-सी घड़ी रखी थी। "तो अब क्या किया जाये?" तेलेशोव ने हतप्रभ होते हुए पूछा। "जान से हाथ धो बैठेगा नौजवान। उससे तो अभी चला भी नहीं जाता। ढूँढ़ना चाहिए..."

"कोई जरूरत नहीं ढूँढ़ने की," रहीमोव ने अचानक कहा और फिर बड़े विश्वास के साथ दोहराया--"कोई जरूरत नहीं!"

"कल शाम को जरूर शैतान ही उस बासमाच को यहाँ लाया था!" दिमाकिन ने खीझकर कहा। "अगर मैंने उसे शमुर्दखान के यहाँ न देखा हो तो बेशक मेरी आँखें फूट जायें..."

सूखी हुई झील की चिकनी जमीन पर दो व्यक्ति लगामें ढीली छोड़े हुए घोड़ों पर जा रहे थे। वे उन पहाड़ों की ओर जा रहे थे जो उत्तरी गर्म हवाओं के मार्ग में दीवार बनकर खड़े हुए थे। उनमें से एक दूसरे की बड़ी चिन्ता करते हुए उसे सहारा दिये हुए था। चारी बड़ी मुश्किल से काठी पर बैठा हुआ था। उसके लबादे के नीचे छाती और कन्धों पर सफेद पट्टियों का जाल-सा फैला हुआ दिखायी दे रहा था। वे बहुत देर तक पहाड़ों द्वारा आधे आकाश के ढके जाने तक, सवारी करते रहे। पहाड़ के दामन में एक टीला सामने उभरा। उसके ऊपर एक तबाहहाल मीनार खड़ी थी। यह टीला तो मानो वह सन्तरी था जो रेतीले सागर के प्रारम्भिक प्रहारों को अपने ऊपर सहन करता था।

चारी को अब दस्ते से कुछ लेना-देना नहीं था। तागान ने उसे खबर दी थी कि शमुर्दखान पहाड़ों के पार और बहुत सम्भव है कि और भी अधिक दूर भाग गया है और अब जल्द लौटनेवाला नहीं है। चारी ने दस्ते से भाग जाने का निर्णय किया।

तागान का पिता गढ़ी के निकटवाले तबाहहाल गाँव में

अपने परिवार के साथ लौट आया था। तागान ने दोस्त से यह कहा कि वह उन्हीं के घर में रहे और बाद में तागान के बूढ़े सरदार के पास चला जाये जिसे ऐसे नौजवानों की जरूरत थी। वहीं वह शमुर्दखान के लौटने की प्रतीक्षा करेगा ताकि उससे पूरी तरह बदला ले सके। ऐसा करना तो इसलिये और भी अधिक ठीक होगा, क्योंकि तागान के सरदार की आँखों में शमुर्दखान रूसियों से कम नहीं खटकता था।

चारी तागान के परिवार में रहने को तो राजी हो गया पर बासमाचों के पास जाने से उसने इन्कार कर दिया। बहुत सम्भव है कि तागान के सरदार का खास दस्ते से टकराव हो। तब चारी रहीमोव तेलेशोव चीनी चेन और कमाण्डर पेल्टीन पर तो गोली नहीं चला सकेगा। वह स्वस्थ होगा, थोड़ा आराम करेगा और फिर शमुर्दखान को खोजेगा।

चारी हर दिन कारी-काला में जाता, बहुत देर तक घण्टों खड़ा हुआ उस जगह को देखता रहता, जहाँ दुश्मन ने उसकी आँखों में थूका था। इस समय उसे देखने से दहशत होती थी...

इसके बाद वह बाहर आकर गढ़ी की मुंडेर पर बैठ जाता और शाम होने तक वहीं बैठा रहता। दूर से ऐसा प्रतीत होता कि झबरीली टोपी पहने हुए यह निश्चल मूर्ति भी पत्थर की ही बनी हुई है।

चारी अपने सामने गाँव की टूटी हुई मिट्टी की बाड़ी को देखता रहता। वहाँ, गाँव के छोर पर, उनका पहियेदार घर था...उसकी नाक घरेलू चूल्हे के बहुत ही जाने-पहचाने मुहाने

सन्ध्याकालीन धुएँ को फिर से अनुभव करती। हरी कँटीली झाड़ी के रस की भाँति कड़वी आँसू की एक बूँद उसकी आँख से टपक पड़ती और गाल की पथरायी हुई हड्डी पर से बहती हुई धूल में जा गिरती।

रेगिस्तान में जल्दी अँधेरा हो जाता है। आज चारी पहियेदार घर में बैठा, खुले हुए दरवाजे में से चूल्हे के सुखद अंगारों को देख रहा था। तागान का पिता, ऊँचे कद का समझदार बुजुर्ग था। उसे बेटे द्वारा अपनाया गया जिन्दगी का .रास्ता पसन्द नहीं था। नमाज अदा करने के बाद वह घर में आया और सामने बैठ गया।

"अल्लाह ने सभी कुछ हमारी जिन्दगी के लिए बनाया है..." वह चारी से बोला। "धरती, पानी और हवा तो सभी जानदारों के लिए जरूरी हैं। वह आदमी सबसे बड़ा गुनाह करता है जो दूसरे से खुदा की ये नेमतें छीनना चाहता है..."

सुनसान गाँव में, जहाँ रेगिस्तान की रेत बढ़ आयी थी, बुजुर्ग ने थोड़ी-सी जमीन साफ की, मिट्टी में सिंचाई के लिए छोटी-सी नाली खोद ली और फिर से वहाँ अंगूरों की कुछ बेलें लगा दीं। उनमें से ताजे हरे अंकुर भी निकल आये थे।

"अल्लाह को जो मेहनत सबसे ज्यादा पसंद है और जिसकी वह सबसे ज्यादा इज्जत करता है, वह है हलवाहों की मेहनत..." बूढ़ा अकसर ऐसे कहता।

घाव कुछ समय बाद भर गये। अब चारी की छाती में बिल्कुल दर्द नहीं होता था। उसने मैली-कुचैली पट्टियाँ उतार दीं।

अब वह हर दिन खेतीबारी में बुजुर्ग की थोड़ी-बहुत मदद करता। उसे आसपास का जीवन शान्त और चैन भरा प्रतीत होता। कारी-काला की प्राचीन दीवारों के करीब कोई भी दिखाई न देता।

शामों को चारी चूल्हे के करीब बैठकर समझदार बुजुर्ग की बातें सुनता।

रातों को वह सपनों में रहीमोव, तेलेशोव, मामेदोव, कमाण्डर पेल्टीन और कमिसार सवीत्स्की से बातें करता। वह उन्हें कुछ समझाता, कुछ प्रमाणित करता।

एक सुबह को चारी ने घोड़े पर जीन कसा, बुजुर्ग से विदा ली और चल दिया।

दूर से ही इस बात की ओर चारी का ध्यान गया कि स्टेशन पर सब कुछ सदा की भाँति ही नहीं है। उसने देखा कि खास दस्ते के कुछ सैनिक मैदान में से तेजी से घोड़े दौड़ाते हुए उस जगह की ओर जा रहे हैं, जहाँ वे राजनीतिक शिक्षा के लिए जमा हुआ करते थे। वहाँ लोगों की भारी भीड़ जमा थी। लाल लबादे और खाकी वर्दियाँ घुली-मिली दिखायी दे रही थीं।

चारी चौकीवाली इमारत के पास से अपना घोड़ा बढ़ाये लिये जा रहा था कि अचानक जहाँ का तहाँ रुककर रह गया। दरवाजा खुला और धूप के कारण आँखें सिकोड़े हुए थानेदार बाहर आया!

उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा। थानेदार ने मानो उसे पहचान लिया और एक ओर को नजर फेर ली। थानेदार के

पीछे सन्तरी की संगीन चमक रही थी।

थानेदार साहब को वहाँ ले जाया गया, जहाँ बेचैन लोगों की भीड़ जमा थी। चारी बगल से चक्कर काटकर वहाँ गया। उसने देखा कि दहशत पैदा करनेवाला थानेदार बुढ़ा गया है उसकी अकड़ निकल गयी है और वह दुबला-पतला हो गया है। पद-चिह्न की फीतियों से वंचित अफसरोंवाला पुराना ओवरकोट उसके कन्धों पर झूल-सा रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपनी लम्बी बाहों का क्या करे। वह घबराहट में कभी तो उन्हें कोट की जेब में ठूँसता था और कभी पीठ पीछे बाँध लेता था।

चारी उसी जगह जा बैठा जहाँ वह राजनीतिक शिक्षा के समय आँखें बन्द करके बैठा करता था। किन्तु अब उसकी आँखें विस्फारित थीं। वे थानेदार के चेहरे पर जमी हुई थीं जो सन्तरियों के पहरे में उसके सामने बैठा हुआ था।

कमिसार अपनी सदावाली जगह पर बैठा था। वह उस विशेष न्यायाधीशमण्डल में शामिल था, जो भूतपूर्व पुलिस अफसर दूदनिकोव के मामले पर विचार कर रहा था।

सब कुछ ऐसे ही हो रहा था जैसे कि राजनीतिक शिक्षा के समय होता था। केवल इतना ही अन्तर था कि मेज पर लाल मेजपोश बिछा हुआ था और कमिसार के निकट चार अन्य व्यक्ति बैठे थे। उनमें से एक भेड़ की खाल की टोपी पहने था। हाँ, चारी के पीछे भी आज पहले की तुलना में कहीं अधिक लोग जमा थे। यहाँ इर्दगिर्द के सभी गाँवों के प्रतिनिधि आये थे।

रुईदार जाकेट और लबादा पहने हुए एक के बाद एक गवाह सामने आता। वे दुभाषिये के प्रश्नों के धीमे-धीमे उत्तर देते और अविश्वासपूर्ण दृष्टि से कभी अपराधी की तरफ और कभी न्यायाधीशों की ओर देखते। वे बताते कि कैसे गाँव जलाये गये, परिवारों को कत्ल किया गया और देहकानों को घोड़ों की पूँछों से बाँधकर घसीटा गया...शमुर्दखान ने यह सब कुछ अपने वफादार मददगार, इसी व्यक्ति के साथ मिलकर किया जो इस समय सिर झुकाये बैठा था और लाल बालोंवाली उँगलियों की मुट्ठियाँ बाँधता और खोलता था।

जाहिर है कि चारी इस मुट्ठी को भूला नहीं था। बहुत सम्भव है कि वह तोड़ गये दाँतों से बहनेवाले खून का जायका भी मुँह में अनुभव कर रहा हो। अपराधी जब-तब चारी की भयानक दृष्टि को अपने चेहरे पर टिकी हुई अनुभव करता और उसकी आँखों में दहशत झलक उठती।

सबके बाद अपराधी को अपनी बात कहने का अवसर दिया गया। वह उठा, उसने आँखें झपझपायीं और वह गुमसुम खड़ा रहा। वह कहता भी तो क्या।

अध्यक्ष ने दण्ड की घोषणा की–"... क्रान्ति के नाम पर जारशाही जल्लादों के जुए से मुक्त हुए लोगों की ओर से... इसे मृत्यु-दण्ड दिया जाता है।"

"चौबीस घण्टों में गोली मार दी जाये!" अध्यक्ष ने अपनी ओर से जोड़ा।

चारी रात भर चौकीवाली इमारत के सामने बैठा हुआ दरवाजे की ओर देखता रहा।

वह अकेला ही नहीं, अन्य बहुत-से लोग भी इस रात जाग रहे थे। देहाती अपनी आँखों से यह देखना चाहते थे कि क्या सचमुच ही रूसी लोग थानेदार साहब को गोली का निशाना बनायेंगे...

जब जरा पौ फटी तो तेलेशोव ने सैनिकों को कतार में खड़ा किया। दूदनिकोव को स्टेशन के परे खुले मैदान में ले जाकर पुरानी मुंडेर के पास खड़ा कर दिया गया। चारी दस कदम की दूरी पर खड़ा रहकर प्रतीक्षा करने लगा।

तेलेशोव की आवाज कठोर और अपरिचित-सी थी। ऐसी आवाज में उसने चारी से कभी बात नहीं की थी।

"वर्ग-शत्रु पर..." तेलेशोव ने कहा।

छोटी-सी "ठाँय" की आवाज हुई थानेदार काँपा और जमीन पर ढेर हो गया। चारी करीब गया उसने देखा और एक ओर को हट गया। गुमसुम और सोच में डूबे हुए देहाती अपने-अपने गाँवों की ओर चल दिये।

"तो तुम लौट आये?" नर्स ने पूछा। "तुम पूरी तरह इलाज कराये बिना ही क्यों भाग गये थे?! बुद्धू कहीं के..."

नर्स चारी को गाड़ी के अस्पताली डिब्बे में ले गयी और वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलता गया। देमीदको ने चारी के घावों के निशान देखे और अपनी मजबूत हथेली से उसका कन्धा थपथपाया।

"बिल्कुल स्वस्थ हो साँड की तरह...!"

इसके बाद उसने चारी को धातु के दो छोटे-छोटे टुकड़े दिये।

दस्ते में चारी की ओर बिल्कुल दूसरा ही रुख अपनाया गया। कमाण्डर पेल्टीन ने उसे देखकर मुँह फेर लिया। कमिसार ने कड़ाई से नजर मिलायी।

"सुनो नौजवान," रहीमोव बोला। "अगर मजदूरों-किसानों की सेवा करना चाहते हो तो ढंग से करो। यहाँ अलामानी धावोंवाला मामला नहीं है! मनमर्जी करते हुए दस्ते से गायब हो जाने के लिए कमाण्डर तुम्हारी दस दिन की गिरफ्तारी का आदेश देता है। फिर ऐसा करोगे तो तुम्हें फौजी अदालत के सामने पेश किया जायेगा। जाओ जाकर कपड़े बदलो...!"

चारी ने अपनी फौजी वर्दी पहन ली और इसी समय पेटी उतारकर दे दी। उसे चौकीवाली इमारत में ले जाया गया। वह उसी तख्ते पर जा लेटा जहाँ एक रात पहले थानेदार लेटा रहा था।

चारी को नींद नहीं आ रही थी। दीवार के पीछे सन्तरी के सधे हुए कदमों की आवाज नगर की जेल के सन्तरी के कदमों के समान ही थी। किन्तु नहीं, बात बिल्कुल ऐसी ही नहीं थी। अभी पिछली रात ही तो यहाँ लेटा हुआ श्रीमान थानेदार, जिसे सुबह गोली से उड़ा दिया गया था, इन कदमों की आहट सुनता रहा था। किन्तु वहाँ शहर की जेल में उसी ने चारी के दाँत तोड़ डाले थे...

"वर्ग-शत्रु पर!" कहाँ सुने थे चारी ने ये शब्द? हाँ, हाँ, कमिसार ने कई बार इन्हें उस समय दोहराया था जब वह आँखें मूँदे हुए बैठा रहा करता था...थानेदार साहब--वर्ग-शत्रु।

हाँ और शमुर्दखान भी। किन्तु शमुर्दखान से तो चारी ही सबसे पहले अपना हिसाब चुकता करेगा।

सुबह को मामेदोव ताजा रोटी लाया। किन्तु चौकी के संचालक तेलेशोव ने वह रोटी ले ली।

"फौज की नौकरी नौकरी है..." उसने कड़ाई से कहा। "जार की नौकरी तो नहीं बजाते हैं।"

हमेशा ही लाल-पीला हो उठनेवाले और झगड़ालू मामेदोव ने इस बार सिर झुका लिया और एक भी शब्द कहे बिना बाहर चला गया। एक मिनट बाद चारी ने देखा कि तेलेशोव सदा की भाँति प्यार भरी नजर से उसकी ओर देख रहा है।

चारी की नजर से नजर मिलते ही तेलेशोव ने मुँह फेर लिया। अब वह पहले की भाँति चौकी का गम्भीर और कठोर संचालक बन गया था। किन्तु चारी उससे नहीं डरता। दिन को चारी काम करता--रसोईघर में आलू छीलता बारकों के फर्श धोता घुड़सालें साफ करता और रातों को सोचता...

पिछली बार की तरह इस बार भी शमुर्दखान अचानक ही नमुदार हुआ। उसका गिरोह अब पहले से कहीं अधिक छोटा था। अब वह रेलवे स्टेशनों पर धावा बोलने की जोखिम नहीं उठाता था।

अब वह गीदड़ की तरह रेगिस्तान में मारा-मारा फिरता था, रेवड़ों को भगा ले जाता था, उन्हें खत्म कर डालता था। काले रेगिस्तान में कहीं बहुत दूर उसने अपना अड्डा बनाया था। खास फौजी दस्ता दो सप्ताहों से उसके पदचिह्नों का

पीछा कर रहा था।

इन पद-चिह्नों पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। मान लीजिये कि अभी-अभी नर्म और खिसकनेवाली रेत पर घोड़े का पाँव पड़ा है। पासवाला रेत का टीला हिल-डुल उठता है और ढेर सारी रेत चुपके से उस चिह्न के ऊपर आ गिरती है। हवा उसे समतल कर देती है। अब कोई कभी यह अनुमान नहीं लगा पायेगा कि यहाँ से अभी-अभी एक धुड़सवार गुजरा है।

घोड़ों और इन्सानों ने आँसू की भाँति निर्मल तथा ठंडा जल छककर पिया। ऊँट आज अन्य दिनों की तुलना में अपने मार्ग पर अधिक देर तक आता-जाता रहा। खास फौजी दस्ता भोर होने तक इसी कुएँ पर रहेगा।

कमिसार ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि यहाँ के चरवाहे चारी हसनोव को अच्छी तरह जानते हैं। वे चारी के निकट बैठे हुए उससे नपे-तुले सवाल पूछ रहे थे। चारी भी उसी तरह नपे-तुले उत्तर देता था। रात का खाना खत्म होने के बाद एक बूढ़े चरवाहे ने दोतारा हाथ में लिया। सभी उँगलियों से तारों को धीरे-धीरे झनझनाते हुए उसने ऊँची और कर्णकटु आवाज में गाना शुरू कर दिया। उसका गाना रूसी मैदानों के लम्बी लयवाले और सुरीले गानों से बिल्कुल भिन्न था।

लाल सेना का युवा सैनिक कोपिलोव ठठाकर हँस दिया। तीन-चार अन्य व्यक्तियों के चेहरों पर भी मुस्कान झलक उठी।

कमिसार ने सभी को बहुत ध्यान से देखा। उसने यह

महसूस किया कि बाहर से शान्त दिखायी देनेवाला चारी इस समय भीतर ही भीतर बुरी तरह उबल रहा है, तार की भाँति तना हुआ है। चारी ने कोपिलोव को घूरा और फिर कमिसार के चेहरे पर ग़ुस्से से भरी हुई प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। तेलेशोव ने इस नजर को ताड़ लिया।

"तुम दाँत क्यों निकाल रहे हो?" उसने कोपिलोव से शान्त भाव से पूछा। "एक का गाना सुनकर तुम्हें हँसी आ रही है, दूसरे की नाक तुम्हें अच्छी नहीं लगेगी। और इन्सान--देखो तो वे कितने हैं इस दुनिया में। केवल र्याजान ही तो नहीं है..."

"ऐसे ही, चाचा स्तेपान..." कोपिलोव के चेहरे से मुस्कान गायब हो गयी।

"हाँ, हाँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। नहीं पसन्द तो न सुनो। पर हँसने का क्या काम है। तुम्हें हँसी आ रही है, पर दूसरा आदमी नाराज हो सकता है, उसका तो दूसरों पर से विश्वास ही उठ सकता है..."

कमिसार की नजर चारी पर जमी रही। बातचीत रूसी भाषा में हो रही थी--चारी समझता है या नहीं? अब तो वह समझता है।

शमुर्दखान रेगिस्तान में ही कहीं खोकर रह गया। बहुत मुमकिन है कि वह बालू के नीचे ही कहीं दबकर रह गया हो या सम्भव है कि फिर से पहाड़ों के उस ओर चला गया हो और वहाँ अपने घावों की मरहम-पट्टी कर रहा है। कारण चाहे कुछ भी

क्यों न हो, रेगिस्तान में उसके सम्बन्ध में. अफवाहें फैलनी बन्द हो गयीं। विभिन्न स्थानों पर उसके कोई बीसेक पिट्ठुओं को बन्दी बनाकर दस्ता अपने केन्द्र में लौट आया।

वहाँ दस्ते के लिए नया आदेश आया हुआ था, फौजी गाड़ी इन्तजार कर रही थी। दस्ते को चौबीस घण्टों के भीतर ही फर्गाना घाटी के क्षेत्र में बहुत बड़ी सैनिक कार्रवाई के लिए रवाना होना था।

तीस लोगों को यहीं रहना था। चारी हसन आधे दिन तक मुख्य सैनिक कार्यालय के आसपास घूमता रहा और फिर अन्दर गया। वहाँ रहीमोव को देखकर उसने कहा कि मुझे यहीं रहने दिया जाये।

"मैं कमिसार से ऐसा करने के लिए नहीं कहूँगा," रहीमोव ने उत्तर दिया। "तुम्हारा नाम जानेवालों की सूची में लिखा हुआ है और तुम हमारे साथ जाओगे। नहीं जाना चाहते तो अभी यहाँ से चलते बनो और फिर कभी लौटकर नहीं आना...!"

चारी सिर झुकाये हुए घुड़साल में गया, घोड़े को बाहर निकाला और उसे गाड़ी के डिब्बे की ओर ले गया।

"मुँह किसलिये लटका लिया? स्टेशनों पर चाय पीने यहाँ आ जाना! "अस्पताली डिब्बे में से किसी ने पुकार कर कहा। चारी ने उदास भाव से उधर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

कई धचकों-झटकों के बाद फौजी गाड़ी आखिर अपनी जगह

से आगे बढ़ी। चारी खुले हुए दरवाजे के पास उकड़ूँ बैठा हुआ टीसते मन से दूरवर्ती पहाड़ों को देखता रहा। वह अपने प्यारे टीले जिस पर गढ़ी थी और अपने वंश के लोगों की उन कब्रों को पीछे छोड़े जा रहा था जिनका उसने अभी तक प्रतिशोध नहीं लिया था। गाड़ी के पहियों की ताल के साथ सिर हिलाते हुए चारी ने धीरे-धीरे वही गीत गुनगुनाना शुरू किया जो बुजुर्ग चरवाहे ने कुएँ के करीब बैठे हुए गाया था...

खैर कोई बात नहीं, कभी मैं इसी तरह यहाँ से गया था और फिर लौट आया था। इस बार भी मैं लौट आऊँगा। शमुर्दखान से मैं अपना न्यायपूर्ण बदला तो लेकर ही रहूँगा।

पाँचवाँ अध्याय

छः महीनों से चारी हरी भरी फर्गाना घाटी में इधर-उधर भाग-दौड़ रहा था, किजिल-कूम की लाल धूल फाँकता था और फिर कभी घोड़े की लगाम हाथ में थामे हुए पामीर-अलाय पर्वत की सफेद बर्फीली चढ़ाइयाँ चढ़ता था। केवल आज ही खास दस्ता तेज कारा-दरिया के तट के साथ-साथ कोई दो सौ कोस की मंजिल तय करके अन्दीजान पहुँचा था, जहाँ बख्तरबन्द गाड़ी 'रोजा लुक्जेमबुर्ग' उस का इन्तजार कर रही थी।

जिस गाड़ी में दस्ता सफर कर रहा था, उसका चक्कर लगाते हुए चेन की तीखी और कण्ठ्य आवाज सुनकर कमिसार रुक गया। चीनी जल्दी-जल्दी से हाथ हिलाता हुआ चारी को कुछ समझा रहा था। वे दोनों पटरी पर उकडू बैठे हुए थे। उनके सामने तेलेशोव जा डटा था। वह सिगरेट के कश लगाता हुआ चीनी की बात ध्यान से सुन रहा था और जब-तब मानो अनुमोदन करते हुए सिर हिला देता था। मामेदोव पास ही में खड़ा हुआ था। अब ये चारों हमेशा इकट्ठे दिखायी देते थे...

चीनी अचानक उछलकर खड़ा हुआ और तब कमिसार को उसके हाथों में मुख्य सैनिक कार्यालयवाले डिब्बे की स्लेट

दिखायी दी। उसपर एक देहकान को बड़ी अच्छी तरह से चित्रित किया गया था जो हाथ में कुदाल लिये हुए घुटनों तक पानी में खड़ा था। सैनिक ऐसे देहखानों को मार्ग के दोनों ओर हर दिन देखते थे। चीनी ने जल्दी-जल्दी कुछ रेखायें और खींचीं और इस तरह थके-हारे किसान के ऊपर कीमती लबादा पहने और हाथ में प्याला लिये हुए आत्मतुष्ट मोटा-ताजा बाई बैठा हुआ दिखायी देने लगा।

"हो-हो! वर्ग-सत्रु!...हम गोली मारता...!" चेन चिल्लाया और बाई को घूँसा दिखाकर धमकाया।

"वर्ग-शत्रु!" चारी ने बिल्कुल सही तौर पर दोहराया और अचानक चीनी से खड़िया लेकर अपने ही ढंग से बाई को चित्रित करने लगा।

राजनीतिक शिक्षा के समय अब चारी आँखें मूँदकर नहीं बैठता था। कमिसार कई वार्ताओं को अब वह अधिकाधिक समझने लगा था। स्वयं जीवन उसे इन्हें समझने में सहायता देता था। उसने पराये दुःख-दर्द बहुत देखे थे। उसने बहुत-से जले हुए गाँवों को देखा था। वे गाँव उज्बेकिस्तान के थे, ताजिकिस्तान और किर्गीजिया के थे पर उनमें विशेष अन्तर नहीं था। यद्यपि वे लोग, जिनका अब चारी पर्वतों और घाटियों में पीछा करता फिर रहा था, कुछ भिन्न किस्म के लबादे और टोपियाँ पहनते थे, पर जुल्म और अत्याचार करने की दृष्टि से उसके जानी दुश्मन शमुर्दखान के समान ही थे...

अन्दीजान लौटते ही चारी हर शाम को अस्पताली डिब्बे में जाने लगा। नर्स और वह आमने-सामने बैठे हुए देर तक एक-दूसरे को ताकते रहते।

"चुप्पी क्यों साधे हो?!" नर्स ने बेधड़क पूछा। पर चारी चुप रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या उत्तर दे...

स्टेशन की केंटीन पर माशा काम करती थी--हँसोड़ उठी हुई नाकवाली और शरारती। वह अपनी भौंहें खूब रंगती और कमाण्डरों से भेंट होने पर आँखें भी खूब मटकाती। एक रात को एक-दूसरे के ऊपर रखे हुए लट्टों के पास से गुजरते समय चारी को किसी की गहरी साँस सुनाई दी। फर्गाना घाटी के उजले चाँद की बिखरी चाँदनी में उसने लट्ठों के पीछे माशा को बैठे देखा। अन्दीजान में तैनात काजान रेजीमेण्ट की सैनिक टुकड़ी का हृष्ट-पुष्ट नौजवान कमाण्डर उसके करीब बैठा हुआ उसे बांहों में कस रहा था...चारी ने झटपट मुँह फेर लिया और अपने डिब्बे में चला गया। उसे अपने पीछे एक नारी का उत्साह और खुशी भरा ठहाका सुनाई दिया...

चारी को रात भर नींद नहीं आयी। अगली शाम को वह सदा की भाँति अस्पताली डिब्बे में गया जहाँ उसने जिन्दगी और मौत के बीच डूबते-उतराते हुए कितने ही दिन बिताये थे।

वह देर तक डिब्बे के अध-खुले दरवाजे को देखता रहा और जब नर्स दिखायी दी तो काँप उठा। वह कूदकर रेल की पटरी पर उसके करीब आ गयी।

"तुम चुप्पी क्यों साधे हो?!" नर्स ने पूछा।

"आन्या...!" चारी ने धीरे सेर कहा। आन्या की आँखें हैरानी से फैल गयीं। चारी ने पहली बार उसका नाम लिया था। आन्या केण्टीनवाली माशा की चोली जैसी ही स्वेटर पहने थी...चारी ने अप्रत्याशित ही हाथ बढ़ाकर उसका वक्ष छू लिया। आन्या हकबकाकर उसे गौर से देखने लगी... अचानक आन्या ने उसे जोर से धक्का दिया और मुँह पर कसकर तमांचा जड़ा।

"तुम!...तुम!..." वह सिसकने लगी, फिर खुलकर रो पड़ी और डिब्बे में भाग गयी। साथवाले डिब्बों से आवाजें सुनाई दे रही थीं।

चारी मुड़ा और स्टेशन से अन्दीजान की धूल भरी सड़क की ओर लड़खड़ाता हुआ बढ़ चला।

धुएँ के घने बादल उड़ाती हुई "रोजा लुक्जेमबुर्ग "बख्तरबन्द गाड़ी अपनी रफ्तार बढ़ाने लगी। अन्य फौजी दस्तों के साथ-साथ खास फौजी दस्ता भी स्तेपी में बिखर गया...

कुछ ही दिनों मैं वहाँ दुश्मन का सफाया कर दिया गया। बुखारा के अमीर की शासन-मीनार समय के कारण पुरानी पड़ी और जर्जर हुई दीवार की भाँति ढह गयी। ऊँची सफेद पगड़ियाँ पहने हुए सफेद गार्ड-अफसर, चर्बी के कारण मोटे थलथल हुए कर्मचारी और अमीर की कोमलांगी और कलहप्रिय पत्नियाँ जहाँ-तहाँ भाग गयी थीं।

जब महल की मोर्चाबन्दी पर धावा बोला गया तो उस

समय चारी के बायें हाथ पर हल्का-सा घाव हो गया। गोली कोहनी के कुछ ऊपर माँस को छेद गयी। तेलेशोव ने उसके घाव पर कसकर पट्टी बाँधी और ऊपर से फटी हुई फौजी कमीज की पट्टी कस दी।

खास फौजी दस्तेवाले महल की चहारदीवारी के पास खड़े थे। वे सिगरेटों के कश लगाते और हँसी-मजाक करते हुए लड़ाई के बारे में अपनी-अपनी राय जाहिर कर रहे थे। करीब से फौजी साज-सामान से लदी हुई गाड़ियाँ तेजी से गुजर रही थीं। उन में से एक गाड़ी घड़ी भर को रुकी। उस में से नर्स कूदकर बाहर आई और भाग कर सैनिकों के पास पहुँची।

"कौन...कहाँ घायल हुआ?" बुरी तरह से हाँफते हुए उसने पूछा।

सिंचाई-नाली के करीब चारी को बैठा हुआ देखकर नर्स उसकी ओर लपकी।

"हाथ घायल हुआ है?! मुझे तो कहा गया था..." वह शान्त भाव से तेलेशोव द्वारा बाँधी गयी पट्टी खोलने लगी। घाव देखकर वह बिल्कुल निश्चिन्त हो गयी, उसने फुर्ती से नयी पट्टी बाँधी और गलपट्टी में हाथ को सहारा दे दिया।

"सुबह वहाँ आइयेगा..." चारी की ओर देखे बिना उसने कहा।

चारी ने हिचके-झिझके बिना उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

कोई दो सप्ताह बाद जब अमीर के बचे-बचाये गिरोहों का

काम तमाम कर दिया गया तो दस्ते को पहलेवाले केन्द्र लौटने का आदेश मिला। काले मरुस्थल में शमुर्दखान फिर से ऊधम मचाये हुए था।

डिब्बे के पूरी तरह खुले हुए दरवाजे के सामने उकड़ू-बैठा हुआ चारी वही पुराना गीत गुनगुनाने लगा। डिब्बे में प्यारी-प्यारी और तन सहलाती हुई हवा के झोंके आने लगे। उनमें एमशान पौधों की नशीली सुगन्ध, जली हुई कँटीली झाड़ियों के कडुवा धुएँ की गन्ध और बहुत ही हल्का नमकीन जायका बसा हुआ था...गर्मी के दौरान रेगिस्तान में बिखरी हुई सभी झीलें सूख जाती हैं। सफेद नमक का चूर्ण झीलों के तल में पतली चमकती हुई तहों के रूप में जम जाता है। हवा हल्के-फुल्के अदृश्य लवण-कणों को अपने साथ उड़ा ले जाती है और वे भारी-भरकम बालू के ऊपर एक सिरे से दूसरे सिरे तक उड़ते फिरते रहते हैं। इसीलिये सूखे और पपड़ी जमे हुए होंठों पर कभी-कभी नमक का जायका महसूस होने लगता है।

विशेष दस्ते ने उस कुएँ पर हमला किया जो उसे एक बार वसन्त में भी दुश्मन से छीनना पड़ा था। बासमाच अब जमकर लड़ाई नहीं लड़ते थे। रेतीले टीलों के पीछे बिखर कर वे जब-तब पक्का निशाना साधकर कुछ गोलियाँ चलाते।

चेन सदा की भाँति "मक्सीम" मशीनगन के पीछे बैठा हुआ था। चमड़े की पीली जैकेट पहने हुए कोई रेंगकर पीछे से उसकी ओर आया। चेन ने उस क्षेत्र की तरफ इशारा करते हुए जहाँ दुश्मन गोलियाँ बरसा रहा था, हाथ झटका और फिर

से लड़ाई देखने लगा। भेस बदलकर पीछे से आनेवाले बासमाच ने चेन की पीठ में तीन गोलियाँ मार दीं...

पुराने, पाट दिये गये कुएँ के करीब ही मशीनगनर चेन जमीन पर पड़ा हुआ था। पूरी तरह होश-हवास में रहते हुए उसने अन्तिम साँस ली। दस्ते के वीर सैनिक चुपचाप उसके गिर्द खड़े थे। कमिसार और कमाण्डर तथा उनकी बगल में ही तेलेशोव, चारी और मामेदोव चेन के निकट खड़े थे। चेन अपनी चकाचौंध करनेवाली मुस्कान के साथ उनकी ओर देखकर मुस्करा दिया। किन्तु उसकी काली चीनी आँखों के सामने मौत नाचती दिखायी दे रही थी। उसने अन्तिम बार सब की ओर देखा और पलकें मूँद लीं।

चेन चल बसा, यह विश्वास न करते हुए सभी देर तक खड़े रहे। इसके बाद तेलेशोव झुका और उसने चेन को चूमा। तेलेशोव के पीछे मामेदोव घुटनों के बल हो गया। दस्ते के सभी सैनिकों ने बारी-बारी से झुककर चेन को चूमा।

चारी खड़ा-खड़ा बुधोन्नी टोपी पहने हुए इन गम्भीर लोगों को देखता रहा जिनके हाथों में गट्टे पड़े हुए थे। जब सब लोग चेन को चूम चुके तो चारी ने झुककर अपने मृत मित्र को चूमा। वह सीधा खड़ा हुआ और देर तक उस तरफ देखता रहा जिधर शमुर्दखान रेगिस्तान और नमकीन दलदलों को लाँघकर भाग गया था...

तीन बार गोलियों की सलामी दी गयी। पुरानी 'मक्सीम' मशीनगन ने तड़तड़ की आवाज करके अपने मालिक से विदा ली। दस्ता उत्तर की ओर आगे बढ़ गया। रेगिस्तान के बीचोंबीच पुरानी कच्ची दीवार के टुकड़ों से बना हुआ एकाकी टीला खड़ा रह गया। उसके ऊपर लाल सितारेवाली बुधोन्नी टोपी रखी हुई थी। टोपी के मुड़े हुए भाग पर हवा ने कुछ बालू-कण भी बिखरा दिये थे। दो मीटर नीचे कारा-कूम की सूखी रेत में चीनी चेन लेटा हुआ था जिसकी पीठ में तीन गोलियाँ लगी हुई थीं। मछुए वान का यह चीनी बेटा पीले सागर के तट से क्रान्ति के पक्ष में लड़ने के लिए यहाँ आया था।

यह सही है कि चारी मिलनसार नहीं बना, गुप्पा-चुप्पा ही रहा, फिर भी वह खास दस्ते के लगभग सभी सैनिकों से घुलमिल गया। केवल दो व्यक्ति ही ऐसे थे जो उसे फूटी आँखों नहीं सुहाते थे। ओराजोव भाई स्वयं भी इस बात को दूसरों की तुलना में अधिक अच्छी तरह समझते थे और इसलिए उससे कन्नी काटते थे।

एक दिन बड़ा भाई दुश्मन की गतिविधि का पता लगाने के लिए गया तो लौटा नहीं। दस्ता तीन दिन तक उसकी खोज करता रहा। छोटा ओराजोव तीनों दिन भूखा रहा। बड़े भाई के बिना उसने जीवन में कभी भी अकेले खाना नहीं खाया था। चौथे दिन खोज करनेवालों ने उसे ढूँढ़ लिया।

आध घण्टे बाद सारा दस्ता इस जगह पहुँच गया। ओराजोव बिल्कुल नंगा पड़ा था, उसके कान कटे हुए थे और उसकी आँखें फोड़ डाली गयी थीं। उसकी पूरी छाती पर, एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक सूख कर स्याह-लाल हो जानेवाले

खून का पाँचकोना सितारा बना हुआ था। रक्त शरीर और भी अधिक गोरा लग रहा था।

छोटा ओराजोव अपने मृत भाई के चेहरे पर नजर गड़ाये हुएर बुत बना उसके पास बैठा रहा। कब्र खोद ली गयी, उसमें सकसावूल की भूरी शाखायें बिछा दी गयीं, पर वह भाई का हाथ थामे हुए ज्यों का त्यों बैठा रहा। किसी को भी उसके पास जाने की हिम्मत न हुई।

तब चारी आगे आया, उसने धीरे से ओराजोव के कन्धे को छुआ और अपनी मातृभाषा में कुछ शब्द कहे। छोटा ओराजोव उसके साथ ही एक ओर को हट गया। जब तक बड़े ओराजोव की तिरपाल में लिपटी हुई लाश के ऊपर रेत का टीला नहीं खड़ा हो गया, वे दोनों इसी तरह एक-दूसरे के निकट खड़े रहे।

फिर से चारी देर तक उधर ही देखता रहा जिधर शमुर्दखान गया था...

दस्ता दक्षिण की ओर लौट रहा था। चारी का घोड़ा दायीं ओर की रक्षा पंक्ति के सिरे पर था। अचानक उसकी तेज नजर को काफी दूरी पर, एक ओर को सफेद धब्बे की झलक मिली। किसी से एक भी शब्द कहे बिना उसने अपना घोड़ा उधर मोड़ दिया।

सफेद धब्बा जहाँ का तहाँ ही जमकर रह गया। निकट आने पर चारी ने देखा कि वहाँ एक नहीं, तीन धब्बे हैं--एक सफेद और दो काले। वे तेजी से दूर हटने लगे। चारी ने घोड़े को तेज किया। अप्रत्याशित ही ये धब्बे अलग-अलग दिशाओं

में बिखर गये। किन्तु चारी के दिल ने उसे धोखा नहीं दिया। उसने घोड़े को बायीं ओर मोड़ा और सफेद धब्बे की ओर आगे बढ़ाया। कोई बीस मिनट बाद चारी को बर्फ जैसी सफेद टोपी की झलक मिली और उसने घोड़े को और तेज कर दिया। आगेवाला घुड़सवार ऊँचे टीले पर दिखायी दिया, वहाँ उसने घोड़े को कई चक्कर दिलाये, धूल का बादल उड़ाया और उसे सीधे उस पर्वतमाला की ओर बढ़ाया, जहाँ प्रातःकालीन धुन्ध की चादर फैली हुई थी। चारी को अब यह अच्छी तरह मालूम था कि उसके आगे कौन है।

दस्ता बहुत पीछे रह गया था। काले धब्बे भी क्षितिज के पार कभी के गायब हो चुके थे। सफेद टोपीवाला घुड़सवार फिर से टीले पर दिखायी दिया। अब वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक निकट था...दूरबीन के शीशे चमक उठे और इस समय गोली चलने की आवाज सुनाई दी। शमुर्दखान ने भी चारी को पहचान लिया था।

दोनों समान गति से घोड़ों को दौड़ा रहे थे। दोनों सधे हुए घुड़सवार थे।

सूरज सिर पर आ चुका था। क्षितिज पर पहाड़ ही पहाड़ दिखायी दे रहे थे। शमुर्दखान और चारी इसी तरह घोड़ों को सरपट दौड़ाते जा रहे थे।

उनके बीच का अन्तर बहुत धीरे-धीरे कम हो रहा था, पर फिर भी कम तो हो ही रहा था। वे दोनों यह जानते थे। शमुर्दखान अचानक गायब हो गया।

इस बार चारी ने घोड़े को सीधे ही आगे नहीं बढ़ाया।

उसने दूसरी ओर से टीले का चक्कर लगाया और सावधानी से सूखी झील में प्रवेश किया। गोली की आवाज अभी सुने बिना ही वह रेत पर लेट गया था। गोली ठीक सिर के ऊपर से सनसनाती हुई गुजरी। फिर से दोनों घुड़सवार समतल नाले में घोड़े दौड़ा रहे थे। चारी का घोड़ा एकाध क़दम तेज दौड़ रहा था, पर यह तेजी भी स्पष्ट महसूस की जा रही थी। चारी को शमर्दखान का लबादा फड़फड़ाता हुआ दिखायी दे रहा था। शमुर्दखान घबराहट अनुभव करने लगा। वह पाँच बार मुड़ा और पाँच बार उसने छोटी नालीवाली अंग्रेजी राइफल से गोली चलायी। चारी ने जवाब में गोली नहीं दागी...

सूखी झील खत्म हुई। फिर से बालू शुरू हो गयी। पथरीला तल निरन्तर ऊपर उठता जाता था।

जैसे ही रेत शुरू हुई वैसे ही घुड़सवारों के बीच का फासला कम हो गया। शमुर्दखान अब नहीं मुड़ा। सूरज आँखों को चकाचौंध कर रहा था और रास्ता तय करने में बाधा पड़ रही थी। बुरी तरह थके हुए घोड़े सकसावूल की मुड़ी-मुड़ायी जड़ों से ठोकरें खाने लगे। अचानक शमुर्दखान काठी से कूदा और घुटनों के बल होकर उसने गोली चलायी। चारी का घोड़ा बहुत जोर से हिनहिनाया और चारों टाँगें फैलाकर रेत में धँस गया। शमुर्दखान हँस दिया, उछलकर काठी पर जा बैठा और उसने पसीने से तर अपने घोड़े को चाबुक लगाया। किन्तु वह एक सौ कदम भी आगे नहीं गया होगा कि उसका घोड़ा पिछली टाँगों के बल बैठ गया और बेजान होकर लेट गया। केवल इसके बाद ही रेगिस्तान में

गोली चलने की आवाज गूँजी...

अब वे दोनों चलती-फिरती रेत में से बहुत कठिनाई के साथ अपने पैर निकालते हुए पहाड़ों की ओर जा रहे थे।

अतिकाय जेम-जेम छिपकली जहाँ की तहाँ ठिठक गयी, उसने अपना भयानक किन्तु किसी को हानि न पहुँचानेवाला सिर धीरे-से घुमाया। काले मरुस्थल का यह अतिकाय जन्तु अब घड़ियाल से कहीं अधिक मिलता-जुलता प्रतीत हो रहा था। झाड़ियों की पुरानी जड़ों के नीचे से सिर पर भूरी बुन्दकीवाला साँप रेंगता हुआ सामने आया। जेम-जेम को देखते ही उसे तो मानो काठ मार गया। किन्तु जेम-जेम को साँप की ओर ध्यान देने की सुध नहीं थी। वह अतिकाय छिपकली अचानक तेजी से भागी और पुरानी जड़ों के बीच जाकर गायब हो गयी। केवल उसकी जोरदार शूँ-शाँ से ही उसकी उपस्थिति का पता चलता था। साँप भी धूप में काली बिजली-सी कौंधा कर गायब हो गया। पिस्तौल की गोली की शुष्क ठाँय और इनसान के तेज तथा भारी कदमों की आवाज सुनाई दी...

सीमाहीन और विराट रेगिस्तान में अब केवल वे दोनों ही थे। रेगिस्तान में भटके हुए वे दो व्यक्ति, दो कुलों के दो अन्तिम नामलेवा।

भय ने शमुर्दखान की आत्मा को जकड़ लिया था। राइफल से कारतूसों की दो पेटियाँ चलाकर उसने राइफल एक ओर को फेंक दी। इसके बाद उसने हल्की सफेद टोपी सिर से उतार

फेंकी। वह हर क्षण पीछे से गोली लगने की प्रतीक्षा कर रहा था और इसलिये शिकारी कुत्तों द्वारा पीछा किये जानेवाले पहाड़ी बकरे की तरह टेढ़ा-मेढ़ा भाग रहा था। किन्तु चारी ने गोली नहीं चलायी। माथे पर बल डाले हुए वह दृढ़तापूर्वक भागता ही चला जा रहा था। अब इन दोनों के बीच केवल पचास कदम का फासला रह गया था। आगे भागनेवाले ने जब घूमकर देखा तो उसे पीछा करनेवाले व्यक्ति का चेहरा साफ दिखायी दिया। शमुर्दखान जोर से चिल्लाया और पिस्तौल से तड़ातड़ गोलियाँ बरसाने लगा। पिस्तौल उसके हाथों में उछल रही थी। चारी भागता ही जा रहा था...

पिस्तौल के खटके की धीमी-सी आवाज हुई, क्योंकि उसमें गोली बाकी नहीं रह गयी थी। तब शमुर्दखान सही-गलत रास्ते की परवाह किये बिना अन्धाधुन्ध भागने लगा। सामने प्राचीन मीनारें और दीवारें साफ दिखायी देने लगी थीं।

वहाँ तक पहुँचने का फासला बहुत थोड़ा ही रह गया था। सूरज जल्दी-जल्दी पश्चिम की ओर जा रहा था। शमुर्दखान कई बार गिरा और हर बार पहले से अधिक देर तक पड़ा हुआ पतझर की सुहानी हवा को पीता रहता। जब वह गिरता तो चारी हाँफता हुआ बैठ जाता और उस पर नजर टिकाये रहता।

इस तरह वे गढ़ी के पास पहुँच गये। जब कोनेवाली मीनार की लम्बी परछाई इन दोनों की परछाइयों से मिलकर एक हो गयी तो इनके बीच बीस कदम का भी फासला नहीं रह गया था। तब शमुर्दखान ने अपनी बची-बचायी ताकत

बटोरी और ऊपर चढ़ने लगा। फाटक के करीब वह गिर पड़ा, उसके हाथों पर खरोंचें आ गयीं, और वह पुरातन धूल-मिट्टी में खून की कुछ बूँदें छोड़ता हुआ आगे की ओर रेंगने लगा।

चारी उठा, उसने गहरी साँस ली और राइफल का कुन्दा जमीन पर टेकता हुआ शमुर्दखान के पीछे-पीछे चल दिया। टीले के शिखर पर पहुँच कर उसने दम लिया और सीधे फाटक की ओर बढ़ा। उन्हीं पत्थरों पर, जहाँ कभी नसवारवाली लार से लथपथ चेहरे के साथ वह दम तोड़ता हुआ पड़ा रहा था, वहीं अब उसका जानी दुश्मन, उसके पूरे वंश की हत्या करनेवाला हत्यारा पड़ा हुआ था।

शमुर्दखान मरने के लिए तैयार हो गया। पेट पर हाथ रखे वह अस्त होते हुए सूर्य के कारण लाल हो रहे आकाश को उदासीन भाव से देख रहा था। चारी धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा और इसलिये कि कहीं गिर न पड़े, राइफल का सहारा लेता रहा।

वह देर तक इसी तरह खड़ा हुआ शत्रु के चेहरे को एकटक देखता रहा। उनकी नजरें मिलीं।

"मार डाल, सलाम कुत्ते!..." शमुर्दखान ने फटी-सी आवाज में फुसफुसाकर कहा और आँखें बन्द कर लीं। चारी ने पेटी की ओर हाथ बढाया और चमड़े की तंग मियान में से चांदी के हत्थेवाली तेज छुरी निकाली। यह उसके भाई बेर्दी की छुरी थी...चारी ने छुरी को गौर से देखा और जेब में रख लिया। इसके बाद उसने जमीन पर पड़े हुए शमुर्दखान को राइफल के कुन्दे से धकियाते हुए रूसी भाषा में केवल इतना

कहा--

"उठो!"

वे रेगिस्तान में से वापिस चल दिये। शमुर्दखान के हाथ चमड़े की मोटी पेटी से उसी भाँति पीठ पीछे बँधे हुए थे जैसे चरते समय ऊँट की पिछाड़ी बाँध दी जाती है। अँधेरा हो गया था और खामोशी छाई हुई थी। सितारों पर धुन्ध ने अपनी चादर फैला दी थी। किन्तु वे दोनों ही यहाँ की चप्पा-चप्पा जमीन से परिचित थे।

आधी रात को गीदड़ चीड़ने लगे। तब वे दोनों रुक गये। पौ फटने तक शमुर्दखान लेटा रहा और चारी हाथ पर लिपटी हुई पेटी के सिरे को थामे हुए उसके करीब बैठा रहा। भोर होने पर वे फिर से आगे चल दिये। जब सूरज सिर पर आ गया तो दूरी पर सफेद चिकना विस्तार दिखायी दिया। ऐसे प्रतीत हुआ मानो बालू दो भागों में बँट गयी है और निर्मल जल में छोटी-छोटी लहरियाँ उठ रही हैं। कोई बीस मिनट बाद नमक की जमी हुई तहें उनके जूतों के नीचे रौंदी जाने लगीं। यहाँ फिर वे दम लेने को रुके। यह वही झील थी। पहियेदार घरों के टूटे हुए खम्भे नमक की तहों के बीच से दिखायी दे रहे थे, जहाँ-तहाँ टूटे हुए बर्तन पड़े थे।

शमुर्दखान पड़ा हुआ था, हिलता-डुलता भी नहीं था। चारी ने उसके पास आकर आदेश दिया--"उठो!"

वे आगे चल दिये।

बोतल में थोड़ा-सा पानी बाकी रह गया था। उनकी लार

चिपचिपी और गाढ़ी हो गयी थी। जबान होंठों से चिपक-चिपक जाती थी। अब वे दम लेने के लिए बार-बार बैठ जाते थे। शमुर्दखान ने उठने की कोशिश की, उठा और रेत पर ढह पड़ा। तब चारी ने पेटी से बोतल निकाल कर बन्दी के मुँह के साथ लगा दी। कैदी बड़ी बेसब्री से गट-गट पानी पीने लगा और जब छक कर पी चुका तो अचानक सिर मार कर उसने बोतल चारी के हाथ से नीचे गिरा दी। बचा-बचाया पानी रेत की नजर हो गया। शमुर्दखान ने खुशी से ठहाका लगाया। चारी ने एक शब्द भी नहीं कहा, खाली बोतल उठाकर फिर से पेटी में खोंस ली।

शाम होते-होते शमुर्दखान की ताकत बिल्कुल जवाब दे गयी। तब चारी ने राइफल को छाती पर टाँगा और कैदी को पीठ पर लाद लिया।

काले मरुस्थल पर रात की नम धुँध छा गयी थी। उसे चीरता और डगमगाते डग भरता हुआ एक व्यक्ति दूसरे को अपनी पीठ पर लादे हुए चला जा रहा था। वह इस व्यक्ति को जमीन पर लेटाकर नम हुई बालू के साथ अपने खुश्क और फटे हुए होंठ सटाकर देर तक करीब ही लेटा रहता। वह फिर से उठता, बन्दी को पीठ पर लादता और लड़खड़ाता हुआ आगे चल देता।

दस्ते में हाजिरी ली जानेवाली थी। घोड़ों की लगामें थामे हुए खास दस्ते के सैनिक अपनी-अपनी टुकड़ियों में खड़े हो रहे थे। अचानक सभी मानो सकते में आकर रह गये। घुड़साल से सन्तरी भागा हुआ आया। उसने दूर से ही पुकार

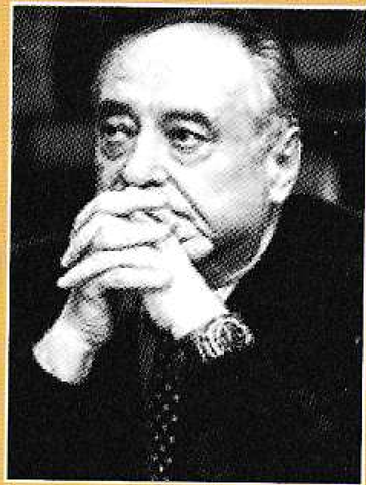
कर कमाण्डर से कुछ कहा। सबके सब एकबारगी घुड़साल की ओर घूम गये।

लम्बी और कम ऊँची इमारत के पीछे से दो व्यक्ति सामने आये। आगेवाले व्यक्ति का चोगा तार-तार हुआ पड़ा था, उस पर धब्बे लगे हुए थे। यह व्यक्ति सिर झुकाये हुए था और बहुत ही मुश्किल से कदम उठा पा रहा था। उसके पीछे दस्ते का सैनिक था। वह अपने गठे हुए सुघड़ शरीर पर पेटी कसे था। किन्तु उसका चेहरा इतना स्याह और ऐसा बदला हुआ था कि केवल उसकी आँखों में दहकनेवाली चिन्गारियों से ही दस्ते के लोग उसे चारी हसनोव के रूप में पहचान पाये।

कमाण्डर के करीब आने पर उसने आगेवाले व्यक्ति को रुकने का आदेश दिया। इसके बाद फौजी सलामी देकर उसने रिपोर्ट पेश की--

"साथी कमाण्डर! वर्ग-शत्रु शमुर्दखान कारी-काला में गिरफ्तार किया गया...!" इतना कहकर वह थकावट के कारण जमीन पर गिर गया।

●●●



मोरिस सिमाश्को (जन्म 1924) फासिस्ट जर्मनी क विरुद्ध महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दिनों में जवान हुए। 1940 में वे हवाबाजों के स्कूल में दाखिल हुए और हवाबाज बनकर शस्त्रु से जूझते रहे। युद्धोपरान्त भावी लेखक ने ओदेस्सा के अध्यापन-संस्थान और कजाखस्तान के आल्मा-अता राजकीय विश्वविद्यालय से पत्रकारिता की पत्र-व्यवहार द्वारा पढ़ाई समाप्त की। तास एजेंसी के संवाददाता के रूप में उन्होंने मध्य एशिया के जनतंत्रों का बहुत दौरा किया और इस बहुत ही दिलचस्प क्षेत्र के इतिहास और जीवन के आधुनिक ढंग का अध्ययन किया।

'नोवी मीर' (नयी दुनिया) और 'प्रोस्तोर' (विस्तार) पत्रिकाओं तथा 'सोवियत लेखक' प्रकाशनगृह द्वारा उनकी कहानियाँ लघु-उपन्यास --मध्य एशिया की क्रान्तिकारी घटनाओं सम्बन्धी 'मरुस्थल', महान तुर्कमानी कवि और विचारक मखतूम कुली के जीवन से सम्बन्धित 'फ्रागी का प्रलोभन' और उमर खैयाम की जीवन-गाथा प्रस्तुत करनेवाला लघु-उपन्यास आदि प्रकाशित हुए हैं।

मूल्य : 40 रुपये
ISBN 81-87772-57-3

गार्गी प्रकाशन